॥ ॐ ॥ ॐनम सिद्ध ॥ णमो अरिहंताण ॥ णमो सिद्धाण ॥ णमो आयरियाण ॥ णमो उव
झायाण ॥ णमो लोए सबसाहूणं ॥ एसो पच णमु कारो ॥ सब पाव प्पणासणो । मगलाणच
सवेसि ॥ पटम हवइ मंगलं ॥ अक्षर ६८ लघु ६१ गुरू ७ पदए सपदा८ ॥ १ ॥ पूजजी महारा
ज श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्रीपूज दोलतरामजी महाराज तत्शिष्य स्वामीजी महाराज श्रीश्रीश्री
१००८ श्रीश्री सोनागमलजी महाराजकृत प्रश्नोत्तर नवतत्व लिष्यते । पदार्थ नवतत्व जीवादिक
ने जेनिपुणबुद्धियेकरी जाणे तेहने ज्ञानीकहिये ते ग्यांननो अर्थ स्तोकपणे कहेछे ॥ गाथा ॥ तत्थ
पंच विह नाण ॥ सुय १॥ आभिणिबोहिय २ उहिनाणचतइय । मणनाण च केवलं ५॥ जिणें करी
वस्तुनो स्वरूप जाणीए ते ग्यानी कहीयेते ग्यानपचभेदे कह्यौ श्रुत ग्यांन१ मतिग्यान२अवधिग्यांन३
मनपर्यवग्यान ४। केवल ग्यान५॥हिवे अर्थ कहेछे ॥ सांभल्याथी प्रगटे ते श्रुतग्यान तेहना१४ भेद।
आपणइ विकल्पेकरी स्वयमेव प्रगटे ते मति ग्यान तेहना २८ भेद भवप्रत्यय तथा करमने क्षयोपसमे
करी मरयादा द्रव्य क्षेत्र कालभावना थाइ ते मरजादवरती अवधिग्यान तेहना६भेद मनपर्याय जाणे ते

मनपर्यवग्यांन अढी द्वीपवासी संज्ञी पंचेंद्रीपर्याप्ताना मनोगतभाव जाणे ते मनपर्यवग्यांन तेहना २भेद विपुल ऋजू सर्व जांणे ते केवलग्यांन तेहनो१भेद इम५ग्यांनना५१भेदकया । ते भणीग्यांननो स्वरूप उलषावेछे ते ग्यांनना पिण दोयप्रकारछे १ एक व्यवहारग्यांन । २ बीजो निश्चेग्यांन तिहां प्रथम व्यवहारग्यांन कहेछे जिनधर्मना सास्त्र जैनआगमनो भणवो भणायवो अनुजोग कहियें विस्तारव्याख्यान ते अनुयोग तीन । धर्मकथानुजोग१ चरणानुजोग२ करणानुजोग ३ ए तीन व्याख्या जिनमतनी तथा अनमतीनासास्त्र वेदांत जोतिस प्रमुख तेपिण भणवानी षप करेछे। प्ररूपे भणे भणावे अंतरंग भाव पिण प्रकासे सातनय ४निक्षेपा ४प्रमांण सुसूत्र उपदेसे एव्यवहारग्यांन कहीजे। व्यवहारग्यांन अभव्यने पिण संभवेछे १ हिवे निश्चेग्यांन कहेछे निश्चेग्यांन द्रव्यानुजोग ६द्रव्यना द्रव्यगुणपर्यायनो जांणपणो ते ६द्रव्यमांहि ५ द्रव्य अजीवछे अनात्माछे हेयछे परनास्वरूपजांणी छोडवाजोग । छे। ते पुदगलादि छोडवा ग्येयरूपछे जाणीवा अने एक जीव द्रव्यनों स्वरूप निजगुण उपादेयछे। तेनिश्चेकरी जीव सिद्धसमांन मोक्षमइ १ मोक्षनोकारण २ मोक्षकरणहार ३ मोक्षरूप

४ साच दान दया एहवो जे अनुभावरूप जे आत्मा तेहीज निश्चे ग्यान ग्यान आत्मासे भिन्न नही आया सेविन्नाया । विन्नायासे आया इति वचनात् जेहने मूल मिथ्यात्वमोहनी उदय नही। आत्मानू उज्वलपणुते ग्यानजिम सूर्यविमाणनो निजगुण तेजपणु अभ्रपडलथी ढकीयो निस्तेज थयो अभ्रप मल जेम दूर हुवा जाज्वल्यमान तेज प्रगट्यो जिम ग्यानावर्णीरूप अभ्रपडल दूरहुवा। मिथ्यात्व मोहनी क्षयगया निश्चेग्यान कहीजे निश्चेग्यान निश्चेसम्यक्तवतने थाय व्यवहार ग्यान व्यवहारसमकि तवतने होइ सातनये प्रमाणे वरते तेहने शुद्धसमगती कहीजे तेभणी सप्त नय कहेछे सत्त मूलनया पण्णत्ता तजहा नैगमनय । १ । सग्रहनय २ । व्यवहारनय ३ ऋजूसूत्रनय ४. शब्दनय ५ समभि रूढनय६ एवम्भूतनय७. ए अणयोगदारमे कयाछे । हिवें सप्तनयनो अर्थ कहेछे हिवे पहिलो नैगमन य । १ । नैगमकहता नदीनी धारा प्रवाह सरिखो गमते नैगम एक अंसमात्र जे वस्तुनो गुण प्रगट होइ । तेहनें सपूर्णपणें वस्तुनें कहै ते नैगमनय कहिजे। तें नैगमनयका ३ । भेद॥ भूत नैगम १: भविष्यतनैगम २. वर्त्तमाननैगम ॥ ३ ॥ जो अतीतकालके विषे जो पदार्थ हुवा । अरु वांही

॥ ३ ॥

वर्त्त मानकीसीन्यांइ कहणां सो भूतनैगमनय कहिए जेसें सिद्धां भणी नमोत्थुणं पढतां आदिगराण आदिकर्त्ता ओसो कहणों । तथा जेसें कोइ दीवालीके दिन कहे । आज श्रीवीर वर्द्धमांन स्वांमी मोक्ष गया ओसो कहणों ॥१॥ जो भविष्यत नेगम आगामीकालके जो पदार्थहोण हारहे । ते वर्त मान कहणों जैसे उत्तराध्ययन:१९ मे अध्ययमें गृहवासि वसतां जुवराया दमीसरे ओसो कह्यो ते भविष्यत नैगमनय कहीजे ॥२॥ वर्तमांन नैगम कहीजे जे वस्तु करणी मांझि किंचित् नीपजी तिसकुं संपूर्ण पणें कहणी जेसें लीपतो देषी पूछ्यो स्युं करेछे तद कह्यो रसो ईकरुंछु ओसो कहणों३ । इति नैगम नय ॥ १ ॥ संग्रह नयका दोय भेदछे सामान्यसंग्रह १ विशेषसंग्रह २ सामान्य संग्रह कहीएः अजीवद्रव्य माहोमांहि अविरोधी अचेतनगुण अपेक्षाइं सामान्य गुण सर्व द्रव्यमे हें अजीव द्रव्यमें ओसो कहणो ते संग्रह सामान्यपणें कहीजे १ विशेष संग्रह जो परजातिका द्रव्यकू छोडि करि स्वजाति स्वद्रव्यको संग्रहकरिये सो विशेष संग्रह कहिए जे से सर्वजीव परस्पर विरोध रहितछे सत्ताग्रहे ते संग्रह तेसंग्रह जे कारणे एक नांम लीधां सर्व गुणपर्याय परिवारसहित आवे ते संग्रह

शुभ कारण केहने कहीजे जीवनि अनुकंपा करे दान देवे पर उपगार करे इत्यादिक अनेक पर उप गारना काम करे पिण शरीर सुखने अर्थे करे तिणने शुभ कारण रूप कहीजे एहमे अनेक नयनी अपेक्षा पाच तत्वपावे जीव अजीव पुन्य आश्रव बध ए पाच तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १८१ ॥ नवतत्व मायथी जीवने सुध कारणरूप केटला तत्वछे॥ उत्तर ॥ शुध कारण केहने कहीजे जीव अष्ट कर्म्मा करी मलीन होय रह्योछे तिणसु च्यार गतिमे अनेक दुःख भोगवेछे जो सवर अने निर्जरारूप वे शुध कारण जीवने मिलेतो कर्म्मथकी छुडावे पीछे मोक्षनगरमे पोहचावे इणरीते जीवने शुध कारणरूप दोय तत्वछे एक सवर वीजो निर्जरा ए वे तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १८२ ॥ नवतत्व मायथी निश्चे कारज रूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी निश्चे कारजरूप एक मोक्ष तत्वछे ॥ प्रश्न ॥ ॥ १८३ ॥ नवतत्व मायथी लोकीक मारगमा केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ लोकीक मारग केह ने कहीजे जिणकाम सेवणासे ससारनि वृधी हुवे तिणने लोकीक मारग कहीजे तेहमा षट् तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बध ए षट् तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १८४ ॥ नवतत्व मायथी लो

रूप पांच तत्व पामीये येहमां एक तो जीव तत्व बीजूं अशुभ प्रकारे बाधक ते पाप ए पापना दलिया अजीवते आश्रव रूपजांणवा इण कारण तीजूं अजीव चौथो आश्रव अने पांचमो ए दलीये जीव बंधीयो छे ते बंध जीव अजीव पाप आश्रव बंध ए पांचतत्व बाध करू पछे ॥ प्रश्न ॥ ॥ १७१ ॥ नवतत्व मांयथी मिथ्यातीने शुभप्रकारे बाधकरूप केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ मिथ्या तीने शुभ प्रकारे बाधकरूप पांच तत्व जांणवा जीवअजीव पुण्य आश्रव बंध ए पांच तत्व बाधक रूप छे ॥ प्रश्न ॥ १७२ ॥ नवतत्व मांयथी समगतीने शुभप्रकारे साधकरूप केतला तत्व छे ॥ उत्तर॥ समगती छदमस्थ चोथा गुणठांणासुं लेने बारमा गुणठांणा सूधी छदमस्थ कहीजे तिणने शुद्ध प्र कारे साधक दसा जांणवी तेहमां आठ तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥प्रश्न१७३॥ नवतत्व मांयथी केवलीने सुध प्रकारे साधकरूप केतला तत्व छे ॥ उत्तर ॥ केवली भगवाननें साधक दसाये जांणवी तिणमे नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १७४ ॥ नवतत्व मायथी कर्तारूप केतला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी कर्तारूप एक जीवतत्वछे॥ प्रश्न१७५॥ नवतत्व मांयथी अशुभ प्रकारे कर्तारूप केतला तत्वछे

॥ उत्तर ॥ मिथ्यातीने अशुभप्रकारे कर्त्तारूपमा पाचतत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव बध ए पाच तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १७६ ॥ नवतत्व मायथी मिथ्या तीने शुभ प्रकारे कर्त्तारूपमा केतला तत्व छे ॥ उत्तर ॥ शुभप्रकारे कर्तारूप केहने कहीजे जिम कोइ जीव पुत्रअर्थे धनअर्थे राजअर्थे सरीरसुख अर्थे जस सोभागअर्थे इत्यादिक अनेक कामनाअर्थे जीव शुभपुन्यरूप करणी करेछे तेहने शुभप्रकारे कर्तारूप कहीजे तिणमे तत्व पावे पाच जीव अजीव पुण्य आश्रव बध ए पाच तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १७७ ॥ नवतत्व मायथी । समगतीने शुभप्रकारे कर्तारूपमा केतला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ समगती केहने कहीजे चोथा गुणठाणाने पाचमा गुणठाणाने फर्से तिणने समगती कहीजे तेहमा अष्टतत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ १७८ ॥ नवतत्व मायथी जीवने असुभ कारणरूप केतला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी अशुभ कारणरूप एक पापतत्व छे ॥ प्रश्न ॥ १७९ ॥ नवतत्व मायथी जीवने शुभ कारण रूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर नवतत्व मायथी शुभ कारणरूप एक पुन्य तत्व छे ॥ प्रश्न ॥ १८० ॥ नवतत्व मायथी जीवने शुभ कारण रूप केटला तत्वछे ॥उत्तर॥

शुन्न कारण केहने कहीजे जीवनि अनुकंपा करे दांन देवे पर उपगार करे इत्यादिक अनेक पर उप गारना कांम करे पिण शरीर सुखने अर्थे करे तिणने शुन्न कारण रूप कहीजे एहमे अनेक नयनी अपेक्षा पांच तत्वपावे जीव अजीव पुन्य आश्रव बंध ए पांच तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १८१ ॥ नवतत्व मांयथी जीवने सुद्ध कारणरूप केटला तत्वछे॥ उत्तर ॥ शुद्ध कारण केहने कहीजे जीव अष्ट कर्म्मां करी मलीन होय रह्योछे तिणसुं च्यार गतिमे अनेक दुःख नोगवेछे जो संवर अने निर्जरारूप बे शुद्ध कारण जीवने मिलेतो कर्म्मथकी बुटावे पीछे मोक्षनगरमे पोहचावे इणरीते जीवने शुद्ध कारणरूप दोय तत्वछे एक सं वर बीजो निर्ज्जरा ए वें तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १८२ ॥ नवतत्व मांयथी निश्चे कारज रूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी निश्चे कारजरूप एक मोक्ष तत्वछे ॥ प्रश्न ॥ ॥ १८३ ॥ नवतत्व मांयथी लोकीक मारगमा केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ लोकीक मारग केह ने कहीजे जिणकांम सेवणांसे संसारनि वृद्धी हुवे तिणने लोकीक मारग कहीजे तेहमां षट् तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बंध ए षट् तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १८४ ॥ नवतत्व मायथी लो

तिणने कर्म्मफल चेतना कहिजे एहमा आठ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव संवर निर्ज्जरा बंध ए आठतत्व पावे ॥ प्रश्न १६१ ॥ नवतत्व मायथी छद्मस्थजीव ग्यानचेतनामा केतलातत्व पावे उत्तर ॥ ग्यानचेतना किणने कहीजे चौथा गुणठाणासुं लेने १२ गुणठाणा सूधी छदमस्थ समगती जीवमा ग्याननी नेमाछे तिणसु ग्यानचेतना कहीजे एहमा आठतत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न१६२ ॥ नवतत्व मायथी केवली भगवानमा ज्ञानचेतनामा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ केवली भगवान ग्यानचेतनामा नवतत्व पामिये ॥ प्रश्न १६३ ॥ नवतत्व मायथी सिद्ध भगवत ग्यानचेतनामा केतला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ सिद्ध भगवत ग्यानचेतनामा तीनतत्व पामिये जीव संवर मोक्ष एतीनतत्व पावे ॥ प्रश्न१६४ ॥ नवतत्व मायथी असुभ कर्म्म चेतनामा केतला तत्व पामिये ॥उत्तर॥ मिथ्याती जीवने अशुभ कर्म चेतना कहिजे तेहमा पाचतत्व पामिये जीव अजीव पाप आश्रव बंध पाचतत्वपावे ॥ प्रश्न १६५ ॥ नवतत्व मायथी शुभकर्म चेतनामा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ शुभकर्म्म चेतना केहने कहीजे मिथ्याती जीवने चेतना पुन्यरूप प्रणामेवर्तेछे तेहने शुभप्रकारे क

मिथ्याती जीव करणा दया पर उपगार करे तिणमे ६ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बंध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १५६ ॥ नवतत्व मांयथी शुक्लध्यांनमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ समगति जीव चौथा गुणठांणासुं लेने चौदमां गुणठांणा सूधि ए इग्यारे गुणठांणामे प्रवर्त्ते तेहने शुक्लध्यांन कहिये एहमां नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १५७ ॥ नवतत्व मांयथी मिथ्याती जीव कर्म्मफल चेतना केहने कहीजे जीव कर्मना फल भोगवे छे तेहने कर्म्मफल चेतना कहीजे एहमां ७ तत्व पावे जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव बंध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १५८ ॥ नवतत्व मायथी समगति जीव कर्म्मफल चेतनामां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ चौथा गुणठांणासुं लेने बारमां गुणठांणा सूधी प्रवरते तेहमां आठतत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न १५९ ॥ नवतत्व मांयथी केवली भगवंत कर्म्मफल चेतनामां केतला पांमीये ॥ उत्तर ॥ केवली महाराज च्यार कर्म्म फलरूप भोग वेछे तिणसुं कर्म्मफल चेतना कही जे एहमां नवतत्व पावे ॥ प्रश्न १६० ॥ नवतत्व मांयथी छदम स्थ जीव कर्म्मफल चेतनामां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ छदमस्थ जीव अष्ट कर्म्मफल भोगवे

ध ए ७ तत्व पावे तथा निन्हवामे तो पाच तत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव बध ए पाचतत्व पावे पिण तप जप क्रिया करे जिणआश्री पुन्य बंधे छे तीणसु ७ गो पुन्यतत्व पिण पावे ॥ १५१ ॥ नवतत्व मायथी अकाम निर्जरामा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अकाम निरजरामा ७ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रवबध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १५२ ॥ नवतत्व मायथी सकाम निर्यरामा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सकाम निर्जरामा नवतत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव सवर निर्यरा वध मोक्ष ए नवतत्व पावे ॥ प्रश्न १५३ ॥ नवतत्व मायथी शुभ ध्यानमा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ मिथ्याती धर्म्म ध्यान शुकलध्यान ध्यावे तेहने शुभध्यान कहिये तेहमा ७ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव वध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न१५४॥ नवतत्व मायथी मिथ्याती जीवदानदेवे सीयल पाले तपस्या करे भावना भावे एहमा केतला तत्वपावे॥ उत्तर ॥ मिथ्याती जीव दान सील तपस्या करे तिणमे ७ तत्वपावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव वध ए ७ तत्वपावे॥प्रश्न॥१५५॥ नवतत्व मायथी मिथ्याती जीव करुणा दया परउपगार करे तिणमे केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥

करे जिणमां पांच तत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वंध ए पांच तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥१४५॥ नवतत्व मांयथी ईरषांमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ ईरषामां पांचतत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वंध ए पांचतत्व पावे ॥ प्रश्न १४६ ॥ नवतत्व मांयथी कलेस कजियामां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ कलेस कजियामां पांच तत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वंध ए पांचतत्व पावे ॥ प्रश्न १४७ ॥ नवतत्व मांयथी बाद विवादमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ बाद विवादमां पांचतत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वंध ए पांचतत्व पावे ॥ प्रश्न १४८ ॥ नवतत्व मांयथी अढारा पाप सेवे तिणमां केतलातत्व पावे ॥ उत्तर अढारा पाप सेवे तिणमां पांच तत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वंध ए पांच तत्व पावे ॥ प्रश्न १४९ ॥ नवतत्व मांयथी एकंत हिंस्यामांहे धर्म्मपरूपे तेहमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ एकंत हिंस्यामांहे धर्म्म परूपे तेहमां पांचतत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वंध ए पांचतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥१५०॥ नवतत्व मांयथी नव निन्हवामां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी नवनिन्हवांमे ७ तत्व पावे जीव अजीव पाप पुण्य आश्रव वं

कहिये एहमा पाच तत्व पावे जीव तत्व अजीव तत्व पाप तत्व आश्रव तत्व वध तत्व एह पाच तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १४१ ॥ नवतत्व मायथी विषयमा केटला तत्व ॥ उत्तर ॥ विषय कषायमा पाच तत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वंध एह ५ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १४२ ॥ नवतत्व मायथी पाच निद्रामा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ पाच निद्राना नाम १ सुखे सुखे जागे ते निद्रा २ दुखेदुखे जागे ते निद्रानिद्रा ३ वेठाने ऊभाने नीद आवे ते प्रचला ४ । रस्ते चालता नीद आवे घोडानी परे ते प्रचला प्रचला ५ थीणोदी निद्राते किणने कहीजे आधा वासुदेवरो वल हुवे तिणने नीद ६ मासनी आवे नीदमाहे हाथीना दात काढीने ल्यावे कोम मणनी सिल्ला उपाडि नीद्रामा काल करेतो सातमी नरक जावे तिण ने थीणोंदी निद्रा कहीजे तिणमे पाच तत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वंध ए पाचतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥१४३॥ नवतत्व मायथी ४ विकथामा केटला तत्वपावे॥ उत्तर॥ स्त्रीविकथा भात विकथा देस विकथा राजविकथा ए ४ विकथामा पाच तत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वध ए ५ तत्व पावे ॥ प्रश्न१४४॥ नवतत्व मायथी मिथ्याकरे जिणमा केटला तत्व पावे ॥उत्तर॥ मिथ्या

हिर आत्मा किणने कहीजे राजऋद्धि अंतेवर गीत रंग राग नाटक इत्यादिक संसारना कांमांमे रक्त होय रह्याछे सुद्ध देव गुरु धर्म्मनी ओलखणा नथी कीनि तिणने बाहिर आत्मा कहिजे तिणमे छ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बंध ए छ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १३७ ॥ नवतत्व मांय थी अंतरात्मामां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अंतरात्मा किणने कहीजे संसारना कांमाथकि उदा सीपणो आणे भरतचक्रीनीपरे चोथा गुणठांणासुं लेने बारमा गुण ठांणा लगे अंतरात्मा कहीजे अंतरात्मा वालाने सम दृष्टी कहीजे तेहमां आठ तत्व पावे एक मोक्ष तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥प्रश्न१३८॥ नवतत्व मांयथी द्रव्य परमात्मामां केटला तत्व पावे॥उत्तर॥तेरमां चौदमा गुणठांणा वालाने द्रव्य परमात्मा कहीजे तिणमे नवतत्व पावे ॥ प्रश्न१३९॥ नवतत्व मांयथी भाव परमात्मामां केटला तत्व पावे ॥उत्तर॥सिद्ध भगवांनने भावपरमात्मा कहिये भावपरमात्मा तीनतत्व पावे जीव संवर मोक्ष एतीन तत्व पावे ॥ प्रश्न१४०॥ नवतत्व मांयथी अशुभ ध्यांनमां केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अशुभ ध्यांन केहने कहीजे मिथ्याती जीवने आर्त्तध्यान रुद्रध्यांन ए दोय ध्यांन सहित हुवे तेहने अशुभ ध्यांन

नवतत्व मायथी ध्यातारूपमा एक जीव तत्व जाणवो ॥ प्रश्न ॥ १३२ ॥ नवतत्व मायथी असुभ प्रकारे ध्यातारूपमा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ पेहला गुणठाणावालो अणताणु वधिचोकमीनो धणी तिणने अशुभप्रकारे ध्यातारूप कहिजे तिणमे पाचतत्व पावे जीव अजीव पाप आश्रव वध ए पाचतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १३३ ॥ नवतत्व मायथी शुभप्रकारे ध्याता रूपमा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ शुभप्रकारे ध्याता केहने कहीजे मिथ्याती जीवने शुभ ध्याता रूपमा पाच तत्व पावे जीव अजीव पुण्यआश्रव वध ए पाच तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥१३४॥ नवतत्व मायथी सुद्धप्रकारे ध्यातारूपमा केतला तत्व पावे ॥उत्तर॥ शुद्धप्रकारे ध्यातारूप केहने कहिये चोथा गुणठाणासु लेने छदमस्थ अवस्था लगे वारमा गुणठाणाना धणीने शुद्धप्रकारे ध्यातारूपकहीजे तिणमे तत्वपावे आठ एक मोक्षतत्व टली ॥प्रश्न॥१३५॥ नवतत्व मायथी निर्मल ध्यातारूपमा केतलातत्व पावे ॥उत्तर॥ क्षायक समगतना धणीने तेरमा गुण ठाणाना धणीने चोदमा गुण ठाणाना धणीने निर्मल ध्यातारूप कहीजे तिणमे तत्वपावे नव ॥ प्रश्न ॥ १३६ ॥ नवतत्व मायथी बाहिर आत्मामा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ बा

॥ उत्तर ॥ निश्चेथकी रमणिक स्वभाव मोक्षपुरि सिद्धना जीवनेछे तिणमे तीन तत्व पावे जीवतत्व अने यथाख्यातचरित्ररूप गुणेकरी पोताना स्वरूपमां रमण करेछे वीजो संवरतत्वछे अने तीजो भाव मोक्षपद पांम्याछे तिणसुं मोक्ष तत्व कहिजे जीव संवर मोक्ष ए तीनतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ॥१२९ ॥ नवतत्व मांयथी सुभगती ध्यातारूपमां केतलातत्व पावे ॥ उत्तर ॥ असुभगति ध्यातारूप केहने कहिजे अढारा पापरूप कांमसेवे तिणने असुभगति ध्यातारूपकहिजे अनेक असुभ प्रकारे असुभपरिणांमेकरी नरक त्रिजंच गतीना सुखने ध्यावे तिणसुं एक जीवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ॥ १३० ॥ नवतत्व मांयथी सुभगति ध्यातारूपमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ दांन सील तप भाव ज्ञान दर्शण चारित्र चरिता चरत तर इत्यादिक अनेक कांम सेवे तिणनें सुभगती ध्यातारूप कहीजे सुभ प्रणांमेकरी मनुष्यगतिना देवगतिना सुखनेध्यावे तिणसुं एकजीवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ॥ १३१ ॥ नवतत्व मायथी अचलगति ध्यातारूपमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अचलगति किणने कहीजे मोक्षगतिने कहिजे क्षायक समगतनोधणी शुभ प्रणांमेकरि मोक्षगतीने ध्यावे ए रीते

प्रश्न ॥ १२५ ॥ नवतत्व मायथी अशुभ प्रकारे रमणीक स्वभावमा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अशुभ प्रकारे रमणीक स्वभाव केहने कहीजे अणतानु बंध चोकडीना गुण पावै तेहने कहीजे ते हमा तत्व पावे पाच जीव अजीव पाप आश्रव बध ए पाच तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १२६ ॥ नवतत्व मायथी शुभ प्रकारे रमणीक स्वभावमा केटला तत्वपावे ॥ उत्तर ॥ शुभ प्रकारे रमणीक स्वभाव केहने कहिये पेहला गुण ठाणाना जे गुण सपूर्ण तिणमे पावे ऋण धणीने शुभ प्रकारे रमणीक स्वभाव कहिजे ते मिथ्याती तप क्रियाकरे ते निन्हवा प्रमुख तेमा ७ तत्व पावे जीवअजीव पुन्य पाप आश्रव बध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥१२७॥ नवतत्व मायथी शुद्ध प्रकारे रमणीक स्वभावमा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर शुद्ध प्रकारे रमणीकस्वभाव केहने कहीजे शुद्ध समगती जीवने कहिजे चोथा गुणठाणसुं लेने चौदमा गुणठाणा सूधी जीव फरसे तिणने शुद्ध प्रकारे रमणिक स्वभाव कहीजे तिणमे आठ तत्व वारमा गुणठाणा सूधी पावे तेरमा चौदमा गुणठाणावाला धणीमे नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १२८ ॥ नवतत्व मायथी निश्चे थकी रमणीक स्वभावमा केतला तत्व पावे ॥

रानो हेतु नहीं तीणने द्रव्य पचपांण कहिये तेहमां पांच तत्व पावे जीव अजीव पुण्य आश्रव बं
ध ए पांच तत्व पावे ॥१२३॥ नवतत्व मांयथी भावपचपांणमां केतला तत्वदावे ॥ उत्तर ॥ भावप
चषांण कीणने कहीये इहानेरुधे जसकीर्त्तिमांने इंद्रीनासुपनी लालगरहित सुपपरभवना रहित च
चक्रवर्त्त बलदेव वासुदेव इंद्रना सुपरहित इहभव परभवना सुखरहित पचखांण करे तेहने भावपचषां
ण कहिजे तेहमां चारतत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ १२४ ॥ नवतत्वमांयथी
रमणीक तत्व केतला छे ॥ उत्तर ॥ रमणीक केहने कहीजे एक जीवतत्व रमणिक इण
कारण परण परणांमिक भावेकरी सर्वजीव पोतानां स्वरुपमां रमणीक जांणवो जीवने अजी
प रूप पुदगलमां रमणीक पणो जांणवो जीवने सुभ असुभ प्रणांमकरी पुण्यअने पापरूप आ
श्रवमां रमणीकपणें जांणवो जीवने सुभ प्रणांमरुप संवर नीर्जरा ए वे तत्वमां रमणिक पणोजां
णवो जीवारे ॥ ४ ॥ घनघातीक कर्म षपावी केवलज्ञांन रुप लक्ष्मी प्रगटथइ तीवारे जीवने द्र
व्यमोक्ष पदमां रमणीकपणो जांणवो एरीते नवतत्वमां रमणीक पणो एक जीवतत्वने जांणवो ॥

भाव काउस्सग्ग केहने कहीये उगणीस दोष टालना तेहना नाम कहेछे गोमा उपरि पग राखे ॥ १ ॥ काया आघी पाछी डोलावे ॥ २ ॥ काया उंजोलेवे ॥ ३ ॥ काया माथो नमाय उभोरहे ॥ ॥ ४ ॥ दोनु हाथ उचाराखे ॥ ५ ॥ गुगट काढे ॥ ६ ॥ पगउपरे पगराखे ॥ ७ ॥ खागो वाको उभोरहे ॥ ८ ॥ साधुनी बरोबर रहे ॥ ९ ॥ गामा उधणनी परे रहे ॥ १० ॥ खमोवाको रहे॥११॥ रजोहरण उचोराखे ॥ १२ ॥ एकआसण न रहे ॥ १३ ॥ आप एकठामे न राखे ॥ १४ ॥ माथो हलावे ॥ १५ ॥ कुकु कारकरे ॥ १६ ॥ मीत्र चलावे ॥ १७ ॥ आलस मोमे ॥ १८ ॥ पून्य चितकरे ॥ १९ ॥ एव ॥ १९ ॥ दोष टालने काउसग्ग करणो उपसर्गथकी चलेनही आर्त्तध्यान रूद्रध्यान वरजे धरमध्यान सुकलध्यान ध्यावे कषायनी चोकडीकरि रहित तेहने भाव काउसग्ग कहिजे तेमा आठ तत्वपावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ १२२ ॥ नवतत्वमायथी द्रव्यपचषाणमा केतला तत्वपावे ॥ उत्तर॥ द्रव्यपचषाण कीणने कहिजे जेजे वस्तुना पचषाणकीना पीण इण वस्तुउपर मनचलरह्योहे पीण वावस्तु भोगवेनही तीण पचषाणसु पुण्य उपार्जनकरे पीण नीर्ज

त्यांयथी द्रव्य पडिक मणामांके तला तत्व पावै ॥ उत्तर ॥ द्रव्य पडिक्कमणो केहने कहिजे पापथकी नीवर्त्तवो तेहने पडिक्कमणो कहिजे उपीयोगवीना पडिक्कमणो करे वीधीरहित पडीकमणो करे तेहने द्रव्य पडिक्कमणो कहिजे द्रव्यपडिक्कमणांमां ५ तत्वपावे जीव अजीव पुण्य आश्रव बंध ए पांच तत्वपावे ॥ प्रश्न ॥११९॥ नवतत्वमांयथी भाव पडिक्कमणांमां केतला तत्व पावे ॥उत्तर॥ भाव पडिक मणो केहने कहिये उपीयोग सहित करे विधिसहित करे आधोसुर्य मांहेने आधोसूर्जवाहीर उसबगत पडिक्कमणो ठाविजे दोयघडी कचीरातगया पेहलि पचखांणकरवा तीणने देवसी पडिक्कमणो कहीजे पाछलीरात दोयघडि काचिरेवे तरे पडीक्कमणो ठावीजे सूर्य उगापेहली पचखांण करवा तेहने देवसी पडीकमणो कहीजे संपूर्ण वीधीसहित करे तेहने भावपडि क्कमणो कहीजे तेमां आठ तत्व पावे एक पोक्क तत्व टली ॥ प्रश्न ॥ १२० ॥ नवतत्वमांयथी द्रव्य काउसग्गमां केतला तत्व पावे ॥ ॥ उत्तर ॥ द्रव्य काउसग्गमां पांच तत्व पावे जीव अजीव पूण्य आश्रव बंध ए पांचतत्व पावे ॥ १२१ ॥ प्रश्न ॥ नवतत्व मायथी भाव काउस्सग्गमां केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥

भाव चोवीसथो केहने कहिये २४ तिर्थंकर देव सीद्ध क्षेत्रमे बीराजमान तेहनी स्तुती करे वीधी सहित तेहने भाव चोवीसथो कहिजे एहमे ३ तत्व पावे जीव संवर मोक्ष ए ३ तत्व पावे॥प्रश्न११६॥ नवतत्व माहे द्रव्य वदणामा केटला तत्व पामीये ॥ उत्तर ॥ द्रव्य वदणा कीणने कहीजे मनवीना वंद णाकरे ३२ दोष सहित वदणा करे इण भवना सुख अर्थे लाभ अर्थे कुलववार अर्थे वदणाकरे तेहने द्रव्यवदणा कहीजे ते द्रव्यवंदणामां पाच तत्व पावे जीव अजीव पुण्य आश्रव बंध ए पाचतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ११७ ॥ नवतत्व मायथी भाववदणामा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ भाववंदणा कीणने कहीजे२७ गुणकरके सहित मुनी राज जीनराजनी आज्ञानापालक पचमहाव्रतना धारक दस जतीधर्मके धरणहार ३२ जोग सग्रह सहित इसामुनिने वदणा करे पुन्य पापनी वंछारहित एकत निर्जराअर्थे वंदणाकरे मानरहित जस कीरतकी वछारहित कृष्ण महाराजनीपरे वदणाकरे तोतिर्थंकर गोत्र उपारजीयौ क्षायक समगतपाम्या ४ नरकना दलीया क्षयकरीया तीणने भाव वदणा कहिये तेमा आठ तत्वपावे एक मोक्ष तत्व टली ॥ प्रश्न ॥ ११८ ॥ नवत

॥ प्रश्न ॥ ११२ ॥ नवतत्व मांयथी द्रव्य समायकमां कीतना तत्व पांमीये ॥ उत्तर ॥ द्रव्य समायक केहने कहिये देवनां सुखनी वंछाकरे चक्रिना सुखनी वंछाकरे वलदेव वासुदेवना राजाना सङ्कारना एहना सुखनी वंछाकरे धनरे अर्थे पुत्ररे अर्थे लोकीक मेहमारे अर्थे इत्यादिक अनेक संसारना कामने अर्थे समायक करे ३२ दोषसहित समायक करे तेहने द्रव्य समायक कहिये ते द्रव्य समायकमां ६ तत्वपावे ते जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव बंध ए ६ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ११३ ॥ नवतत्व मांयथी भाव समायकमां केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ भाव समायक केहने कहिये एकंत नीर्जरा खाते करे संसार अर्थे करे नहीं ५ मां गुण ठांणावालारे देसवीरती सरावकरे समायकनीप जे ते भाव समायकमां आठ तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ ११४ ॥ नवतत्व मांहथी द्रव्य चोवीस थामे केटला तत्वपावे ॥ उत्तर ॥ द्रव्य चोवीसथो केहने कहिये एहनी विधीरहित चोवीसथो करे तेहने द्रव्य चोविसथो कहिये वहने ६ तत्व पावे जीव अजिव पुण्य पाप आश्रव बंध ए ६ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ११५ ॥ नवतत्व मांयथी भाव चोवीसथामे केटला तत्व पाईए ॥ उत्तर ॥

द्व परमात्माने मीत्ररूप एक शवर तत्व जाणवो इणकारण शुक्ल ध्यानना विजा तीजा पाया वीचा
ले रह्या सवर रुपमीत्रने घरे वर्तेछे तेत्नणी द्रव्य सीधपरमात्माने एक सवर तत्व मीत्ररुपकहीजे ॥
प्रश्न ॥ १०८ ॥ नवतत्व मायथी द्रव्यसीद्व परमात्माने घररुप केटला तत्व पामीये ॥ उत्तर ॥ नवत
मायथी द्रव्य सीद्व परमात्माने घररुप एक त्नाव मोक्षरुप तत्वछे ॥ प्रश्न ॥ १०९ ॥ नवतत्व मालती
त्नाव सीद्व परमात्मानै घररुप केतला तत्वछे ॥ उत्तर॥ त्नाव सीद्व परमात्माने घररूप एक त्नाव मोक्ष
तत्व जाणवो ॥ प्रश्न ॥ ११० ॥ नवतत्व मायथी लीप्त स्वत्नावमा केटला तत्व पामीये॥ उत्तर ॥ ली
प्त स्वत्नाव केहने कहीजे अष्ट कर्मा करीने लीपायमान हुवे तीणने लीप्त स्वत्नाव कहीजे तेमा छ
तत्व तथा आठ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १११ ॥ नवतत्व मायथी अलीप्त स्वत्नावमा केटला तत्व पा
मीये ॥ उत्तर ॥ अलिप्त स्वत्नाव केहने कहिये जे प्राणी पुण्य पापनी वाछा रहित एक मोक्ष पदनी
वछा करेछे ते जीवने अलिप्त स्वत्नाव कहिजे ४ गुण ठाणासू लगायने १२ गुण ठाणा सुधी छद
मस्थ अवस्था सुधी वरते तेहने अलीप्त स्वत्नाव कहिजे तेमा आठ तत्व पाइये एक मोक्ष तत्वटली

ण कारण मोक्षमां कर्मनथी तिण सुंनिर्जरा पिण नथी ॥ प्रश्न ॥ १०३ ॥ नवतत्व मांयथी बंधने
मित्ररूप केतला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी पांचतत्व बंधने मित्ररूप जांणवा ते किसा
१ अजीव २ पुण्य ३ पाप ४ आश्रव५ बंध ए ५ तत्व बंधने मित्ररूप जांणवा ॥ प्रश्न ॥१०४॥ नव
तत्व मांह्लथी बंधनें शत्रूरुप केटला तत्व पांमीये ॥ उत्तर नवतत्वमांह्लथी बंधने शत्रूरुप एक नीर्झरा
तत्व जाणवो ॥ प्रश्न ॥ १०५ ॥ नवतत्व मांह्लथी बंध केटला तत्व घर दीठो नथी ॥ उत्तर ॥ नव त
त्व मांह्लथी बंध एक मोक्ष तत्वनो घर दीठो नथी ॥ प्रश्न ॥ १०६ ॥ नवतत्व मांह्लथी द्रव्य सीद्ध
परमात्माने शत्रूरुप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांह्लथी द्रव्य सीद्ध परमात्माने शत्रूरुप ५ तत्व
पांमीये द्रव्य सीद्ध केहने कहिये केवली ह्लाराज सीद्ध हुवे तीणसुं केवलीने द्रव्य सीद्ध कहीजे पां
च तत्वना दलीया केवलीने वांधी राख्याछे तेणेकरी केवली मोक्ष पुरीमै जातां रोकांणां छे अजीव
पुण्य पाप आश्रव बंध ए ५ तत्व शत्रूरुप द्रव्य सीद्ध परमात्माने जाणवा ॥ प्रश्न ॥ १०७ ॥ नवत
त्व मांयथी द्रव्य सीद्ध परमात्माने मीत्ररूप केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी द्रव्य सी

आश्रवने भिन्नरूप केतला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व माह्यथी आश्रवने भिन्नरूप पाचतत्वछे ते कहे छे १ अजीव २ पुण्य ३ पाप ४ आश्रव ५ बंध ए पाचतत्व भिन्नरूपछे ॥ प्रश्न ॥ एए नवतत्व मायथी केटला तत्वने आश्रव रोकी सकेछे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी एक जीवतत्वने आश्रव रोकीसकेछे इणकारण आश्रवना दलिया सत्रूरूप थइने जीवने लागाछे इणकारण जीव मोक्षनगरे जाता रोकाणो तेनणी एक जीवतत्वने आश्रव रोकीसकेछे॥ प्रश्न ॥ १०० ॥ नवतत्व मायथी सवरने घररूप केतला तत्व पामीये ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी एक मोक्षतत्व सवरने घर रूप जाणवो ॥ प्रश्न ॥ १०१ ॥ नवतत्व केतला तत्वने निर्जरा वालेछे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी आश्रवरूप पाच तत्वना दलिया जीवने सत्ताये लागाछे तेहने निर्झरा वालीने क्षय करेछे इणकारण जीवरे सकाम निर्झरारूप गुण जीवने आवे तिवारे पाचतत्वना दलियाक्षय करे १ अजीव २ पुण्य ३ पाप ४ आश्रव ५ वध ए ५ तत्वने निर्जरा वालेछे ॥ प्रश्न ॥१०२॥ नवतत्व मायथी केतला तत्वनो घर निर्झरा देप्यो नही ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी एक मोक्षतत्वनो घर देप्यो नही इ

समय जीवस्वरूप चिंतवारूप संवरमां आवे तेसमय नवा कर्मरूप दलियानुं ग्रहणकरे नथी इणमुदे पुण्यने एक संवर रोके छे ॥ प्रश्न ॥ ए४ ॥ नवतत्व मांयथी पापने प्रतिपक्षीरूप केतला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी पापनुं प्रतिपक्षरूप एक पुण्यतत्व जाणवो कारणके जीव जे समय पापबांधे ते उणसमय पुन्य न बंधे इणकारण पापने प्रतीपक्षरूप एक पुण्यतत्व जाणवो ॥ प्रश्न ॥ ए५ ॥ नवतत्व मांयथी पापने रोकवारूप केतला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी पापने रोकवारूप एक संवरतत्व जाणवो ॥ प्रश्न ॥ ए६ ॥ नवतत्व मांयथी केटला तत्वने पाप रोकीसकेछे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी मोक्षनगरे जातां एक जीवतत्वने पापरोकी सकेछे इणकारण पापना दलियानिकाचितपणे सताये बांध्याछे ते पपायांविनां कोइ जीव मोक्षनगरे पोहचे नहीं इणमुद्दे एक जीवतत्वने पाप रोकी सकेछे ॥ प्रश्न ॥ ए७ ॥ नवतत्व मांयथी पाप केतला तत्वनोवर देख्यो नथी ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी पाप मोक्षतत्वनो घर देख्यो नहीं इणकारण जे जीव मोक्षमे जावे ते पाप छेमीने जाय ॥ प्रश्न ॥ ए८ ॥ नवतत्व मांयथी

सी इत्यादिक अनेक गुण सहित तेहने भावसिद्ध कहीजे ते भावसिद्धमा तीन तत्व पावे एकतो जीवतत्व यथाख्यात चरित्ररूप गुणेकरि पोताना स्वरूपमा रमणकरे तिणसु सवरतत्व कहीजे अने भावमोक्ष पदवि पाम्यातिणसू तीजो मोक्षतत्व जाणवो १ जीव१ सवर ३ मोक्ष ए तीनतत्व भाव सिद्धमा पावे ॥ प्रश्न ॥ ए१ ॥ नवतत्व माहथी अजीव केतला तत्वने रोकी सकेछे ॥ उत्तर ॥ अजीव एक जीवतत्वने रोकी सकेछे इणकारण जीवने एकेक प्रदेशे अनता करमरूप दलिया अजीवने लागाछे तेणेकरि जीव मोक्ष नगरे जातो रोकाणोछे तेभणी अजीव एक जीवतत्वने रोकी सकेछे ॥ ए२ ॥ नवतत्व मायथी पुण्यने प्रतिपक्षरूप केतला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ पुन्यने प्रतिपक्षरूप एक पापतत्व जाणवो कारणके जे समय शुभ परिणामे जीव पुन्यना दलियानू ग्रहण करेछे ते समये पापना दलिया ग्रहणकरे नथी कारणके एक समये बेक्रिया नहोय इणकारण पुन्यने प्रतिपक्षरूप पापतत्व जाणवो ॥ प्रश्न ए३ ॥ नवतत्व मायथी पुन्यने रोकवारूप केतला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी पुण्यना दलिया रोकवारूप एक सवरतत्व जाणवो कारणके जे

हीं त्यांलगे छद्मस्थ अवस्थाये द्रव्य अरिहंत कहीजे द्रव्य अरिहंतमां आठ तत्व पावे ते किसा १ जीव २ अजीव ३ पुण्य ४ पाप ५ आश्रव ६ संवर ७ निर्जरा ८ बंध ए आठ तत्व पावे ॥ प्रश्न ८८ ॥ नवतत्व मांहथी भाव अरिहंतमां कितना तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ भाव अरिहंत केहने कहीजे ३४ अतीसे सहित ३५ वांणीरा गुणांकरके सहित एक हजार आठ लक्षणरा धरणहार बारे गुणांकरके सहित १८ दोष करके रहित केवल ग्यांन सहित ४ तीर्थना थापणहार तेहने भाव अरिहंत कहीजे भाव अरिहंतमां नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ८९ ॥ नवतत्व मांयथी द्रव्यसिद्धमां केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ द्रव्यसिद्ध केहने कहीजे सिद्धनूं द्रव्य ते केवलीनूं कहीये इण कारण केवली मांयथी सिधपणो नीपजेछे इणमुदे केवलीमां आगे कह्या तेरीते नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ९० ॥ नव तत्व मांहथी भावसिद्धमां केतला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ भावसिद्ध केहने कहीजे शुक्लध्यान रूपा तीत परिणाम रूप क्षपक श्रेणीये करी आतम प्रदेशेकरी अष्ट कर्मने क्षयकरी लोकने अग्रभागे विराजमांन अष्ट गुणांकर सहित अजर अमर अविनासी अचलित अयोगी अवेदी अमोही अले

व्य माय केटला द्रव्य पामिये ॥ उत्तर ॥ एक मूठी मा ७ द्रव्य पामेछे ॥ प्रश्न ८४॥ नवतत्व मायथी द्रव्य ज्ञानमा केटला तत्व पामिजे ॥ उत्तर ॥ द्रव्यज्ञान किणने कहीजे अतरग उपियोग विना जेनमतना सरव सूत्रप्रते वाचेछे अरथ करेछे पिण आसर मात्रा हीणी अधिकी परूपे सिधातकी परतीत राखे नही पिण सिद्धात वाचेछे सीखेछे तिणने द्रव्यज्ञान कहीये तेहमा ६ तत्व पामिये १ जीव २ अजीव ३ पुन्य ४ पाप ५ आश्रव ६ वध ए ६ तत्व पामिये ॥ २ प्रश्न ८५ ॥ नवतत्व मायथी भाव ज्ञानमा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ भावज्ञान किणने कहीजे देवगुरु धर्मनी शुद्ध ओलखणा करे सूत्रसिद्धात शुद्ध परूपे दयामे धर्म्म परूपे तेहने भावज्ञा न कहीजे ते भावज्ञानमा आठतत्व पावे ते १ मोक्षतत्व टल्यौ ॥प्रश्न ८६ ॥ नवतत्व मायथी कषायनी चोकमीमा कितना तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ कषायनी चोकमीमा आठ तत्व पावे एक मोक्ष तत्व टल्यौ ॥ प्रश्न ८७ ॥ नवतत्व मायथी द्रव्य अरिहतमा कितना तत्व पावे ॥उत्तर॥ द्रव्य अरिहत किणने कहीजे जे पहिले तीजे भवे एक चित्त करीने एक वोल आराधे अथवावीस वोल आराधे ते जिन नाम कर्म्म उपार्जीयो केवलग्यान उपजे न

मित्ररूप पांच तत्वछे अजीव पुन्य पाप आश्रव बंध ॥ प्रश्न ६६ ॥ नवतत्व मांयथी आश्रवने शत्रुरूप केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ आश्रवने शत्रूरूप एक निर्जरातत्व पांमिये॥ प्रश्न ६७ ॥ नवतत्व मांयथी आश्रवने रोकवारूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ आश्रवने एक संवरतत्व रोकवारूपछे ॥ प्रश्न ॥ ६८ ॥ नवतत्व मांयथी केटला तत्वने आश्रव रोकीसकेछे ॥ उत्तर ॥ एक जीवतत्वने आश्रव रोकीसके छे इण कारण आश्रवनादलिया शत्रुरूप थइने जीवने सत्ताये लागाछै इण कारण जीव मोक्षनगरे जातां रोकाणोछे तें माटे आश्रवतत्वजीवने रोकीसकेछे ॥ प्रश्न ६९॥ नवतत्व मांयथी आश्रव केटला तत्वनो घर देख्योनहीं ॥ उत्तर ॥ आश्रव एक मोक्ष तत्वनो घर देख्यो नहीं ॥प्रश्न ७०॥ नवतत्व मांयथी संवरने मित्ररूप केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ संवरनेमित्ररूप एक जीवतत्वछे इणरो कारण जीव मोक्ष जावे ते संवर साथे लेने जावे इण कारणमोक्षमां जीवने यथाख्यात चारित्ररो संवर तत्व सदाकाल साथे वर्त्तैछे इसमुद्दे एक जीवतत्व संवरनेमित्ररूप पावे ॥प्रश्न ७१॥ नवतत्व मायथी केटला तत्वने संवर रोकीसकेछे ॥ उत्तर ॥ पांचतत्वने संवर रोकेछे अ

॥ ६० ॥ नवतत्व मायथी पापने मित्र रूप केटला तत्व पामिये ॥उत्तर ॥ पापने मित्र रूप च्यार तत्व पामिये अजीव पाप आश्रव बध ॥ प्रश्न ६१ ॥ नवतत्व मायथी पापने शत्रूरूप केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ पापने शत्रू रूप एक निर्ज्जरातत्व पामिये ॥ प्रश्न६२ ॥ नवतत्व मायथी पापने रोकवारूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ पापने रोकवारूप एक सवरतत्वछे ॥ इण कारण जिण समे सवरका अध्यवसाय प्रवर्त्ते तिण समे नवा कर्मरूप दलिया ग्रहण करण देवे नही इण कारण पापने रोकवारूप सवर तत्वछे ॥ प्रश्न ६३ ॥ नवतत्व मायथी केटला तत्वने पाप रोकीसकेछे ॥ उत्तर ॥ जीवतत्वने मोक्ष नगरे जावता पाप रोकीसकेछे इण रो कारण पापकादलिया निकाचितपणे जीवसताये बाध्याछे ते खपायाविना कोइ जीव मोक्ष नगरे पोहचे नही इणकारण जीवने पापतत्व रोकीसकेछे ॥ प्रश्न ६४ ॥ नवतत्व मायथी पाप केटला तत्वनो घर ढेल्यो नही ॥ उत्तर ॥ पापतत्व एक मोक्ष तत्वनो घर टेर्यो नही ॥ प्रश्न ६५ ॥ नवतत्व मायथी आश्रवने मित्ररूप केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ आश्रवने

ने शत्रुरूप एक निर्झरा तत्व कहीजे तिणरो कारण जिवारे जीव सकाम निर्झरा करे तिवारे पु
न्यना दलिया सर्व खपाय देवे पछे मोक्ष जावे इण कारण पुन्यने शत्रूरूप निर्झरातत्वछे ॥ प्रश्न ५६॥
नवतत्व मायथी पुन्यने प्रतिपक्ष रूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ प्रतिपक्ष एक पाप तत्वछे कारण जे स
मे जीव पुन्य बांधे उणसमे पापरा दलीया बांधे नहीं इण कारण पुन्यने पापतत्व प्रतिपक्ष जांणवो॥प्रश्न
॥५७॥ नवतत्व मांयथी पुन्यने रोकणेवाला केटला तत्वछे ॥उत्तर॥ पुन्यने एक संवर तत्व रोकणे वा
ला छे तिणरो कारणजे समे संवरमेआवे तेउणसमे नवा कर्मरूप दलियाने ग्रहण करे नहीं इण
कारण पुन्यने संवर तत्व रोकेछे ॥ प्रश्न ५८ ॥ नवतत्व मांयथी पुन्य केटला तत्वने रोकीशकेछे ॥
उत्तर॥पुन्य एक जीवतत्वने रोकी सकेछे कारण पुन्यका दलीया निकाचित भोगवणरूप बांधीयाछे ते
भोगवीयाविना मोक्षनगरमें जावण देवे नहीं इण दृष्टांते जीवरे पुन्य दलिया जादा बंध गया छे
ते पुन्यरूप दलिया भोगवीयां पीछे मोक्षमे जावणोउसी धन्ना मुनीनीपरे ॥ प्रश्न ५९ ॥ नवत
त्व मांयथी पुन्य किसा तत्वनो घर देख्यो नहीं ॥ उत्तर ॥ मोक्षतत्वनो घर देख्यो नहीं ॥

थी अजीवने शत्रूरूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ अजीवने शत्रूरूप एक निर्जरा तत्वछे कारण जिण समे जीव सकामनिर्जरा करे तिणसमे अजीवना दलीया सगला खपायदेवे इण कारण अजीवने निरजरा तत्व शत्रूरूप जाणवा ॥ प्रश्न ५२ ॥ नवतत्व मायथी अजीवने रोकणेवाला केटला तत्व छे ॥ उत्तर ॥ अजीवने एक सवरतत्व रोकणेवालो छे इणरो कारण जीवने संवरका गुण आवेछे अजीव पुन्य पाप आश्रवना दलिया आवताने रोकेछे तिण कारण सवरतत्व अजीवने रोकेछे ॥प्रश्न ५३ ॥ नवतत्व मायथी अजीव तत्व कोणसा तत्वनो घर देख्यो नही ॥ उत्तर ॥ अजीव एक मोक्षतत्वनो घर देख्यो नही तिणरो कारण जेसमे जीव मोक्ष जावे तिणसमे आठ कर्मना दलिया अजीवछे ते दलिया खपाया पीछे मोक्ष जावे इण कारण अजीवतत्व मोक्षनो घर देख्यो नही ॥ प्रश्न ५४ ॥ नवतत्व मायथी पुन्यने मित्ररूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ पुन्यने मित्ररूप च्यार तत्वछे जीव पुन्य आश्रव वध जे कोइ जीव पुन्य वाधे तिवारे च्यार तत्व साथे वाधे तिणसु मित्ररूप च्यार तत्व कहीजे ॥ प्रश्न ५५ ॥ नवतत्व मायथी पुन्यने शत्रुरूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ पुन्य

नणन ?

प केटला तत्व पांमीये ॥ उत्तर ॥ जीवने शत्रुरूप पांच तत्व जाणवा अजीव पुन्य पाप आश्रव बंध ए पांच तत्व जीवने शत्रुरूप होयने अनादि कालरा लागेलाछे तेथी जीव च्यारगतीमां परिभ्रमण करेछे तिण कारण ए पांच तत्व जीवने शत्रुरूप जांणिये ॥ प्रश्न ४७ ॥ नवतत्व मांयथी जीवने भोलावारूप केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ एक तो पुन्य जीवने भोलावारूप जाणवो व्यवहारमे पुन्य आदरवा जोगछे कारण ए जीव मोक्ष नगरे जावतां पुन्य वोहोलाउ रूपछे कोइ जीव पुन्य वांधेतिण वखत च्यारतत्व भेला वांधे ते किणरीते पुन्यना दलिया अजीवछे ते आश्रवरूप जांणवा ते दलीया वंधायोछे इण कारणकरी च्यार तत्व भोलावारूप जांणवा तेना नांम अजीव पुन्य आश्रव वंध ॥ प्रश्न ४८ ॥ नवतत्व मांयथी जीवनें मित्ररूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ जीवने १ संवर मित्ररूपछे ॥ प्रश्न ४९ ॥ नवतत्वमांयथी जीवने घररूप केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ जीवने मोक्ष तत्व घररूप छे ॥ प्रश्न ५० ॥ नवतत्व मांयथी रूपी अजीवने मित्ररूप केटला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ रूपी अजीवनें मित्ररूप पांच तत्वछे अजीव पुन्य पाप आश्रव वंध ॥ प्रश्न ५१ ॥ नवतत्व मांय

पामिये जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव बध ॥ प्रश्न ४३ ॥ नवतत्व मायथी भावचारित्रियामा केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ भाव चारि त्रिया किणने कहीजे ससारसे विरक्त होकर सजम लीया पचसुमती तीन गुप्ती शुद्धपालेहे बेयालीस दोप तथा छिनु दोप टालकर शुद्ध आहार लेतेहे एतत्व का पाठद्रव्यका जाणपणा शुद्धकीयाहे जिनवचन शुद्ध परूपते हे। तिणने भावचारित्रिया कहीजे तिणमे आठ तत्व पामिये तथा नवतत्व तथा तीन तत्व पामिये तेहनो विस्तार नवीका प्रश्नमे खुलासो हुवोछे तेहनीपरे जाणजो ॥ प्रश्न ४४ ॥ नवतत्व मायथी द्रव्यसाधुमा केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ द्रव्य साधु किणने कहीजे श्रावक पचमे गुणठाणामे वर्त्तेहे पाचमा गुणठाणाथकी छठा गुणठाणाकी प्राप्ती होतीहे ते द्रव्य साधु पचमे गुणठाणे श्रावकने कहीजे तेमा आठ तत्व पामीये प्रश्न ४५॥ नवतत्व मायथी भाव लिगि साधुमा केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ भावलिगि साधु किणने कही जे जेसेकेवलीने साधु मुनिराजको मारग परूप्योहे तिणरी ते साधु मुनिराज पालते हे उणने भावलिगि साधु कहीजे तेमा आठ तत्व पामीये ॥प्रश्न४६॥ नवतत्व मायथी जीवने शत्रु

आचारज किणने कहीजे जे साधुपद थकि आचारज पद नीपजेछे तेभणी साधुमुनिराजने द्रव्य
आचारज कहीजे तेमां आठ तत्व पांमिये नवतत्व मांहसुं मोक्षतत्व टली वाकी रह्या ते पावे ॥
प्रश्न ४१ ॥ नवतत्व मायथी भावआचारजमां केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ भाव आचारज कि
णने कहीजे जे साधुमुनिराज हैं उणमे आचारजरा गुण छत्तीस पांमेहे पिण आचारज पद उणने
मिल्यो हे नहीं च्यार संघ मिलकर आचारज पद देनेकी तयारी होयरही हैं उणने भाव आचा
रज कहीजे तिणमे आठ तत्व पांमिये ॥ प्रश्न ४२ ॥ नवतत्व मांयथी द्रव्य चारित्रमां केटला तत्व
पांमिये ॥ उत्तर ॥ द्रव्यचारित्र किसीकुं कहिये । जो साधूके पंच महाव्रत रूप चारित्र पालेहे और
सूझता आहार पांणीकी गवेषणा करतेहे साधुकी क्रिया पालेहे जीव अजीव ओलखना करे नहिं
शुद्ध मारग परूपै नहीं हंस्यामे धर्म्म परूपते हैं सचित्तकूं संघटे ग्रस्तीसुं वोलते हैं उणघरसे मुनि
आहार लेतेहैं उण साधुकुं द्रव्यचारित्रिया कहीजे ते पहिले गुणठांणे जांणवा अथवा वीरप्रभुकूं
चूका वताते हैं अने करणी साधपणारी करतेहैं तिणने द्रव्यचारित्रिया कहीजे तिणमे छ तत्वं

ह्या ते पावे ॥ प्रश्न ३७ ॥ नवतत्व मायथी भाव लिगी श्रावकमा केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ भावलिगी श्रावक किणने कहीजे पाचमा गुणठाणमे वेठोछे दस पचखाण शक्ती सहित करे वा रा व्रतनी जे मर्जाद करीछे ते शुद्ध पाले तेहने भाव लिगी श्रावक कहीजे तेमा आठ तत्व पामि ये ॥ प्रश्न ३८ ॥ नवतत्व मायथी भावलिगी आचारजमा केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ भावलिगि आचारज किणने कहीजे जे छठे सातमे गुणठाणामे वेठाछे आचारजना छत्तीस गुण जिणमे पावेछे ति णने भावलिगी आचारज कहीजे तेहमे आठ तत्व पामिये ॥ प्रश्न ३९॥ नवतत्व मायथी द्रव्यलिगी आचारजमा केटला तत्व पामिये ॥उत्तर॥ द्रव्यलिगि आचारज किणने कहीजे आचारजना छत्तीस गुण करके रहितछे गुणविना आचारज पदवीका लिग धारनाकरयाछे आचारज नाम धरावे मत्र जत्र करे जोतक निमित्त प्रकाशे ओषधी करी भोला लोकाने भरमावेछे ते खोटा रूपैया सम जाणवा ते श्री पुज्यप्रमुख पहिले गुणठाणे जाणवा तेहमे छ तत्व पामिये जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव वध ए छ तत्व पामिये ॥ प्रश्न ४० ॥ नवतत्व मायथी द्रव्य आचारजमा केटला तत्व पामीये ॥ उत्तर ॥ दव्य

सहित करणी करे देव गुरूकी प्रतीत राखे तेहने भावसमगती कहियें तिणमे आठ तत्व पांमी
ये नवतत्व मांहथी मोक्षतत्व टली वाकी रह्या ते पांमीये केवलीमे भावसमगती । आश्री नवतत्व
पांमीये एवंभूत नयने मते सिद्धने भावसमगती कहीजे तेमां तीन तत्व पांमीये जीव संवर मोक्ष
एवं तीन तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ३४ ॥ नवतत्व मायथी द्रव्यलिंगि श्रावकमां केटला तत्व पांमिये ॥
उत्तर ॥ द्रव्य लिंगी श्रावकमां छ तत्व पांमी ये जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव वंध ए छ तत्व पां
मिये ॥ प्रश्न ॥ ३५ ॥ नवतत्व मांयथी द्रव्यश्रावकमां केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ द्रव्यश्रावककि
एनें कहीये देवगुरू केवलीका धरमकी प्रतीत आयगइछे ते द्रव्य श्रावक चौथे गुणठांणे जांण
वो जिणमे आठ तत्व पावे एक मोक्ष तत्व टली वाकी रह्या ते पांमिये ॥ प्रश्न ३६ ॥ नवतत्व
मांयथी भावश्रावकमां केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ भाव श्रावक केहने कहीजे समगत सहितछे
अने श्रावकना वारा व्रत लेवानो भाव उत्कृष्टो वर्तेछे पिण चौथे गुणठांणामे वेठोछे पिण पांचमा
गुणठांणाना भाववर्त्तेछे तेहने भाव श्रावक कहीजे तेमां आठ तत्व पामिये मोक्षतत्व टली वाकी र

संवर निर्जर ए तीन तत्व पामीये ॥ प्रश्न२०॥ नवतत्व मायथी वधतत्वमा केटला तत्व पामीये ॥ उत्तर॥ पांचतत्व पामीये तेहना नाम अजीव पुन्यपाप आश्रव वध ए पाच तत्व पामीये ॥ प्रश्न २१ ॥ नव तत्व मायथी द्रव्य मोक्ष पदमा केटला तत्व पामीये ॥ उत्तर ॥ द्रव्य मोक्षपदमा नवतत्व पामीये तेहनो विस्तार कहेछे तेरमे गुणठाणे केवली भगवान् तेहने द्रव्य मोक्षपद कहीये तिण कारणसु नवतत्व पामीयेएकतो केवली भगवान्नो जीवणोते जीवतत्वछे अने जेहने सत्ताये पुन्यपापनादलिया अ जीवरूप अणता लागीरह्याछे ते आश्रवरूप जाणवा एटले जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव ए पाच तत्व थया एहनें दलीये केवलीये बाधीराख्योछे तेणे करी मोक्षमे जाता केवली रोका णाछे तिणसु छठो वधतत्व कहीये सुकलध्याननां बीजा तीजा पाया विचाले रह्याथका तिणसु सा तमो सवरतत्व जाणीये सवरमे रेताथका समय समय अणता करमना दलीया निर्जरावेछे ए आठ मो निर्जरातत्व कहीये अने मोहनीय करमे बारमे गुणठाणे सपावे तिणसमे द्रव्य मोक्षपद पा मेछे इणरीते द्रव्य मोक्षपदमा नवतत्व पामीये ॥ प्रश्न २२ ॥ नवतत्व मायथी भाव मोक्षपदमा के

मांयला त्रिजंचगतिमां केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ मिथ्याती त्रीजंचजीव आश्री ७ तत्व पांमीये समगती त्रीजंच आश्री आठ तत्व पांमेंछ ॥ प्रश्न ३० ॥ नवतत्व मांयथी देवगतीमें केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ मिथ्यांतीदेव आश्री ७ तत्व पांमे जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव बंध एवं ७ तत्व जांणवा समगतिदेव आश्री आठ तत्व पांमिये नवतत्व मांहेथी मोक्षतत्व टाली लारे रह्या ते पावे ॥ प्रश्न ३१ ॥ नवतत्व मांयथी सिध शिद्धामे केटला तत्व पामीये ॥ उत्तर ॥ सिध सिद्धामे ७ तत्व पांमे ॥ प्रश्न ३२ ॥ नवतत्व मांयथी द्रव्य समगती जीवमां केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ द्रव्य समगती किणने कहिये करणीतो समगतीनी करे अने धर्म केवली भाषीयो आदरे छे अंतसमे केवलीका धर्मकी प्रतीत नथी जिणने द्रव्य समगती कहीजे तिणमे ७ तत्व पांमिये जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव बंध एवं ७ तत्व पांमिये ॥ प्रश्न ३३ ॥ नवतत्व मांयथी भावसमगतीमां केटला तत्व पांमिये ॥ उत्तर ॥ भावसमगती किणने कहिये चोथे गुणठांणासुं लेने बारमो गुणठांणो फरसे तेहने भावसमगती कहिये नवतत्व खट द्रव्यनो जांणपणो कर्यो तेहने भावसमगती कहीये समगते

पोते अजीवरूपछे ते आश्रवरूप जाणवा तेथी पापतत्व अजीव आश्रव ए तीनतत्व थया अने ए पापना दलीया मिली बंधायोछे ते चोथो बधतत्व थयो इणरीते च्यारतत्व पामीये ॥ प्रश्न १६ ॥ नवतत्व मायथी आश्रवमां केटला तत्व पामीसे ॥ उत्तर ॥ पाचतत्व पामीये ते इणरीते कोइ जीव आश्रवनो ग्रहणकरे तिवारे पाच तत्व पामेछे पुन्य अने पापना दलिया अजीव रूपछे तेपिण आश्रवप्राय जाणे तिणसु पुन्य पाप अजीव आश्रव ए च्यार तत्वना दलीया मिली बधायोछे ते पाचमो बधतत्व जाणिये ॥ प्रश्न ॥ १७ ॥ नवतत्व मायथी आश्रवमा केटला तत्व पामीये ॥ उत्तर ॥ पाच तत्व पामीये ते इणरीतें कोई जीव आश्रवनो ग्रहण करे तिवारे पाच तत्व पामेछे । पुन्य अने पापना दलिया अजीव रूपछे तेपिण आश्रप्राय जाणे तिणसु पुन्य पाप अजीव आश्रव ए च्यारतत्वना दलिया मिल बधायोछे ते पाचमो बधतत्व जाणिये ॥ प्रश्न१८॥ नवतत्व मायला सवरमा केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ सवरमा जीव तत्व सवर तत्व निर्जरातत्व ए तीन तत्व पामिये ॥ प्रश्न १९ ॥ नवतत्व मायथी निर्जरामा केटला तत्व पामिये ॥ उत्तर ॥ निर्जरामा तीन तत्व पामे जीव

ए छतत्व पांमीयें ॥ प्रश्न ॥ १२ ॥ नवतत्वमायला भव्यजीवमे केटला तत्व पांमीये ॥ उत्तर ॥ भ
व्यजीवमे छतत्व पामीये तथा आठ तत्व तथा नव तथा तीन तत्व पांमीये भव्यजीवमिथ्यांतीमां छ
तत्व पांमीये भव्यजीव समगतीमां आठतत्व पांमीये केवली भव्यजीवमां नवतत्व पांमीये सिद्ध
जीने पिण भवीजीव कहीये तेमां तीन तत्व पांमीये ॥ प्रश्न ॥१३॥ नवतत्व मांयला रूपी अजीवमां
केटला तत्व पांमीये ॥ उत्तर । पंचतत्व पांमीये ते इणरीते कोइ जीवने सताये पुन्य अने पापना दली
या आश्रवरूप अणंता लागाछे ते सर्व दलीया अजीवछे तिण कारण ए पांच तत्व पांमीये अजीव
पुन्य पाप आश्रव ए च्यारतत्व यथा अने ए दलीयामिली बंधायोछे तेथी पांचमों बंधतत्व पांमीये॥
प्रश्न ॥ १४ ॥ नवतत्वमांयथी पुन्यमां केटला तत्व पांमीये ॥ उत्तर ॥ च्यारतत्व पांमीये ते इणरीते
कोइ जीव पुन्यबांधे तिवारे च्यारतत्व पांमीये ए पुन्यना दलीया पोते अजीवछे तेथी अजीव पुन्य
आश्रव बंध ए च्पारतत्व पांमीये ॥ प्रश्न ॥ १५ ॥ नवतत्व मांयलां पापमां केटला तत्व पांमीये ॥
उत्तर ॥ च्यारतत्व पांमीये ते इणरीतसुं कोइ जीव पापबांधे तिवारे च्यारतत्व पांमीये ए पापना दलीया

रतत्व निर्जरातत्व वंधतत्व ए आठ और नवतत्व पामीयेतो तेरमे गुणठाणे केवलज्ञानीनें द्रव्यथकी मोक्ष पद कहिये इणआश्री मोक्षतत्व पिणभविकजीवमे पामेछे एवंभूतनयनेमतेसिद्धजीने भविक जीव कहिये पिण तेमा तीनतत्व पामीये एकतो सिद्धजीनो जीव पोते जीवतत्वछे तथा यथाख्यात चारित्ररूपगुणेकरीपोताना स्वरूपमा रमणकरेछे ते बीजु सवरतत्व कहीये अने भावमोक्ष पद पामीयाछे ते तीजो मोक्षतत्व कहीये एवंभूतनयनेमते सिद्ध भविकजीवमा तीनतत्व पामीये ॥ प्रश्न ॥ ॥ ९ ॥ नवतत्वमायलामिथ्याती जीवमा केटला तत्व पामीये ॥ उत्तर ॥ मिथ्याती जीवमें छतत्व पामीये ॥ तेना नाम ॥ जीव अजीव पुन्य पाप आस्रव अने बंध ए छतत्व पामीये ॥ प्रश्न ॥ १० ॥ नव तत्वमायथी समगती जीवमा केटला तत्व पामीये ॥ उत्तर ॥ आठतत्व पामीये । तथा नवतत्व पामीये । तथा तीनतत्व पिण पामीये । एहनो खुलासो ऊपरे प्रश्न दूसरा माहे भविक जीवमा कह्योछे तेरीते जाणजो ॥ प्रश्न ॥ ११ ॥ नवतत्वमाहेथी अभवी जीवमा केटला तत्व पामेछे ॥ उत्तर ॥ अभवी जीवमा छतत्व पामीये । जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव वध

पर्याय गुणगुणी इत्यादि भेद । अनेकांतपणेंकरी उलषीजे तो । एक एक देश आश्री सर्व सा
चाछे । ते यथानाम दृष्टांतेकरी कहेछे । जिम एक कहे अन्ननोखेतमेंघथी नीपजे १ बीजोकहे ध
रतीथी नीपजे २ तीजो कहे बीजथी नीपजे ३ चोथो कहेहलथी नीपजे ४ पांचमो कहे हालीथी
नीपजे५ छठो कहे वेहलथी नीपजे६ सातमो कहे भाग्यथीनीपजे७ इम एकेक नयकरी पेखतां ए
कदेसेकरी सर्व साचाछे । सर्व देसेकरी सर्व कूडाछे । सर्वज्ञवचनेकरीसर्वकारण भेला करीनें कार्य
नीपजे ॥ प्रश्न ॥ ७ ॥ नवतत्वमायथी द्रव्यजीवमा केटला तत्व पांमीये ॥ उत्तर ॥ द्रव्यजीवमां छ तत्व
पांमीये तेकिसा जीवतत्व एनि सत्ताये पुन्यपापना दलिया अजीवरूप अनंता लागी रह्याछे ते
आस्त्रवभूत जाणवा एटले । जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव ए पांचतत्व थया अने एदलीये जी
व बंधाणोछे तेमाटे बंधतत्व पिणछे । ए छतत्व जांणवा ॥ प्रश्न ॥ ८ ॥ नवतत्वमायथी । भविक
जीवमां केटला तत्व पांमीये ॥ उत्तर ॥ भविकजीवमां आठतत्व पांमीये तथा नवतत्वपिण पांमिये
भविकजीवमां आठतत्व पांमीये तेना नांम जीवतत्व अजीवतत्व पुन्यतत्व पापतत्व आश्रवतत्व संव

सूत्रपाठ बतावेछे । पन्नवणा १३ में पदे जीवपरिणामता ४३ । बोल कह्या । ते कषाया दिकतो जीवना परिणाम कह्या । अथवा सचित्तपृथ्वीनें तथा छकायना सचित्त पुद गलने जीव कह्या । साधुने आहारादिकनो दोष टालवापाते योगसापुदगलने जीव कह्या एणे न्याये एकअजीव आठजीव ॥ प्रश्न ॥ ६ ॥ नवतत्वमाहे नवही जीवछे ते किम ॥ उत्तर ॥ ए जीव ते कहेछे । एवम्भूतनयनी । अपेक्षाई ए । नोहिजीवछे ते किणन्याये ए जीव ते कहेछे ते इम जे आत्माने तद्रूपवरती तेह एवम्भूतनय कहावे अजीव धर्मास्तिकाय प्रमुख छे द्रव्यगुणपर्याय । ते ग्यानगोचरमे आवे ग्यानछे ते जीवनो गुणछे । जे आया से विन्नाया । इति वचनात् । ते माटे सर्वतत्व आत्माना गुणथी होई आत्मानागुणरहिततत्वनी लबधि न थाइ । तेहनें सूत्रथी न्याय कहेछे नंदीसूत्रमें अक्षरनें श्रुत ज्ञान कह्यो ॥ एवलबध अक्षरनें श्रुतज्ञान कह्योछे । श्रुतग्यान जीवनो गुणछे । तेणे न्याये ए जीवछे । इम अनेकन्यातनी ए परूपणा करतांथका जुदो २ पक्ष झालीने बीजापक्षने झुठो कहेछे । एकांतपक्ष मिथ्यात्वी जाणवो । अनें तत्वार्थसर्द्दहणाछलषतां द्रव्यगुण

किणन्याय कहेछे। जीवतो जीवछेहीज। अने अजीवछे सो अजीवछे। अने साततत्व जीव पुदगलनां संयोगथी नीपजेछे। इणन्याय एक जीव एक अजीव सात जीव अजीवकी प्रजाय कहे छे। तिण ऊपर सूत्रनोन्याय वतावेछे। उत्तराध्येन२८ मे। अध्येन गाथा। जीवा जीवा य बंधो य पुन्न पावासवो तहा। संवरोनि ज्जरा मोखो। संति ए तहिया नव ॥१॥ जीव अजीव दोनुंमीलयांबिनां बंध न होइ एकलुं। जीव कर्म बांधी न सके। एकलो अजीव पिण कर्म बांधी न सके। ते बंध विनां पुन्य पाप न होइ पुन्यपापनो आववोते आश्रव पुन्यपापरो कवों ते संबर पुन्यपापथी निर्जरा पुन्यपापथी। मोक्ष इम पुन्यपाय पयोगसा पुदगल छे। तिणन्याय कहणो ॥ प्रश्न ॥ ५ ॥ नवतत्वमांहे एक अजीव आठ जीवछे तेकिम ॥ उत्तर ॥ अजीवतो अजीव छेहीज। जीवछे सो जीव छेहीज। सेष सात पदार्थ जीवने केमेछे पुन्य पाप बंध ए त्रिण कर्म तत्वछे। पिण सचितपणें प्रणम्याछे आश्रवछे सो जीवना असुन्न अध्यवसायछे। सो जीवने छे संबर निर्जरा मोक्ष। ए ३ धर्म्मतत्वछे। ते पिण जीवनो स्वगुणछे। तेहनेपिण न्नावजीव कहणो ॥ ते उपरि

पिण अजीवपणों । बतायोछे । तेणन्यायें ४ जीव ५ अजीव जाणवा ॥ प्रश्न ॥ ३ ॥ नवतत्व माहे ५ जीव ४ अजीवछे ते किम ॥ उत्तर ॥ जीवतो जीव छेहीज । संवर निर्जरा मोक्ष ए त्रिण धर्म तत्वछे । धरमछे सो जीवनो स्वभाव स्वगुणछे । ते माटे जीव अने आश्रवनें जीव किणन्याय कहणों मिथ्यात्वादि आश्रवना द्रव्य पुदगलछे ते पुदगलना सजोगथी आत्मानी अवस्था तद्रूपपणें प्रवर्त्ते प्रणमे ते अध्यवसायरा परिणाम जीवराछे। तिणन्याय आश्रवनें जीव कहीजें ॥ तिण ऊपर सूत्रनो पाठ बतावेछे । अप्पा कत्ता विकत्ताय । दुहाणय सुहाणय । इसो उत्तराध्येनमे कह्योछे तिणें न्याये कर्म कर्त्ता जीवछे । कर्मनो कर्त्ता आश्रवछे । तिणन्याय आश्रवने जीव कहणों । इणन्याय ५ जीव कहीजे । अने ४ जीव किणन्याय कही जें ते अजीव तो अजीव छेहीज पुन्य पाप बंधए तीन कर्म तत्वछे । कर्म चोफरसी पुदगलछे । सो अजीवछे । इणन्याय ४ अजीव कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ४ ॥ नवतत्व माहे एक जीव एक अजीव सात जीव अजीव दोनारी प्रज्याय छे ते किम उत्तर नवतत्व माहे १ जीव १ अजीव ७ जीव अजीव दोनारी प्रज्याय । ते

थाइते आत्माना गुण ते गुणना आधार ते गुणी । ते गुणी अने गुणना अभेदथी । एवं ४ जीव अने ५ अजीव किणन्याय कहीजे । अजीवतो अजीवछे हीज पुन्य पाप वंध ए त्रिण कर्मथी नीपना छे कर्म्म प्रगुण छे चोफरसी पुदगलछे । एणे न्याइं अजीवछे । अनें आश्रवनें अजीव कि णन्याये कह्णों आश्रवनो गुण कर्म्म ग्रहणछे जीवना अशुद्ध भावथी करम ग्रहण थायछे । जी वना अशुद्ध मोहनी कर्मथी थाइछे । ते माटे सरलसूत्रना पाठ जोंता तो कर्म आश्रवछे । कर्मने कर्म ग्रहण करेछे । तथा मिथ्यात्व १ अव्रती २ प्रमाद ३ कपाय ४ जोग ५ ए आश्रव कह्या ते पांचुही कर्मनी वर्गणाछे । तेणे न्याये आश्रवने अजीव कह्णों । तिहां सूत्रनां पाठथी वतावेछे । उत्तराध्येंन ॥ १८ ॥ मां अध्येंनकी गाथा ५ मीमे कह्यो ॥ फायइ फवियासवे ॥ गर्दभाली मुनी अरफोव मंमप द्राखादिना मंमपनेंविषे ध्यांन ध्याइछे । ते सांभणी ध्यांन ध्याइयेछे । फवियास० । आश्रवने खपावीनें कारणे इत्यादि पाठ जोतां तो कर्मनी वर्गणानें आश्रव जांणीजेछे । तथा ठा णायंगजीनी टीका कारक श्रीअभयदेवसूरी जीने नोमे ठांणे पुदगलविनां आश्रवन होइ । तिहां

नथी तेने इवरती अपच्चखाणी कयाछे इसकारण नवतत्वनो स्वरूप जाणे तेने समकती विरती तेने शुद्ध कहिजे ते न्नणी नवतत्वनी ओलखणा करवी गाथा जीवाऽ जीवा पुन्न पावा सव सवरो य निज्जरणा वधो मुरकोय तहा नवतत्ता ऊति नायव्वा १ अर्थ कहेछै । जीव १ अजीव २ पुन्य ३ पाप ४आश्रव ५ सवर ६ निर्जारा ७ बंध ८ मोक्ष ९॥ प्रश्न १॥ नवतत्वमाहे एक जीव आठ अ जीवछे ते किम ॥ उत्तम जीव ते सिद्ध स्वरूपी । अमूरती सच्चिदानंदछे अने अजीव जम लक्षण छे । अने साततत्वनो नाम पुदगलना सयोगथी नीपनोछे। पुदगलने नामे तत्व नीपजे निश्चे जीवतो सिद्धछे तेणे न्याये आठ तत्वने अजीव मानेछे । तेहनो न्याय सर्वेथी दिखावेछे । जीव शवदनो श ब्दार्थ सदा जीवे तेजीव जीवति जीवे जीवसइ ए शब्दनो अर्थ एक जीव तत्वमेहीज संन्नवेछे शेख तत्वमे शवदनो अर्थ नही । सन्नवेछे अने द्रव्यप्राण । न्नाव प्राण तेपिण नथि तिणिन्याये आठ अ जीवछे ॥ प्रश्न २ । ॥ नवतत्वमाहे ४ जीव ५ अजीव ते किम ॥ उत्तर ॥ जीवतो जीवछे हीज । सवर निर्जरा मोक्ष ए तीन धर्म्मतत्वछे धर्म्म ते आत्मानो स्वभावछे । आवरण उघड्या गुण प्रगट

गन थइरह्योछे आत्मानो स्वरूप ओलख्यो नथी ते ओसन्ना २ कुसील कहिए जेहनो कुसीलछे । आ
चार तथा स्वन्नाव ग्यांनादी जेहनो खंडितछे एहवा कुसीलनी ३ संसता कहिए गृहस्थसूं संस्तव
परिचय । जेहनो घणो होए तेहनी साथि गृहस्थ रहता होय ते ससतानी संगती बरजवी कही ४
अपछंदा कहिए आपणे छंदे वरतेछे न्नगवांनकी आग्याधरमना ओलंघणहार छे तथा गुरुनी अग्या
नो अणकरणहार छे ५ निन्हवा ते कहिए जे एकनयना वचन अवलंबीनें पक्षग्राही होय जमाली
वत् ६ कदाग्रहिया ते धर्ष पक्षमे कलेसनो करणहार आपणा पक्षने झालीने कूड़ाकदाग्रह करी
ने सूत्रना अरथ विप्रीतपणे प्ररूपे ७ नितिया कहिए नित्यपिडको न्नोगवणहार तथा कारण विना
एक गामे रहे तेहनी संगती वरजवी ८ अन्यमारगीया ते कहिए बीजामतनी प्रसंसानो करणहार
तथा वांछा राखे जेहनी ९ वमणगा कहिए जे धरम पांमीने वमण कीधो एतले धरमथी न्नृष्टथयोछे १०
जणानी संगत सम्यग्दृष्टीने न करवी एनकरे तिणने समदृष्टी कहीजे अंतरं सरदहे तेने समगती
कहिये इण कारण नवतत्व ओलखणा करिये श्रीन्नगोती जी सूत्रमां इम कयो नवतत्व ओलख्यो

तों कार्य सिद्ध थाइ नही। इण दृष्टांतेकरी दोइ नयमाहि केणे ठामि निश्चेनयनी मुख्यता कीजे अने व्यवहारनीगोणता कीजे केणें ठामे व्यवहार नयनी मुख्यता कीजे। अनें निश्चे नयनी। गोणता कीजे तो सम्यक्त प्रकाश थाई। अनें एकनय मानें। वीजी न माने तथा १ खेंचे। एकण साधि तथा दोनू ढीलीठेमे तो सम्यक्तरूप मोक्षकारज सिद्ध न थाइ। ते माटे शुद्ध सम्यक्त वतनें सर्वनय प्रमाणकीजे। हिव एकेक एकांतपक्षवादी नयना वचन अणजाणताथका विरुद्ध प्ररूपणा करता दीसेछै ते अनेकांत स्वरूपनी उलखणा नथी जेहने ते एक एक नय अवलवीने वीजीनयना वचनने उथापताथका उतसूत्रना बोलणहारछै ते उतसूत्र वादीनी भव्यजीवने सस्तव परिचय करिवो न कल्पे तेहनी सगती करता सम्यक्त गुणनो तथा ग्यान प्रमुख गुणनो विणास थाइछै तेमाटे एकांतपक्षवादीनी सगती न करवी अने सम्यग् दृष्टी दस जणानी सगति वरजे ते कहेछै पासथाक हिए आचारमे ढीला १ उसन्ना कहिए ग्यान दरशणनो अजाण केवल क्रिया आडम्वर तपादिक आचरण करी ग्यान दर्शण चारित्रनो स्वरूप उलख्यो नथी केवल भेषधारीने क्रिया अभिमानमे म

पवरते तेएवंभूतनय माने जिम दृष्टांत धम्मास्तिकाय प्रमुखना द्रव्यगुणपर्याय ते ग्यांनना गोचरमें आवे अने ग्यांनछे । ते जीवना गुणछे तेमाटे सर्व वस्तुनो जांणपणो तेहनें जाणपणानि वस्तु मांने तेएवं भूतनय कहीजे हिवें नय सात पूर्वोक्तप्रकारे कहेंछे ते दोयभेदे कहीइंद्रव्यार्थिक १. पर्यायार्थिक २ तेनैगमनय ॥ १ ॥ संग्रह ॥ २ व्यवहार ३ ए ३ । द्रव्यार्थिकनय ४ । अनें ऋजुसूत्र १ । शब्द२ । समभिरूढ ३ । एवंभूत ४। ए४ पर्यायार्थिकनय । द्रव्यार्थिकनय ते व्यवहारनय। पर्यायार्थिकनय ते निश्चेनयते ३ । व्यवहारनय ४ । निश्चेनय तेमाहि व्वयहारनय नाम १ । थापना २। द्रव्य ३ । निक्षेपामें भावना कारणभूत माने । निश्चेनय ४ । भावनेंहीज वस्तु माने कारजने वस्तु माने इहा २ मतमें ७ नयछे। निश्चे १ व्यवहार २। दोइनी षप राषवी एकसुं कार्यसिद्ध नथाय । अत्र विलोवणानो दृष्टांत जिम विलोवणाना नेतमो मोर दोइछे। सम दोनुं हातसे दोइ डोर ग्रहे तेमांहि १ मोरखेंचे १ । ढीली मूंके तो कार्यसिद्ध थाय अने दोइ ढीली मूंके तथा २ खेंचे तथा दोनूं हातथी छोडे तो कारज सिद्ध थाइ नहीं तथा ॥ १ ॥ डोरने खेंचे अनें दूजीनें हाथथी छोडे

॥ १ ॥ तथा धर्मशब्द कह्यो ते माहि धर्म्मास्ति १ श्रुतधम २ चारित्रधर्म विवेक्यो अनें स
मभिरूढ नयनें मते बोलणहारना शब्द अनें अभिप्राय जे धर्मनो होंइ तेहने धर्म्म कहे बीजा
ने नमाने । जिम सूत्रे कह्यो जा जा वच्चईरयणी पिण कहणहारनो अभिप्राय दिनना पिण
तेमाटे दिनरात्रिदोनूहिग्रहवा इत्यादि कहणहारना मन जे वस्तुने सन्मुखछे । ते व
स्तुने वस्तु कहे अने शब्दनो अर्थपिण भिन्नथाइ शब्दतो आधार पणें ठहरे मननो अ
भिप्राय आधेयपणे ठहरे । आधार विना आधेयवस्तुनो नामलेता वचन विपरिणामन होइ
इहा शब्दनयवालो कहेछे । थाहराकहण अने अम्हारा कहणमाहि अतर रूपछे समभिरूढ
नयवालो कहेछे। शब्दनो अर्थनो दूजीवस्तूमे मिले तुरग उतावलो चाले ते घोमो अने मनपिण
तेमाटे । आधारवस्तूनो अभिप्राय सन्मुषपणें होइ ते समभि रूढनय ॥ ६ ॥ हिवे एव भूतनय
नीयुक्ती कहेछे अणुयोगद्वारे ॥ वजणअच्छ तदुभय । एवभूउ विसेसइशब्द निर्युक्तिसहित अर्थ शब्द
अनुसारे परिणाम जे वर्त्तमानकाले एव भूतनयमाने । वस्तूना मूल निजस्वभाव आत्मभावे तद्रू

व्हथाइ जिम तीर्थंकरनो नांमलेइ वषांणकरवोः ते नांम निक्षेपो १ अने तेहज तीर्थंकरनो थापना रूप वपांणकरवो संगाण प्रमुखनो जिम लोकनो वखांण करतां लोकनाम्भिअलेखीने लोकनो स्व रूपदिखायवो तिम अरिहंतना आकारथापना करीने तीर्थंकरनो वखांणकरवो २ तेहिज तीर्थंकर ना शरीर अवगाहणा आनुषा अतीशय करीने वखांणकरवो द्रव्यनिक्षेपो॥३ भावनिक्षेपो ते ग्यांन दर्शणादिकरी । तीर्थंकरनो वखांणकरवो ४ परं एह नांमादिसर्वे तीर्थंकरनांमे संभवेछे इमज अरि हंत कर्म्मरूप शत्रु हणयां ते अरिहंत तेहनो वखांण नामादि ४ निक्षेपादिकथी करवो पिण अरि हंत शब्दार्थ होयेजीणमे संभवेछे । शब्दार्थ शुद्ध थाइ ते शब्दनय पांचमो कहीजे । हिवे समभिरूढ नय कहेछे । समभिरूढनयने मते ज शब्द ॥ १ ॥ मे घणी वस्तु होइ ते नमांने जे कहीणारना जे शब्दनो अर्थ अने अभिप्राय होइ ते वस्तु शेप अवस्तु । जिम केणें कह्यो अहो साधु अश्व दोम्भेछे एहने ग्रहो इहां शब्दनो अर्थतो अश्व घोम्भो अनें मन वेहूं अर्थ नीपजे । पिण बोलणहारनो अ भिप्रायएहवो मनने अश्व कह्यो । तेभणी मन अश्व ते वस्तु अनें घोम्भो अश्व ते अवस्तु

जो थूलऋजुसूत्र ॥ २ ॥ तिहा सुक्ष्मऋजुसूत्र जे कहवो जे सदा सर्वदा वस्तुमें एक वर्त्तमान समय वर्त्तेछे एतले जीव गएकाले अज्ञानी हुतो । अनें आगलें कालें कोइक अज्ञानी पिण थास्ये । अने वर्त्त मानकालें ग्यानीछे तेहनें कहणों ए सूक्ष्मऋजुसूत्रछे ॥ १ ॥ अने वादर मोटका वाह्यपरिणाम ग्रहे जिम वर्त्तमानकाले धर्म्म आराधे तेहने धर्म्मी कहणों पछै धर्मकारज करवापछे अधर्म करस्यें: ते आगमियेकाले तेहनणी नमानेः एतले ऋजुसूत्र कह्यो ४ हिवे शब्दनय कहियेछे जे वस्तु गुणवत अथवा निगुण तेहनो नाम कहि वोलाव्यु ते भाषा वर्गणाथी शब्द कह्यो ते शब्द व्याकरणसे प्रकृति प्रत्यय द्वारेकरि शब्द सिद्धहोय सो शब्दनय कहिए तिहा शब्दनो जें अर्थ तेमादि होइ ते वस्तुने माने ते शब्दनय कहीजे जे से अरिहत कहिवोल्याव्योतेशब्दनों अरथकह्योः अरिकही एकरमरूपशत्रुहत० हणपाते अरिहतकहिए अनेनामादि अरिहत होइतेमाहि शब्दार्थनहोइतेहने अ रिहंतनमाने ते शब्दनय इमतीर्थ४करेसो तीर्थ करइम शब्द सिद्धहोइ ते शब्द ए४ निक्षेपा तीर्थ करमें सं भवेछे तीर्थकरनो शब्दतो तिर्थकरे तेपिण नाम थापना द्रव्यनिक्षेपादिकरी भावनिक्षेपामे अर्थसि

नय कहीजे । जे वस्तुनों सामान्यपणें नांम लेतां जीव अजीवनो भेद नपाड्यो जिम ए वणस्पतीनो वनछे असो कहणों विशेष संग्रह जे विशेषपणें दीठी तेहनों नांमलेइ कहवो जिम ए आंबानों बनछे तेमांहि अनेरा पिण वृक्षछे ते संग्रहनयः२ हिवे व्यवहार नयकहेछे सामान्य व्यवहारः१ विशेष व्यवहारः२ सामान्य व्यवहार बाह्यगुण देषीने वस्तुनो प्रकाशकरवो तेजीवमजीवदव्वं जीव अजीव द्रव्यहे द्रव्यपणुं सामान्य गुणहे सो सर्व द्रव्यमेंहे सो सामान्यव्यवहार १ अनें विशेषव्यवहार तेजीव द्रव्यहे सो चेतनगुणहे जिसमे सिद्धसंसारी सर्वद्रव्य एक हे ते विशेषव्यवहारः२ इति व्यवहारनयकह्योः ३ः हिवे ऋजुसूत्रनय कहेछें ऋजु कहिए सरल सूत्रकहिएः शब्दनो अर्थ ते ऋजुसूत्रनय कहिए हवे ऋजुसूत्रनयरो विचार कहेछे अतीतकाल अनागतिकालरी अपेक्षा न करे वर्त्तमांनकाले जेवस्तु जेहवे गुण परिणांमे वरते ते वस्तु तेहवे गुणपरिणांमे मांने ए नयपरिणामेयाहि हिवं जे जीवगृस्तीछे पिण अंतरंग परिणांम साधुसमांनछे तो ते जीव साधु कहीजे अने जे जीव साधूनें वेषेछे पिण मनपरिणांमे विषयाभिलाप सहितछे तो ते जीव अविरतीजछे ते ऋजुसूत्रना २ भेदछे एक सूक्ष्मऋजुसूत्र ॥१॥ बी

कोत्तर मारगमा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ लोकोत्तर मारग केहने कहीजे ४ गतीरूप ससारनी वग्र रहित एक मोक्षपुरीने साधे तेहने लोकोत्तर मारग कहीजे तिणमे अष्ट तत्व पावे तथा नवत त्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १८५ ॥ नवत्व मायथी जीवने अशुभगुणरूप केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अशु भगुणरूप केहने कहीजे पापने अशुभ गुणरूप कहीजे तीणमे तत्व पावे जीव पाप आश्रव वध ए ४ तत्व जीवने अशुभ गुण रूप जाणवा ॥ प्रश्न ॥ १८६ ॥ नवतत्व मायथी जीवने शुभ गुण रूप केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ जीवने शुभ गुण रूप केहने कहीजे जीवने दुःखथी छुडावे ते हने शुभ गुण रूप कहीजे ते शुभगुण पुन्यने कहीजे च्यार तत्व जीवने शुभ गुण रूपछे अजीव पुण्य आश्रव व २ ए ४ तत्व जीवने शुभ गुण रूपछे ॥ प्रश्न ॥ १८७ ॥ नवतत्व मायथी जीवने निर्मल कर्वा रूप केतला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ जीव अष्टकर्मकरी मलीन होयरह्योछे तिणने निरमल कर्वारूप वेतत्वछे एकतो सवर दूजो निर्जरा ए वेतत्वछे ॥ प्रश्न ॥ १८८ ॥ नवतत्व मायथी जीवने निश्चेगुणरूप केतला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ निश्चे गुणरूप एक मोक्ष तत्वछे ॥ प्रश्न ॥ १८९ ॥ नवत

नय कहीजे । जे वस्तुनों सामान्यपणें नांम लेतां जीव अजीवनो भेद नपाड्यो जिम ए वणस्पतीनो वनछे असो कहणों विशेष संग्रह जे विशेषपणें दीठी तेहनों नांमलेइ कहवो जिम ए आंबानों बनछे तेमांहि अनेरा पिण वृक्षछे ते संग्रहनयः२ हिवे व्यवहार नयकहेछे सामान्य व्यवहारः१ विशेष व्यवहारः२ सामान्य व्यवहार बाह्यगुण देषीने वस्तुनो प्रकाशकरवो तेजीवमजीवदव्वं जीव अजीव द्रव्यहे द्रव्यपणुं सामान्य गुणहे सो सर्व द्रव्यमेंहे सो सामान्यव्यवहार १ अनें विशेषव्यवहार तेजीव द्रव्यहे सो चेतनगुणहे जिसमे सिद्धसंसारी सर्वद्रव्य एक हे ते विशेषव्यवहारः२ इति व्यवहारनयकह्योः ३ः हिवे ऋजुसूत्रनय कहेछें ऋजु कहिए सरल सूत्रकहिएः शब्दनो अर्थ ते ऋजुसूत्रनय कहिए हवे ऋजुसूत्रनयरो विचार कहेछे अतीतकाल अनागतिकालरी अपेक्षा न करे वर्त्तमांनकाले जेवस्तु जेहवे गुण परिणांमे वरते ते वस्तु तेहवे गुणपरिणांमे मांने ए नयपरिणामेयाहि हिवं जे जीवगृस्तीछे पिण अंतरंग परिणांम साधुसमांनछे तो ते जीव साधु कहीजे अने जे जीव साधूनें वेषेछे पिण मनपरिणांमे विषयाभिलाष सहितछे तो ते जीव अविरतीजछे ते ऋजुसूत्रना २ भेदछे एक सूक्ष्मऋजुसूत्र ॥१॥ बी

कोत्तर मारगमा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ लोकोत्तर मारग केहने कहीजे ४ गतीरूप ससारनी वत्रा रहित एक मोक्षपुरीने साधे तेहने लोकोत्तर मारग कहीजे तिणमे अष्ट तत्व पावे तथा नवत त्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १८५ ॥ नवत्त्व मायथी जीवने अशुभगुणरूप केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अशु भगुणरूप केहने कहीजे मापने अशुभ गुणरूप कहीजे तीणमे तत्व पावे जीव पाप आश्रव वध ए ४ तत्व जीवने अशुभ गुणं रूप जाणवा ॥ प्रश्न ॥ १८६ ॥ नवतत्व मायथी जीवने शुभ गुण रूप केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ जीवने शुभ गुण रूप केहने कहीजे जीवने दुःखथी छुमावे ते हने शुभ गुण रूप कहीजे ते शुभगुण पुन्यने कहीजे च्यार तत्व जीवने शुभ गुण रूपछे अजीव पुण्य आश्रव व र ए ४ तत्व जीवने शुभ गुण रूपछे ॥ प्रश्न ॥ १८७ ॥ नवतत्व मायथी जीवने निर्मल कर्वा रूप केतला तत्वछे ॥ उत्तर ॥ जीव अष्टकर्मेकरी मलीन होयरह्योछे तिणने निरमल कर्वारूप बेतत्वछे एकतो सवर दूजो निर्यरा ए बेतत्वछे ॥ प्रश्न ॥ १८८ ॥ नवतत्व मायथी जीवने निश्चेगुणरूप केतला नत्वछे ॥ उत्तर ॥ निश्चे गुणरूप एक मोक्ष तत्वछे ॥ प्रश्न ॥ १८९ ॥ नवत

त्व मांयथी ग्यांनमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ ज्ञान किणने कहिजे जेसी वस्तुनो स्वरूप हुवे
तेसोहि जांणे तेसोई परूपे तिणने ज्ञान कहिये तेग्यांनमे नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १९० ॥ नवतत्व
मांयथी देशथकी ग्यांनमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ देशथकी ग्यांन किणने कहीजे देश
कहतां थोडी वस्तू जांणे पिण सर्ववस्तुने जांणे नहीं तिणनुं देशथकी ज्ञान कहीजे तिणरा दोय
भेद अवधिग्यांन मनपर्यव ग्यांन एदोयने देसथकी ग्यांन कहीजे एहमे आठतत्व पावे एक मोक्षतत्व
टली ॥ प्रश्न ॥ १९० ॥ नवतत्व मांहथी सर्वथकी ग्यांनमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सर्वथ
कीग्यांन किणने कहिजे १४ राजलोकना भाव संपूर्ण जाणे तिणने सर्व थकी ग्यांन कहिजे ति
णरा दोय भेद केवल ग्यांन केवल दर्शन एहमे तत्व पावे नव ॥ प्रश्न ॥ १९१ ॥ नवतत्व मां
यथी अनु मांन प्रमांणमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अनुमांन प्रमांण किणने कहीजे वर्णकरी
जांणे मसकरी जांणे तीलक करी जांणे संठाणकरी जांणे षांतकरी जांणे एपांच बोल करी जांणे
तिणने अनमांन प्रमांणुं कहिजे अनुमान प्रमाणको धणी समगति हुवे तिणमे आठ तत्व पावे ए

क मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ १९२ ॥ नवतत्व मायथी आगम प्रमाणमा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ आगमप्रमाण किणने कहीजे उर्द्धलोकना भाव अधोलोकना भाव त्रीछलोकना भाव ए सर्व श्री जिनआगमथकीप्रमाण करे तिणने आगमप्रमाण कहीजे एहमे तत्व पावे आठ एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न १९३ ॥ नवतत्व मायथी उपमा प्रमाणमे केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ उपमा प्रमाण किणने कहीजे जीव अजीवनी वस्तुने उपमा देइने ओलखावे तिणमे तत्व पावे आठ एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ १९४ ॥ नवतत्व मायथी मिथ्यातीजीव च्यारप्रमाणको धणी हुवे तिणमे कितना तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ मिथ्याती च्यार प्रमाणका धणीमे ७तत्व पावे-जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बंध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १९५ ॥ नवतत्व मायथी सवरमा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सवरमा च्यारतत्व पावे जीव सवर निर्जरा मोक्ष एच्यार तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ १९६ ॥ नवतत्व मायथी आश्रवमा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ आश्रवमा ७ तत्व पावे जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव बध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न १९७ ॥ नवतत्व मायथी द्रव्यनयमा केतलातत्व पावे ॥ उत्तर ॥ द्र

व्यनय किणने कहीजे पेहलीनयसूं लेकर चौथी नयतांइ च्यार नयनो जांणपणो हुवे तिणने द्रव्य नय कहीजे तिणमें ७ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बंध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ॥ १९८ ॥ नवतत्व मांयथी भावनयरो धणी छद्मस्थ हुवे तिणमे कितना तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ भावनय किणने कहीजे पांचमी नयसुं लेकर सातमी नयतांइ ए तीन नयनो जांणकार हुवे तिणने भावनय कहीजे एभावनयनो धणी छदमस्थ हुवे तिणमे तत्व पावे आठ एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ ॥ १९९ ॥ नवतत्व मांयथी भावनयना धणी केवली महाराजमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ भावनय केवलीमहाराजमां नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २०० ॥ नवतत्व मांयथी एवंभूतनयने मते सिद्ध भगभगवांन तेछे तिणमे कितना तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सिद्ध भगवांनमां तीन तत्व पावे जीव संवर मोक्ष एतीन तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २०१ नवतत्व मांयथी अढीदीप मांहेला मिथ्यातीमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अढी दीप मां हेला मिथ्यातीमां ७ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बंध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ३०२ ॥ नवतत्व मांयथी अढी दीप मांहिला समगतीमां केतला तत्व पा

वे ॥ उत्तर ॥ अढी द्वीप माहिला समगती छदमस्थमा आठ तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २०३ ॥ नवतत्व मायथी अढीद्वीपमाहिला केवलीमा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अढी द्वीपमाहिला केवलीमा नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २०४ ॥ नवतत्व मांयथी सयदियामा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सयदियामा आठतत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २०५ ॥ नवतत्व मायथी अणदियामा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अणदियामा नवतत्व पावे तथा तीन पावे जीव सवर मोक्ष ए तीन तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २०६ ॥ नवतत्व मायथी अढी द्वीप वाहिरला जीवामे केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अढी द्वीप वाहिरला मनुष्यमे देवतामे त्रीजच एहमे मिथ्याती जीव आश्री ठ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव वध ए ठ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २०७ ॥ नवतत्व- मायथी अढी द्वीप वाहिरला समगतीमा केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अढी द्वीप वाहिला समगतिमा आठ तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २०८ ॥ नवतत्व मायथी ऊचालोकमे मिथ्याती जीव आश्री केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ ऊचालोकना मिथ्यातीमे ठ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य

पाप आश्रव बंध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २०९ ॥ नवतत्व मांयथी ऊंचालोकना समगति आश्री केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ ऊंचालोकना समगतिमे आठ तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २१० ॥ नवतत्व मांयथी ऊंचालोकमे सिद्धआश्री केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ ऊंचा लोकमे सिद्धपदमे तीनतत्व पावे जीव संबर मोक्षतत्व ए तीनतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २११ ॥ नवतत्व मांयथी ऊंचालोकना अवधिनांणीमे केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ ऊंचा लोकना अवधिनांणीमे आठ तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २१२ ॥ नवतत्व मांयथी त्रीछालोकना मिथ्यातीमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ त्रीछा लोकना मिथ्यातीमां ७ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बंध ए ७ तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥२१३॥ नवतत्व मांयथी त्रीछा लोकना समगती छदमस्थमां केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ त्रीछा लोकना समगती छदमस्थमां आठ तत्व पावे एक मोक्ष तत्व टली ॥ प्रश्न ॥ ॥२१४॥ नवतत्व मांयथी त्रीछा लोकना केवलीमां केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ त्रीछा लोकना केवलीमां नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २१५ ॥ नवतत्वमांयथी निचा लोकना मीथ्यातीमां कितना तत्व पावे

उत्तर ॥ नीचा लोकना मिथ्यातिमा ७ तत्व पावे जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव बंध ए ७ तत्वपावे ॥ प्रश्न २१६॥ नवतत्व मायथी नीचा लोकना सम गतीमा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ नीचा लोकना सम गतीमा आठ तत्व पावे एक मोक्ष तत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २१७ ॥ नवतत्व मायथी नीचालोक मे बिजे आश्री केवलीमे कीतना तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ नीचा लोकनी पुषलावती वीजे हजार जोजनरी उमी तीणमे केवलीछे तीणमे नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २१८ ॥ नवतत्व मायथी स कसाइमा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ स कसाइमा आठ तत्व पावे एक मोक्ष तत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २१९ ॥ नवतत्व मायथी अक साइ वीतरागमा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अकसाइ वीत रागमा नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २२० ॥ नवतत्व मायथी सजोगी छदमस्थमे कितना तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सजोगी छदमस्थमा आठ तत्व पावे एक मोक्ष तत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २२१ ॥ नवतत्व मायथी सजोगी केवली मा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सजोगी केवलीमा नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २२२ ॥ नवतत्व मायथी अजोगी केवलीमा केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अजोगी केवलीमा नवतत्व पावे ॥ प्रश्न॥ २२३ ॥

नवतत्व मांयथी सवेदीमां केटला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सवेदीमां आठ तत्व पावे एक मोक्ष तत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २२४ ॥ नवतत्व मांयथी अवेदी छदमस्थामां कितना तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अवेदी छदमस्थमां आठ तत्व पावे एक मोक्ष तत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २२५ ॥ नवतत्व मांय थी अवेदी केवलीमां कितना तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ अवेदी केवलीमां नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ॥ २२६ ॥ नवतत्व मांयथी सलेसी छदमस्थमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सलेशी छदमस्थमा आठ तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥२२७॥ नवतत्व मांयथी सलेसी अलेसी केवलीमां केतला तत्व पावे ॥ उत्तर ॥ सलेसी केवली अलेसी केवलीमां नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २२८ ॥ नवतत्व मांयथी स मदृष्टीमां केतला तत्वपावे ॥ उत्तर ॥ समदृष्टीमां नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ ॥ २२९ ॥ नवतत्व मांयथी सनांणीमां केतला तत्व पाइये ॥ उत्तर ॥ सनांणी कहतां च्यार नाणमां आठ तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली सनाणी कहतां पंचनांण आश्री नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २३० ॥ नवतत्व मांसथी अनांणीमां केतला तत्व पाइये ॥ उत्तर ॥ अनांणमां छ तत्व पाइये जीव अजीव पुन्य पाप आश्रव वंध ए छ

तत्व पावे ॥ प्रश्न ॥ २३१ ॥ नवतत्व मायथी साधु मुनिराजमा केतला तत्व पाइये ॥ उत्तर ॥ साधु छदमस्थ आश्री आठ तत्व पावे एक मोक्षतत्व टली साधु केवलीमा नवतत्व पावे ॥ प्रश्न ॥२३२॥ नवतत्व मायथी देसविरति श्रावकमा केतला तत्व पाइये ॥ उत्तर ॥ देसविरती श्रावकमा आठ तत्व पाइये एक मोक्षतत्व टली ॥ प्रश्न ॥ २३३ ॥ नवतत्व मायथी निजगुण तत्व केतला ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी निजगुण तत्व ४ छे जीव सवर मोक्ष ॥ प्रश्न ॥ २३४ ॥ नवतत्व मायथी परगुण तत्व केतला छे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी परगुण तत्व ५ छे अजीव पुन्य पाप आश्रव वध ए पाच तत्व परगुण छे ॥ प्रश्न ॥ २३५ ॥ नवतत्व मायथी जीवतत्व केतला ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी जीवतत्व ४ छे जीव सवर निर्जरा मोक्ष ए ४ जीवतत्व छे ॥ प्रश्न ॥ २३६ ॥ नवतत्व मायथी अजीव तत्व केतला ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी अजीव तत्व पाचछे अजीव पुन्य पाप आश्रव वध ए ५ तत्व अजीव छे ॥ प्रश्न २३७ ॥ नवतत्व मायथी जाणवा जोग केतला तत्व छे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मायथी जाणवा जोग तत्व तीन छे जीव अजीव पुण्य ए तीन तत्व जाणवा जोगछे ॥ प्रश्न ॥

॥ २३८ ॥ नवतत्व मांयथी छांम्ह वा जोग तत्व कितना ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी छांम्हवा जोग तत्व तीन पाप आश्रव बंध ए तीन तत्व छांम्हवा योग्य छे ॥ प्रश्न ॥ २३९ ॥ नवतत्व मांयथी आदरवा जोग तत्व कितना ॥ उत्तर ॥ नवतत्व मांयथी आदरवा जोग तत्व तीन संवर निर्जरा मोक्ष ए तीन तत्व आदरवा जोग ॥ प्रश्न ॥ २४० ॥ नवतत्व मांयथी लोकने देसथकी सर्व थकी कितना तत्व लाधे ॥ उत्तर ॥ जीव तत्व आखा लोकमे लाभे अजीव तत्व आखा लोकमां हीलाभे पुण्य तत्व पाप तत्व देस ऊणा लोक मांहे लाभे आश्रव तत्व बंध तत्व आखा लोकमे लाभे संवर तत्व निर्जरा तत्व त्रीछा लोकमांही लाभे मोक्ष तत्व अढी द्वीपमें लाभे जीवना पांचसें त्रेसठ भेद तेकिसा १४ नारकीना भेद ४८ त्रीजंचना भेद ३०३ मनुष्यना भेद १९८ देवतांना भेद एवं सर्व ५६३ छे तिण आश्री कहेछे ॥ प्रश्न ॥ २४१ ॥ सासता जिवना भेद कितना ॥ उत्तर ॥ सासताजीवना २५० ते किसा सात भेद नारकीना अप्रज्यासा ४३ भेद त्रीजंचना १०१ भेद मनुष्यना ९९ भेद देवताना अप्रज्यासा एवं २५० भेद सासताछे

प्रश्न ॥ २४२ ॥ असासता जीवना भेद कितना ॥ उत्तर ॥ असासता जीवना भेद ३१३ छे तेकि सा नारकीना प्रज्याता ५ सझी त्रीजच १०२ मनुष्य एए देवता एवं ३१३ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ॥ २४३ ॥ भरत क्षेत्रमाजीवना भेद कितना ॥ उत्तर ॥ भरत क्षेत्रमा जीवना भेद ५१ ते किसा अमतालीस त्रीजचना भेद ३ भेद मनुष्यना सझीनो अप्रज्या तो संज्ञीनो प्रज्यातो असझीनो अ प्रज्यातो एवं तीन भेद मनुष्यना ए ५१ भेद थया ए ५१ भेद जीवना भरत क्षेत्रमें पावे ॥ प्रश्न ॥ ॥२४४॥ महाविदेह क्षेत्रमे जीवना भेद कितना ॥ उत्तर ॥ महाविदेह क्षेत्रमा जीवना ५७ भेद लाभे ते किसा ४८ त्रीजचना ए भेद मनुष्यना एवं ५५ भेदथया ॥ प्रश्न ॥ २४५ ॥ जंबुद्वीपमा जीवना भेद कितना ॥ उत्तर ॥ जंबूद्वीपमे जीवना भेद ५५ लाभे ते किसा ४८ त्रिजचना भेद मनुष्यना २७ भेद एवं ७५ भेदथया ॥ प्रश्न ॥ २४६ ॥ लवणसमुद्रमा जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ लवणसमुद्रमा जीवना भेद २१६ तेकिसा ६८ त्रीजच १६८ मनुष्यना भेद एवं २१६ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २४७ ॥ धातकी खंडमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ धातकी

खंडमे जीवना १०२ भेद लाधे तेकिसा ४८ त्रिजंचना ५४ भेद मनुष्यना एवं १०२ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २४८ ॥ कालोदधी समुद्रमां जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ कालोदधी समुद्रमां ४८ त्रीजंचना भेद लाधे ॥ प्रश्न ॥ २४९ ॥ अर्द्ध पुखलाध क्षेत्रमां जीवना भेद १०२ लाधे ते किसा ४८ त्रीजंचना भेद ५४ भेद मनुष्यना एवं १०२ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २५० ॥ त्रीग लोकमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ त्रीग लोकमे जीवना ४२३ भेद लाधे ते किसा ४८ त्रीजंचना भेद ३०३ भेद मनुष्यना ७२ भेद देवताना एवं ४२३ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २५१ ॥ ऊंचा लोकमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ ऊंचा लोकमे जीवना १२२ भेद ते किसा४६ त्रीजंचना भेद ७६ भेद देवताना एवं १२२ भेद थया ॥ प्रश्न २५२ ॥ नीचालोकमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ नीचालोकमे जीवना ११५ भेद लाधे ते किसा १४ नारकीना भेद ४८ त्रीजंचना ३ भेद मनुष्वना ५० भेद देवताना एवं ११५ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २५३ ॥ अमर जीवना कितना भेद ॥ उत्तर ॥ अमरजीवना १९७ भेद ते किसा ७ नारकीना अप्रज्याप्ताना ७ भेद८६

भेद मनुष्यना जुगल्याना असज्जाता देवताना असज्याताना एए भेद एव १एर भेदथया ॥ प्रश्न २५४ ॥ मरे जीवना कितना भेद ॥ उत्तर ॥ मरेजीवना ३७१ भेद ते किसा ७ नारकीना प्रज्याताना ७ भेद ४ए तीजचना भेद ११७ भेद मनुष्यना एए देवताना प्रज्याताना एए भेद एव ३७१ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २५५ ॥ अढाइ द्वीपमे जीवना कितना भेदलाधे ॥ उत्तर । अढाइ द्वीपमे ३५१ भेद जीवना लाधे ते किसा ४ए त्रिजचना भेद ३०३ मनुष्यना भेद एव ३५१ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २५६ ॥ आढाई द्वीप वाहिर जीवना कितना भेद लाधे ॥ उत्तर ॥ अढाइ द्वीप वाहिर ४६ त्रीजचना भेद लाधे वादर तेउकायनो प्रजातो असज्यातो टलीये ॥ प्रश्न ॥ २५७ ॥ एक जीव जघन्य भेद जीवना फर्से तो कितना फर्से ॥ उत्तर ॥ एक जीव जघन्य भेद फर्से तो ५५३ भेद जीवना फर्से ५६३ माहसूं १० टल्या ते किसा पच अणुतर विमाणना असज्याता प्रज्याता एव १० टल्या ॥ प्रश्न ॥ २५ए ॥ एक जीव मध्यमभेद जीवना फर्से तो कितना भेद फर्से ॥ उत्तर ॥ एक जीव मध्यम भेद जीवना फेरसे तो ५५५ फर्सेते कीसा १४ भेद नारकीना ४ए

भेद त्रीजंचना ३०३ भेद मनुष्यना १९० देवताना एवं ५५५ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २५९ एक जीव उत्कृष्टा जीवना भेद फर्से तो कीतना ॥ उत्तर ॥ एक जीव उत्कृष्टा जीवना भेद फर्से तो ५५७ भेद तेकिसा १४ नारकीना भेद ४८ त्रीजंचना भेद ३०३ मनुष्यना भेद १९१ भेद देवताना एवं ५५७ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २६० ॥ दोय दृष्टिमे जीवना कितना भेद पाइये ॥ उत्तर ॥ दोय दृष्टिमे जीवना १६७ भेद लाधै ते किसा ६ भेद नारकीना १३ भेद त्रीजंचना ४५ भेद मनुष्यना १०३ भेद देवताना एवं १६७ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २६१ ॥ तीनदृष्टिमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ तीन दृष्टिमे जीवना भेद ११२ पावे ते किसा ७ भेद नारकीना ५ भेद त्रिजंचना १५ भेद मनुष्यना ८५ भेद देवताना एवं ११२ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २६२ ॥ दोय वेदमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ दोय वेदका धणीमे जीवना ३०० भेद पावे ते किसा १७२ भेद मनुष्यना १२८ भेद देवताना एवं ३०० भेद थया ॥ प्रश्न ॥२६३॥ तीनवेदमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ तीनवेदका धणीमे जीवना ४० भेद पावे ते किसा १० भेद त्रिजंचना ३० भेद मनुष्य

ना एव ४० भेद पावे ॥ प्रश्न ॥ २६४ ॥ मेरू पर्वत माथे सासता जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर मेरू पर्वत माथे जीवना भेद ४० त्रिजचना पावे ॥ प्रश्न ॥ २६५ ॥ वारे देवलोकमे जीवना कितना भेदपावे ॥ उत्तर ॥ वारे देवलोकमे जीवना ६० भेद लाधे ते किसा २० भेद त्रिजचना ४० भेद देवताना एव ६० भेद थया कोइक आचार्ज महाराज ६४ भेद पिण जीवना मानेछे ॥ प्रश्न ॥ २६६ ॥ नवग्रै वेगमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ नवग्री वेगमे जीवना ३२ भेद पावे ते किसा १४ भेद त्रिजचना १८ भेद देवताना एव ३२ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २६७ ॥ पच अणुत्तर विमाणमे जीवना कितना भेद लावे ॥ उत्तर ॥ पच अणु त्तर विमाणमे जीवना २४ भेद लाधे ते किसा १४ भेद त्रिजचना १० भेद देवताना एव २४ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २६८ ॥ ऊचालोक मे जीवना कितना भेद लाधे ॥ उत्तर ॥ ऊचालोक मे जीवना १२२ भेद लावे ते किसा ४६ भेद त्रीजचना ७६ भेद देवताना एव १२२ भेद जिण जिण ठिकाणे पावे ते कहेछे एह बोल पेहली धारसी तो आगला बोलमे समज तुरत पडसी ॥ प्रश्न ॥ २६९ ॥

सासता जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ सासता जीवना ७९ भेदछे ते किसां ४१ भेद त्रीजं चना ३८ भेद देवताना एवं ७९ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २७० ॥ असासता जीवना कितना भेद ॥ उत्तर ॥ असासता जीवना ४३ भेदछे ते किसा ५ भेद त्रिजंचना ३८ भेद देवताना एवं ४३ भेद थया ॥ प्रश्न २७१ ॥ गर्भे जमें जीवना कितना भेद ॥ उत्तर ॥ गर्भे जमे जीवना १० भेद ते किसा १० त्रिजंचना ॥ प्रश्न ॥ २७२ ॥ गरभजमे जीवना कितना भेद ॥ उत्तर ॥ गरभजमां जीवना ११२ भेद ते किसा ३६ भेद त्रिजंचना ७६ भेद देवताना एवं ११२ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ॥ २७३ ॥ अमर जीवना कितना भेद ॥ उत्तर ॥ अमरजीवना ३८ भेद ते किसा ३८ भेद देवताना ॥ प्रश्न ॥ २७४ ॥ मरे जीवना कितना भेद ॥ उत्तर ॥ मरे जीवना ८४ ते किसां ४६ भेद त्रिजंचना ३८ भेद देवताना एवं ८४ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २७५ ॥ संजोगीमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ संजोगीमे जीवना ११२ भेद पावे ते किसा ४६ भेद त्रिजंचना ७६ भेद देवताना एवं ११२ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २७६ ॥ सतमनजोग असंत्तमन जोग मिश्र मन जोग व्यवहार

मन जोग सतभाषा असतभाषा मिश्र भाषा ए ७ जोगमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ ७ जोगमे जीवना ४३ भेद पावे ते कीसा ५ भेद सन्नी त्रीजचना ३८ भेद देवताना एव ४३ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २७७ ॥ व्यवहार भाषा वचन जोग ए दोय जोगमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ ए दोय जोगमे जीवना ५१ भेद पावे ते किसा १३ भेद त्रिजचना ३८ भेद देव ताना एव ५१ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २७८ ॥ उदारिक जोग मे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ उदारिक जोगमे जीवना ४६ भेद पावे ४६ भेद त्रिजचना ॥ प्रश्न ॥ २७९ ॥ उदारीकना मिश्र मे जीवना भेद कितना ॥ उत्तर ॥ उदारीकना मिश्रमे जीवना २९ भेद पावे ते किसा २९ भेद त्रिजचना ॥ प्रश्न ॥ २८० ॥ वैक्रेजोगमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ वेक्रे जोगमे जीवना ८२ भेद पावे ते किसा ६ भेद त्रिजचना ७६ भेद देवताना एव ८२ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २८१ ॥ वेक्रे मिश्रमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ वेक्रे मिश्रमे जीवना ६८ भेद पावे ते किसा ६ भेद त्रिजचना ६२ भेद देवताना एव ६८ भेद थया ॥ प्रश्न ॥

२८२ ॥ उत्तर ॥ वेक्रेमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ उत्तर ॥ वेक्रेमे जीवना ३० भेद पावे ते किसा ६ भेद त्रिजंचना २४ भेद देवताना एवं ३० भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ॥२८३॥ कार्मण जोगमे जीवना कितना भेद पावे ॥उत्तर॥ कार्मण जोगमे जीवना६१ भेद पावे ते किसा २३ भेद त्रिजंचना ३८ भेद देवताना एवं ६१ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २८४ ॥ नीचा लोकमे जीवना ११५ भेद पावे ते किसा ॥उत्तर॥१४ नारकीना भेद ४८ भेद त्रिजंचना ३ भेद मनुष्यना ५० भेद देवताना १५परमाधामी१०भवनपती एवं२५ ना अप्रज्यात्ताए२५ ना प्रज्यात्ता एवं५०भेद देवताना एवं११५ भेद थया एवं ११५ भेद जिण २ ठिकाणे पावे ते कहे छे एह बोल पहली धारसी तो आगला बोलामे तुर्त समज पडसी ॥ प्रश्न ॥ २८५ ॥ सासता जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ सासता जीवना ७६ भेद ते किसा ७ नारकीना अप्रज्याप्ताना ७ भेद ४३ भेद त्रीजंचना ५ भेद टल्या १ भेद मनुष्यनो २५ भेद देवताना अप्रज्यात्ताना एवं ७६ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ २८६ ॥ असासता जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ असासता जीवना ३९ भेद ते किसा ७ भेद नारकी

ना ५ सन्नी त्रिर्जचना ५ न्नेद २ मनुष्यना न्नेद २५ न्नेद देवताना एव ३९ न्नेद थया ॥ प्रश्न ॥ २८७ ॥ अमर जीवना न्नेद कितना ॥ उत्तर ॥ अमर जीवना ३२ न्नेदछे ते किसा ७ न्नेद नारकीना अप्रज्ञाता २५ न्नेद देवताना अप्रज्ञाता एवं ३२ न्नेद थया ॥ प्रश्न ॥ २८८ ॥ मरे जीवना कितना न्नेद ॥ उत्तर ॥ मरे जीवना ८३ न्नेद ते किसा ७ न्नेद नारकीना प्रज्ञाता ४८ न्नेद त्रिर्जचना ३ न्नेद मनुष्यना २५ न्नेद देवताना प्रज्ञाता एव ८३ न्नेद थया ॥ प्रश्न ॥ २८९ ॥ गरन्नजमे जीवना कितना न्नेद पावे ॥ उत्तर ॥ गरन्नजमे जीवना १२ न्नेदते किसा १० न्नेद त्रिजचना २ न्नेद मनुष्यना एव १२ न्नेद थया ॥ प्रश्न ॥ २९० ॥ नोगरन्नजमे जीवना कितना न्नेद ॥ उत्तर ॥ नोगरन्न जमे जीवना १०३ न्नेद ते किसा १४ न्नेद नारकीना ३८ न्नेद त्रिजचना १ न्नेद मनुष्यनो ५० न्नेद देवताना एव १०३ न्नेद थया ॥ प्रश्न ॥ २९१ ॥ सनाणी मतनाणी श्रुतनाणी एतीनमे जीवना कितना न्नेद पावे ॥ उत्तर ॥ एतीन नांणमे जीवना ५३ न्नेद पावे ते किसा १३ न्नेद नारकीना १८ न्नेद त्रिजंचना २ मनुष्यना २० न्नेद देताना एव ५३ न्नेद थया ॥

प्रश्न ॥ १९२ ॥ अवधनांणीमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ अवधनांणीमे जीवना ३९ भेद पावे ते किसा ७ भेद नारकीना ५ भेद त्रिजंचना १ भेद मनुष्यना २५ भेद देवताना एवं ३९ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ १९३ ॥ मनप्रजवनांणीमे केवल नांणीमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ ए दोय नांणीमे जीवनो १ भेद मनुष्यनो पावे ॥ प्रश्न ॥ १९४ ॥ सवेदीमेजीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ सवेदीमे जीवना ११५ भेद पावे ते किसा १४ भेद नारकीना ४८ भेद त्रिजंचना ३ भेद मनुष्यना ५० भेद देवताना एवं ११५ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ १९५ ॥ अस्त्री बेद पुरूषबेदमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ ए दोयबेदमां जीवना ६२ भेद पावे ते किसा १० भेद त्रिजंचना २ भेद मनुष्यना ५० भेद देवताना एवं ६२ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ १९६ ॥ नपुंसक बेदमां जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ नपुंसक बेदमां जीवना ६५ भेद पावे ते किसा १४ भेद नारकीना ४८ भेद त्रिजंचना ३ भेद मनुष्यना एवं ६५ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ १९७ ॥ एकला नपुंसक बेदमां जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ एकलां नपुंसगवेदमां जीवना ५३ भेद पावेते

किसा १४ भेद नारकीना ३८ भेद त्रिजचना १ भेद मनुष्यनो एव ५३ भेद थया ॥ प्रश्न ॥
२९८ ॥ सलेसीमा जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ सलेसीमा जीवना ११५ भेद पावे ते कि
सा १४ भेद नारकीना ४८ भेद त्रिजंचना ३ भेद मनुष्यना ५० भेद देवताना एव ११५ भेद थया
॥ प्रश्न ॥२९९॥ कृष्णलेस्यामानीललेस्यामा कापूत लेस्यामां जीवना कितना भेद पावे ॥उत्तर॥ एतीन
लेस्यामा जीवना १०७ भेद पावे ते किसा ६ भेद नारकीना ४८ भेद त्रिजचना३भेद मनुष्यना
५० भेद देवताना एव १०७ भेद थया ॥ प्रश्न ३०० ॥ ते जुलेस्यामा जीवना कितना भेद पावे ॥
उत्तर ॥ तेजूलेस्यामा जीवना ६५ भेद पावे ते किसा १३ भेद त्रिजचना २ भेद मनुष्यना ५०
भेद देवताना एव ६५ भेद थया ॥ प्रश्न ३०१ ॥ पद्मलेस्यामां सुक्ललेस्यामा जीवना कितना भेद
पावे ॥ उत्तर ॥ ए दोय लेस्यामा जीवना १२ भेद पावे ते किसा १० भेद त्रिजंचना २ भेद मनु
ष्यना एव १२ भेद थया ॥प्रश्न३०२॥ त्रीजा लोकमे जीवना ४२३ भेद पावे ते किसा ॥उत्तर॥४८॥
भेद त्रिजचना ३०३ भेद मनुष्यना ७२ भेद देवताना एव ४२३ भेद थया ए ४२३ जिसे जिसे

ठिकांणे पावे ते कहेछे एह बोलनी पेहली धारणा कीयासुं पीछे आगला वोलांमे समज तुर्त पम
सी ॥ प्रश्न ३०३॥ सासता जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ सासता जीवना १८० भेद ते किसा
४३ भेद त्रिजंचना १०१ भेद मनुष्यना ३६ भेद देवताना एवं १८० भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ३०४ ॥
असास्वता जीवना कितना भेद ॥ उत्तर ॥ असास्वता जीवना २४३ भेद ते किसा पांच भेद त्रिजंचना
२०२ भेद मनुष्यना ३६ भेद देवताना एवं २४३ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ३०५ ॥ अमर जीवना कितना
भेद ॥ उत्तर ॥ अमर जीवना १२२ भेद ते किसा ८६ भेद मनुष्यना ३६ भेद देवताना एवं १२२
भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ३०६ ॥ मरे जीवना कितना भेद ॥ उत्तर ॥ मरे जीवना ३०१ भेद ते किसा
४८ भेद त्रिजंचना २१७ भेद मनुष्यना ३६ भेद देवताना एवं ३०१ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ३०७ ॥
सास्वादान समगतमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ सास्वादांन समगत मे जीवना १२० भेद
पावे ते किसा १८ भेद त्रिजंचना ३० भेद मनुष्यना ७२ भेद देवताना एवं १२० भेद थया ॥प्रश्न॥
॥ ३०८ ॥ उपसम समगतमे जीवना कितना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ उपसम समगतमे जीवना

११२ भेद पावे ते किसा १० भेद त्रिजचना ३० भेद मनुष्यना ७२ भेद देवताना एवं
११२ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ३०९ ॥ क्षयोपसम समगतमे जीवना कितना भेद पावे
उत्तर ॥ क्षयोपसम समगतमे जीवना १७२ भेद पावे ते किसा १० भेद त्रिजचना ९० भेद मनुष्य
ना ७२ देवताना भेद एवं १७२ भेद थया ॥प्रश्न॥ ३१० ॥ वेदक समगतमे जीवना कितना भेद
पावे ॥ उत्तर ॥ वेदक समगतमे जीवना ५६ भेद पावे ते किसा ५ भेद त्रिजचना १५ भेद मनुष्य
ना ३६ भेद देवताना एवं ५६ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ३११ ॥ क्षायक समगतमा जीवना कितना भे
द पावे ॥ उत्तर ॥ क्षायक समगतमा जीवना १६४ भेद पावे ते किसा२ भेद त्रिजचना ९० भेद
मनुष्यना ७२ भेद देवताना एवं १६४ भेद थया ॥ प्रश्न ॥ ३१२ ॥ समगत कितना प्रकारनीछे ॥
उत्तर ॥ समगत ९ प्रकारनीछे तेहना नाम १ द्रव्य समगत २ भाव समगत ३ व्यवहार समगत ४
निश्चे समगत ५ निसरग समगत ६ उपदेश समगत ७ रुचक समगत ८ कारक समगत ९ दीपक
समगत एए प्रकारे करी समगतनो स्वरूप जाणवो ॥ प्रश्न ॥३१३॥ द्रव्यसमगत केहने कहिये ॥उत्तर॥

तिर्थंकरना वचन ऊपर प्रतीत राखे पिण परमार्थन जांणे नवतत्व षटद्रव्यना ४ निषेपाना एहना भेदांन भेदन जांणे देव अरिहंत साधु मुनिराय धर्म्म केवली भाषित तीननी सर्दहणा जेहने होय तेहने द्रव्य समगत कहिये ॥ प्रश्न ॥ ३१४ ॥ भाव समगत किणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ तीर्थ करना वचन ऊपर प्रतीत राखे तीन तत्वनी सर्दहणा जेहने होय नवतत्वनो प्रमार्थ ओलषे जीव अजीव पून ए तीन जांणवा जोग जांणे पाप आश्रव बंध ए तीन छांडवा जोग जांणे संवर निर्जरा मोक्ष ए तीन आदर्वा जोग जांणे षट् द्रव्यनो जांणपणो करे रूपीनो जांण पणो करे इति वातनो जांणपणो होय तेहने भाव समगति कहिये ॥ प्रश्न ॥ ३१५ ॥ व्यवहार समगत किणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ सिम्सठ बोल मांहेला ६१ बोलना गुणेकरी सहित उपसम समगत क्षयोपसम समगती जे जीव होय तेहने व्यवहार समगत कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३१६ ॥ निश्चे समगत किणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ वेदक समगत षायक समगतीजे जीव होय समगत आयांपीछे जावे नहीं येहने नीश्चे समगत कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३१७ ॥ नीसरग समगत केहने कहिजे ॥ उत्तर ॥ नीसरग समगत ते पोताना

पयजपसमे आपणीबुधे करी सर्ववसतुनो प्रमाणकरे साचोकरीसरदहे जाती समर्णग्यानकरी जाणे ते हने नीसरग समगतकहिजे ॥ प्रश्न ॥ ३१८ ॥ उपदेस समगत कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ नवतत्व नो स्वरूप देव अरिहंत गुरु नियथ धर्म केवलीभापीत एतीन तत्वना स्वरुप षटद्रव्यनो स्वरुप इ त्यादीक आगमनो स्वरुप गुरुउपदेसथी जाणे तेहने उपदेस समगत कहिजे ॥ प्रश्न ॥ ३१९ ॥ रुचक समगत कीणने कहिजे ॥ उत्तर ॥ श्री वीतरागदेवनी आग्याने रुचीसहिततहत करीसरदहे लोकीक धर्म जाणे लोकोत्तर बारज कारणरुप धर्मजाणे लोकोत्तर अत्रकारणरुप धर्मजाणे सीद्धनो स्व रुपजाणे नीगोदनोस्वरुप जाणे एतले श्री वीतरागनीवांणीसुं सर्ववसतुनो स्वरुप जाणे वीतरागनी आ ग्यामे रुचीवणीउपजे पीण उदेभावकरी ससारनी अवस्थामा पीतो थकोनीकलीसकेनही तेभणी अ नेकप्रकारें भरणाकरे वीषेकपायना फल वीषसमानजांणे धर्मसाधवानीरुचीघणीकरे पीण उपायथकी छु ट सके नही तेजीव ४ थे गुणठांणेछे तेरुचक समगत जाणवी ॥ प्रश्न ॥ ३२० ॥ कारक समगत कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जेआगले रुचक समगतमे भावकह्या तेसर्व जाणीने आदरे ससारना स

र्ब कांमांगंमी ने छठेसातमे गुणठांणेमे प्रवर्त्ते तेहने कारकसमगत कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३२१ ॥ दीपक समगत कीणनेकहीजे ॥ उत्तर ॥ दीपककहतां दीवासे आगले उद्योतहुवे पाछले जोतां दीवाने अंधारुं रहे एदृष्टांत मीथ्याती अथवा अभवी ओराने उपदेसदेनेतारे पीण आपतीरे नहीं तीणने दीपक समगत कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३२२ ॥ समगतनी रुची केतली ॥ उत्तर ॥ समगतनी १० रुची तेहना नांम केहेछे १ नीसरगरुची २ उपदेस रुची ३ अग्यारुची ४ सुत्ररुची ५ श्रद्धारुची ६ संपेपरुची ७ अभीगंमरुची ८ बीस्ताररुची ९ कीयारूची १० धर्मरूची १० रुचीनुंजेजीवने ग्यांनहुयो हुवे तेहजीवने षायकसमगती कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ६२३॥ नीसरगरुचीकीणनेकहीजे ॥ उत्तर ॥ आश्रवरुप कामावर्जे संवरनिर्जरारुप कांमाप्रवरते जाती समर्ण ग्यांनादीकसुं जांणे तेहने नीसरगरुची कहिजे ॥ प्रश्न ३२४ ॥ उपदेसरुची कीणने कहिजै ॥ उत्तर ॥ गुरुना उपदेसथी जांणीनेसरदे परतीतराखे तेहने उपदेसरुची कहिये ॥ प्रश्न ॥ ३२५ ॥ अग्यारूची कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जेप्राणीराग देषमोहषयगया अग्यांन मीटगयोछे अरी हंत देवनी अग्याप्रमांण करे तेहने अग्यारूची कहीजे ॥ प्र

श्न ३२६ ॥ सुत्ररूची कीणने कहिजे ॥ उत्तर ॥ केवलीनावीत सुत्र १० ॥ पूर्ववारीका वचन ११ पुर्व
जाव १४ पुर्व धारीकाजणीयारो सुत्र तीणउत्तररूचीऊवे सुणवानो पढवानो उद्यम करे तीणने सुत्ररु
चीकहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३२७ ॥ श्रद्या रुची कीणनेकहीजे ॥ उत्तर ॥ वीतराग देवना वचनउपरे आस
तारापे मीथ्यात्वने मोसरावे तीणने श्रद्धारुची कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३२८ ॥ अनीगमरूची कीणनेकहीजे
॥ उत्तर ॥ सीद्धातअर्थ सहीत जाणे सुणवानी नणवानी चाहनाघणी राखे सिद्धात पढवानो उद्यमकरेत
णिने अनीगमरुची कहिजे ॥ प्रश्न॥ ३२९ ॥ वीस्ताररुची कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ द्रव्यना सगला
नाव सर्वप्रमाणे करी सर्वनये वीधीनो जाण नवतत्वनो जाण ऊवे तेहने वीस्ताररूचि कहिजे ॥प्रश्न॥३३०
क्रियारूचि किणने कहिजे॥उत्तर॥ ते ज्ञान दरशण चारीत्रवीनय साचवे सुमत५गुपत३ एहने आराधे तेह
ने क्रीया रुचि कहिजे ॥ प्रश्न ॥ ३३१ ॥ सखेपरूचि कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ ३६३ मतनी सगते
ठोमे जीन धर्मने समान रीत सु ओलखे तीणने सखेप रुचि कहीजे ॥ प्रश्न ॥३३२॥ धर्म रुचि किण
ने कहीजे ॥ उत्तर ॥ ७ द्रव्यनो जाणपणो करे सुद्ध चारीत्र धर्म सर्दहे जिन नाषित धर्म क्रीया करे

तीणने धर्म रुचि कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३३३ ॥ वादरनि गोद कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ वादरनिगोद इ णने कहीजे मुला आदु लीली हलद जावत् जमीकंद प्रमुख उवे तिणने वादरनि गोद कहीजे ॥प्रश्न॥ ॥ ३३४ ॥ वादरनिगोद सुइने अग्रभागमे आवें उणनि गोदमे कितना जीव हे ॥ उत्तर ॥ १ संज्ञी म नुष्य संख्येताछे २ तेथी असंनी मनुष्य असंख्याताछे ३ तेथी नारकी असंख्यात गुणा ४ तेथी देषता अ संख्यात गुणा ५ तेथी त्रिजंच पंचेंद्री असंख्यात गुणा ६ तेथी वेंद्री असंख्यात गुणा ७ तेथी तेंद्री अ संख्यात गुणा ८ तेथी चोंद्री असंख्यात गुणा ९ तेथी प्रथवी काय असंख्यात गुणा १० तेथी अप काय असंख्यात गुणा ११ तेथी तेउकाय असंख्यात गुणा १२ तेथी वाउकाय असंख्यात गुणा १३ तेथी प्रतेक वनस्पती काय असंख्यात गुणा १४ तेथी एसबे १३ वोलना जीव भेला करिये थका सि द्धना जीव अनंताछे अनेसीद्धना जीवकरता वादरनीगोदना जीव अनंत गुणाछे ते सुइना अग्रभाग जितनो कंद होय तेमांपण सर्व सिद्धना जीव थकी अनंतगुणा अधिकाछे ॥ प्रश्न॥ ३३५ ॥ लोका का सना प्रदेश कितनाछे ॥उत्तर॥ एक तंदूल रूप सेणी प्रमांणे खेत्रमांयथी समय समयमां एक एक आका

स प्रदेसस्तु भखोछे ॥ प्रश्न ॥ ३३६ ॥ सुक्ष्मनिगोदेना गोलाकीतनाछे ॥ उत्तर ॥ जितना लोकोकास
ना प्रदेसछे इतना निगोदना गोला लोकमा जाणवा ॥ प्रश्न ॥ ३३७ ॥ एक एक गोलामा निगोद
कीतनीछे ॥ उत्तर ॥ एक एक गोलामा निगोद असंख्यातीछे ॥ प्रश्न ॥ ३३८ ॥ निगोदीयाजीव एक
मुहुर्तमा केतलाभवकरे ॥ उत्तर ॥ निगोदीयाजीव एक मुहुर्तमा ६५५ ३६ भवकरे ॥ प्रश्न ॥ ३३९ ॥
निगोदीया जीव एकसासो उसासमा केतलाभवकरे ॥ उत्तर ॥ सनीपचेंद्री मनुष्यना एकसासो उसा
समा १७ भव जाझेरा करेछे ॥ प्रश्न ॥ ३४० ॥ निगोदीयाजीवनो एक भव कितनी आवलिकानोछे
॥ उत्तर ॥ निगोदीयाजीवनो एक भव २५६ आवल कानोछे ॥ प्रश्न ॥ ३४१ ॥ निगोदीया जीवना
कितना भेदछे ॥ उत्तर ॥ निगोदना दोभेदछे एकतो व्यवार रासी दुजो अव्यवाररासीछे ॥ प्रश्न ॥ ३४२ ॥
निगोदीया जीव भवाररासी कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ निगोद ह्लासु जीव नीकलीने बादर एकेंद्रीपणे
उपजे अथवा त्रसपणे उपजीने पाछो निगोदमे जायने उपजे तीणने भवार रासी निगोद कहीजे ॥
प्रश्न ॥ ३४३ ॥ निगोदिया जीव अभवार रासी कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ निगोदना जीवकोइका

लेपिण निगोदथी नीकलीने बादर एकें द्रीपणो अथवा त्रसपणो यांम्यानथी निगो दीयाजीव निगो दरा निगोदपणे उपजेछे तीण निगोदने अव्यवार रासी कहिजे ॥ प्रश्न ॥३४४॥ जीव जीतना कर्म्म षपावी एकसमामां मोक्ष जावे इतना जीवनो वीरोपम्हे लोकमां ॥उत्तर॥ जीव जीतना कर्मषपापी मोक्ष जावे इतना जीवनो लारे विरो नथी यम्हतो इणकारण जितना जीव कर्मषपावी एक समामांमोक्ष जायछे इतना जीव ते समयमां अव्यवाररासी सुषम निगोद मांथीनीकलीने उंचाआवे जितना१०जीवमोक्ष जावेतो १०जीव अव्यवार रासीमांथी नीकलीने व्यवारासीमां आवे तिहांकोइ समये ते जीवमां भवजीव उंचानीक ले तो एक बेअभव जीव पीणनी कले पीणव्यवाररासी जीवमां वध घटस्थायेनहीं व्यवाररासीमां जीव जीतना हुवे इतनाइरहेछे इणकारण लोकमां वीरेहो जीवनो पम्हतो नथी.एह प्रश्नव्यवहार रासी उपरेछे स प्रदेस काढतां असंख्याती सर्पणी उतसर्पणी वीतजावे ते.इत्रो षेत्रेखाली हुवेनहीं१४ राजलोक आका सएहवा निगोदना असंख्याता लोकमांहिला गोल.ते छदिस आव्या पुदगल आहारादिपणे लेवेछे ते सक ल गोला केहवायें अनें जे लोकने अंतप्रदेसें जे निगोदे रह्याछे ते त्रिण दिसिनो आहार फरसनाये लेवेछे

तिविकल गोलाछे ए सूक्ष्म निगोदमें एक साधारण वनस्पतिना सुक्ष्म जीवछे च्यार पृथ्वी प्रमुख सूक्ष्मते लोक व्यापीछे पिण प्रत्येक छे साधारणपणो वनस्पति कायमेंछे पिण सर्व लोकमे व्यापि रह्याछे काजल नी कुपलीनीपरे भरयाछे अने साधारणपणो वनस्पतीमेंछे च्यार थावरमेनथी ए सूक्ष्म निगोदमे अनंत दुखछे तिहा दृष्टांत कहेछे सातमी नरकनो आउखो तेत्रीस सागरोपमनोछे ते ३० सागरोपममे जेतला समयछे तेतली वार सातमी नरकमेंछे ३० सागरोपमनोछे आऐख १ जीवउपजे ते असख्याता भवमे छे दस भेदननो दुखथाये ते सर्व भेलोकीजे तेहथी अनतगुणो दुखनिगोदीया जीव १ समयमे भोगवेछे वली दृष्टांत कहेछे जे मनुष्यने साढात्रिणक्रोड़ रोमरायछे ते कोई देवता साढातीन कोड़ सूइ लोहनी तपा वीने समकाले घोचे समकालेज भोये आवे तेहेने जे वेदना थाये तेहथी अनतगुणी वेदना निगोदमेंछे तिणरे भव्यजीवनु निगोदनो कारण अग्यानछे तेहनो त्याग करो ए निगोदनो अधिकार कह्यो ॥ प्रश्न ॥ ३४५ ॥ एक जीवहत्या करतानथी पीण हत्यानाफल भोगवेछे ते जीव कीसा ॥ उत्तर ॥ संयंभू रम ण समुद्रमा एक हजार जोजनना सरीरवाला मोटा मछछे तेहनी आंखना भोपणमां तंदुल नामे मछ

गरभ्नज परज्याप्तो उपजेछे तेहनो आउषो १ अंतर मुहूर्त्तनोछे उतना आउषामां एहवो चीतवन करेछे एवमा मछना मुखमां कोमां गमे जीव आवेने जावेछे मे इतनो वमो सरीर पांमतो तो एक जीवने जीवतो जावण देतो नहीं एहवी चीतवणा तंदुल मछ करेछे तीणसुं आउषो ३३ सागरनो बांधी सा तमी नरक जांवे ए तंदुल मछ हंस्या भ्नवार नयने मते करतो नथी असुभ्न प्रणांम रूप पाप बांधे ॥ प्रश्न ॥ ३४६ ॥ एक जीवहंस्या करेछे अने हंस्याना फल भ्नोगवतां नथी ते जीव कीसा ॥ उत्तर ॥ एक जीव समकती श्री वीतरागनी अग्या प्रमाणे. जेणे परतीतां करीछे पीण भ्नोगावली कर्मने उदे अरूची पणे विषयादीक कांम सेवेछे हंस्याना कांमां करेछे आरंभ्नना कांमनो आदेस उपदेस देवेछे समकीत भ्नाव वरततां जे पोतानां पुरव कृत करमछे तेहने निर्जरा हुवे पिण तेहने असूभ्न रूप नवा कर्मनो बंध पमतो नथी. ॥ प्रश्न ॥ ३४७ ॥ एक जीव हंस्या करेछे अने हंस्याना फल भ्नोगवेछे ते जिव किसा ॥ उत्तर॥ मीथ्यात्वी जीव हरख२ हंस्या करेछे उहो जीव हंस्याना फल भ्नोगवेछे ॥ प्रश्न॥ ३४८ ॥ एक जीव हंस्या करता नथी अने हंस्याना फल भ्नोगवता नथी ते जीव कीसा ॥ उत्तर ॥

साधु मुनीराज कोई जीवने हणता नथी डुरगतीना डुख भोगवता नथी ॥ प्रश्न ॥ ३४९ ॥ १८ लाख २४ हजार १ से २० वार मीछामी दूकम देवेते कीण रीतसुं ॥ उत्तर ॥-जीवना ५६३- भेदछे ते हने दसगुणा करणा अभीहयासु लेकर जीवीया विवरूवीया ए १० वोले करी ५६३ ने दसगुणा करे तीवारे ५ हजार ६ से ३० हुवे एहमा केतला एक रागकरी हएया केतला एक धेख करी हएया ए ५६३० राग धेषसु दूणा करता ११ हजार २ से ६० थाय एहने मन-वचन-कायाये तीगुणा करता ३३ हजार ७ से ८० थया वली एहने करण करावण अनुमोदनसे पाप लागु होय तीगुणा करता १ लाख १ हजार ३०० से४० थाय एहने गये काल व्रतमान काल आगम्ये काल जे पाप लागो होय तीणसु तीगुणा करता ३ लाख ४ हजार वीस हुवा एहने ६ गुणा करणा १ अरिहत केवली भगवाननी साखे२ सीद्ध भगवानरी साखे ३ साधुनी साखे ४ देवनीसाखे ५ गुरुनी साखे ६ पोतानी आत्मानी साखे एरोते ७ नीसाखे मीछामी डुकम देता थका७ गुणा करता थका१८ लाख २४ हजार १ सोने २० थाय ॥ प्रश्न ॥ ३५० ॥ एक एक तीरथ करना नाम १५१ वोल

कीम उतारणा ॥ उत्तर ॥ २४ तीर्थंकर देवना १ नाम २ एक एक तीरथं करना पुरबजव कीतना ३ द्विपनाम ४ खेत्रनाम ५ विजेनाम ६ पूरव जवनाम ७ पदवीनाम ८ पुरवजव गुरुनाम ९ पुरब जवग्यांन कीतनो जएया १० कितना स्थान सेवी तीर्थंकरगोत्र उपारज्यो ११ स्वर्गगमण १२ आउषो कीतनो १३ चवण माश १४ पक्ष तिथि १५ चवण नषत्र १६ चवण रास १७ चवणावेला १८ स्वपना कीतनादेख्या १९ स्वपन विचार कीया २० गरज स्थिति २१ जनम मास २२ जन्म पक्ष तिथि २३ जनम वेला २४ जनम नक्षत्र २५ जनम राश २६ कीसा आरामे जनम २७ जनम काल २८ कीसादेसमेजनम २९ कीस नगरमे जनम ३० तीरथं करोनी माताना नाम कीसा ३१ तीर्थंकरना पीताना नाम कीसा ३२ मातानी गती कीसी ३३ पितानी गती कीसी ३४ दीग कुमारी ३५ दिग कुमारी कृत ३६ इंद्र महोछव ३७ इंद्र कृत्य ३८ गोत्र नाम ३९ वंश नांम ४० जीन नांम ४० श्री जिन नांम ४२ सर्व तिर्थंकरोना नांम कीम ४३ लंछन कीसा ४४ फणस ४५ देह लक्ष कितना ४६ ग्रहस्थ पणे ग्यांन कीतना ४७ वरण कीसा ४८ देह रुप कीसो ४९ देहव

दाकीतनो ५० ऊंचे आगल देहमान ५१ आतम आगुल देहमान ५२ प्रमाणु आगुल देहमान ५३ प्रथम आन्हार किसोलीनो ५४ विवाह ५५ कुमार अवस्था कितनो काल ५६ राजअवस्था काल कितनो ५७ चक्री पदवी ५८ लोकांतीक प्रतबोधते कीम ५९ सवत्सरी दान ६० दिख्या मास ६१ दिख्या नक्षत्र ६२ दिख्या राम ६३ दिख्या गण ६४ दिख्या तप ६५ दिख्या शिवकानाम ६६ दिख्या परिवार ६७ दिख्या नगर किसा ६८ दिख्यावन ६९ दिख्या तरु ७० लोचमुष्टी ७१ दिक्षा वेला ७२ सजमग्यान ७३ देवदुष्य मूल्य कितनो ७४ देवदुष्य स्थिती कितनी ७५ प्रथम पारणे द्रव्य कीसो लीनो ७६ पारणे कालनो मान कितनो ७७ पारणाको नगर कीसो ७८ पारणे दाता रना नाम कीसा ७९ दातारनी गती कीसी ८० पचदिव्य कीतना ८१ वसुधारा कीम ८२ तिरथ उत्कृष्ट तप मान कीतनो ८३ अभिग्रह कीतना ८४ विहार भूमि ८५ छदमस्त काल ८६ प्रमाद काल ८७ उपसर्ग ८८ केवलमास ८९ केवल नक्षत्र ८९ केवलरास ९० केवलस्थान ९१ केवलवन ९२ केवलवृक्ष ९३ केवल वृक्ष मान ९४ केवल तप ९५ केवल उपतवेला ९६ अष्टादश दोरा

ए७ अतीसए एण वांणीगुणी एए प्रतीहारय १०० तिरथ उतपत्ती कदा १०१ तीरथ प्रवृत्तिकाल १०२ तिर्थविछेदकाल १०३ प्रथम गणधर नाम १०४ प्रथम साधवी नाम १०५ प्रथम श्रावक नाम १०६ श्रावणी नांम १०७ भक्त नृप १०८ सासन यक्ष १०ए सासन देवीनांमे ११० गछ संख्या १११ गणधर संख्या ११२ पुत्रांनी संख्या ११३ बेटीयां कीतनी ११४ गण कीसा ११५ जांती नांम ११६ आसन कीसे सीधा ११७ संथारो कीतनो आयो ११८ मोक्ष परिवार ११ए प्रत्येक बूधा की तना १२० आगमे नुक्ता प्रकरणै प्रौक्ता १२१ अनेकधां १२२ वृत कहेछै १२३ वृतं १२४ उप कारण १२५ चारीत्र १२६ तत्व १२७ समायक १२८ प्रतिक्रमण १२ए रात्री भोजन १३० कल्प १३१ कल्प १३२ कल्प शूधि १३३ आवश्यक १३४ मुनि स्वरूप १३५ संजम १३६ धरम भेद १३७ स्वतिर्थ वरण १३८ गृहस्थ काल १३ए साध संख्या १४० साधवी संख्या १४१ श्रा वक संख्या १४२ श्राविका संख्या १४३ केवली १४४ मन प्रर्यव १४५ अवधि संख्या १४६ चवदे पुरवी संख्या १४७ वेक्रे लबधि संख्या १४८ वादि यानी संख्या १४ए समान साधु संख्या १५०

अनूतर सख्या १५१ प्रकीरण सख्या । एक एक तीरथ करना नामसू एकसो एकावन वोल कीम उ
तारणा ॥ उत्तर ॥ एक एक तीरथ कर नाम एकसो इकावन वोल इण रीते कहेछे २४
तिर्थकर नाम पुरव भव सक्ता दिप क्षेत्र दीसि विजय पुरि नाम राजपदवि गुरु सूत्र भणवाकी
सक्ताए १० डुवार लीखीएछे १ ऋषभ २ अजीत ३ सभव ४ अभिनदण ५ सूमत ६ पदम प्रभू
जी ७ सुपार्श्व नाथजी ८ चदाप्रभूजी ९ सूवधिनाथजी १० शीतल नाथजी ११ श्रीयसजी १२ वा
सपुज्यजी १३ विमल नाथजी १४ अनत ना० १५ धर्म ना० १६ शाति ना० १७ कुथु ना०
१८ अरना० १९ मलिना० २० मुनिसुव्रतजी २१ नमिना० २२ रिठनेमीजी२३ पारश्वनाथजी
२४ वर्द्धमानजी ३ पेत्राका १३ भव ८ चद्राप्रभूका ७ भव १६ सातिनाथजीका १२ भव २०
मुनिसुव्रतजी ९ भवनेमीनाथजीका ९ भव २३ पारश्वनाथजी१० भव माहाविरजीके२७ भव ओर
१७ तिर्थंकरके ३ भव २॥ द्विपनाम पेला ४ के जंबुदिप ५।६।७।८ । धातकी षड ९। १०।
११ । १२ । अरध ३ पुसकरवर १३ । १४ । १५ । धातकि १६ मासू २४ मासूवि जवुद्विप३ खे

त्रना नामपेलासू २२ मासूधिः पुरव विदेह क्षेत्र १३ माके धातकी न्नरत १४ धा० ऐरवत १५ न्नरत १६। १७। १८। जंबुपुरबविदे १९ जंबु प्रथमविदे २० मासू २४ मासूधि जंबू न्नरत ४ दिशी प्रमांण १ शीतान्नत्तर २ शीतादक्षण ३ शीतादक्षण४ शीतादक्षण ५ शीतान्नत्तर ६। ७। ८। शीतादक्षण ९ शीतान्नत्तर १०। ११। १२। शीतादक्षण १३ मेरुदक्षण १४ मेरुन्नत्तर १५ मेरुदक्षण १६ शीतान्नत्तर १७ शीतान्नत्तर १८ शीतादक्षण १९ शीतोदा दक्षण २०। २१। २२। २३। २४ मेरुदक्षण ५ विक्षे नामनगर १ पुषलावती२ वग्ग३रमणीजा ४ मंगलावती ५ पुखलावती ६ वग्ग ७ रमणीजा ८ मंगलावती ९ पुखलावती १० वग्ग ११ रमणीजा १२ मंगलावती १३ महापूरी १४ रीगापुरी १५ न्नलदपुरी१६ पुंडरीगणी १७ षगपुरी १८ सूसिमा १९ वीतसोगा२० चंपा२१ कोसं बी२२ राजगृह २३ अयोध्या २४ अहिगता ६ पुरवन्नवनांम १ वजनान्न २ विमलवाहन ३ विपुल वल ४ महावल ५ अतिवल ६ अपराजित ७ नदी ८ पदम ९ महापदम१० पदम ११ नलिणी गुल्य १२ पदमोत्तर १३ पदमसेन १४ पदमरथ १५ द्रढरथ १६ मेघरथ १७ सीहावह १८ धन

पती १९ वैश्रमण २० श्रीवरम २१ सिद्धारथ २२ सुप्रतिष्ट२३ आणद २४ नदन ७ पदवीनाम पेला ऋषभजी चक्रवरती वाकी२३ राजपदवी भोगवी८ पुरव भव गुरु सत्य गुरु १ वज्रासन गुरु २ अरिदमन ३ सम्रात ४ विमलवाहन ५ सीमदर ६ पिहिताश्रव७ अरीदमन ८ जुगदर ९ सरवजगा णद १० सोथाद्दो ११ वज्रदत १२ वजनाभ १३ सरपगुपत १४ चीत्ररथ १५ विमल वाहन१६ धन रथ १७ सवर १८ साधु सवर १९ वरधमान२० सूनद२१नद २२ अतिसए २३ दामोदर२४ पोटी लाचारय ९ पुरव ग्यान ऋखभ देव स्वामी ८४ पुरव भणया वाकी २३ तिरथ कर ११ अगभ णया १० थानक २० रीषभदेवजी २४ मा माहावीरजी २० स्थानक सेवी तिरथकर गोत बाध्यो वाकी २२ तिरथकर १ तथा २ तथा तीन सेवी तिर्थकरगोत बाध्यो ११ स्वरग गमनं १ सर्वार्थ सिद्ध २ विजए विमान ३ सातमीग्रै वेग ४ जयत वीमाण ५ जयतवी० ६ नवमो ग्रैवेग ७ छटोग्रे वेग ८ विजए वि० ९ आणत देव० १० प्राणत १० देव लोक ११ अचुत १२ देव लोक१२ प्रा णत १० देव लोक १३ सहश्रार ८ देव लोक १४ प्राणत १० देव लोक १५ विजए विमाण १६

सर्वा रथ सिद्ध १७। १८ सर्वारथ सिद्ध १९ जयंत वीमांण २० अपराजित २१ प्रांणत १० देव २२ अपराजित २३। २४ प्रांणत १० देव लोक १२ चवण आउखो तो ठिकाणं ठिकाणे उत कृष्टो जांणवो १२ चवण मास पक्ष तीथी जंत्र थकी जांणवी चवण नक्षत्र १ उतराषाढा २ रोहणी ३ मृगसिर ४ पुनरवसू ५ मघा ६ चित्रा ७ विशाखा ८ अनुराधा ९ मुल १० पुरवाषाढा ११ श्रवण १२ शतभीषा १३ उत्रा भाद्रपद १४ रेवती १५ पुष्य १६ भरणी १७ कतिका १८ रेवती १९ अश्वनी २० श्रवण २१ अश्वनी २२ चित्रा २३ विशाखा २४ उत्तराफाल्गुणी १५ चवणरास १। ९। १०। धनरासी २। १७। वृषरासी ३। ४। मिथुनरासी ५ सिहरासी ६। २२। २४। कंन्यारासी ७। २३। तुलरासि ८ वृश्चिरासी ११। २०। मकररास १२ कुंभरास १३। १४। १८। मीन रास १५ करक रास १६। १९। २१। मेष रास १६ चवणवेला अरधरात्री २४ जिन १७ स्वपन १४ देख्या २४ जिन माता १८ स्वपन विचार कीसो १ पीता सुरेंद्रवाकी २३ के पीता स्वप्न पाठक १९ बोल कहेछे गरभ स्थिति १ मास ९ दीन ४। २। मास ८ दिन २५। ३

मा ए दी ६ । ४ मा ८ दि २८ । ५ । ६ । १० । ११ । १४ । १६ । २३ । मास ए दीन ६ । ७
मास ए दिन १ए । ८ । १ए । २४ । मा ए दी ७ । ए । १५ । मा ८ । दिन २६ । १२ मास दी
२० ॥ १३ मास८ दी० २१ ॥ १७ मा ए दी ५ । १८ । २० । २१ । २२ मा ए दी० ८ । २० ।
बोल जन्म मास पक्ष तीथि जन्न थकी जाणवा २१ बोल कहेछे जनम वेला २४ जिनके अरध
रात्री २२ बोल कहेछै जनम नक्षत्र १ उत्तरापाढा २ रोहणी ३ मृगसीर ४ पुनरवसू५ मघा ६ चित्रा
७ विशाखा ८ अनुराधा ए मुल १० पुरवापाढा११ श्रवण १२ शतभिषा१३ उत्तरा न्नाद्र१४ रेवती
१५ पुष्य १६ न्नरणी १७ कृतिका १८ रेवती१ए अश्वनी२० श्रवण २१ अश्वनी २२चित्रा२३
विशाखा २४उत्तराफाल्गुनी२३ बोल कहेछे रास२४जनम रास १४धन२ वृपन्न३ मिथुन४ मिथुन५
सिंह६ कन्या ७ तुल ८ वृश्चिक ए धन१० धन११ मकर१२ कुन्न१३ मिन १४ मिन १५करक १६
मेप १७ वृपन्न १८ मिन १ए मेप २० मकर२१ मेप२२ कन्या२३ तुल२४ कन्या२४ बोल जन्म
आराम्रने कहेछे १ आरानी उपाते चोथा आराने मध्ये ३। ४। ५ । ६। ७। ८ । ए । १० ।११।१२।

१३। १४। १५। १६। १७। एवं १५ चोथा आराने पश्चार्ध १८अठार मासूं २४मालगे ४ आराधने उप्रांते। २५ बोलजनमकाल कहेछे १ तिजा आराका ८४ लाख पुरव उपर ८९ पखवामे थाकते श्री ऋषभ जनम २ बयाली सहजार वरष नुन्यउणा ५० लाख कोम सागर उपर ७२ लाख पुरव ८९पक्ष सेषं आराका अजीत जनमए ८९ पपसरवने शेषजाणवा अनै ४२ हजार वरष उणा पि णसरवमे केणा ॥ विसलाख कोम सागर ६० लाख पुरव अधिक ४ दसलाखकोड ५० लाखपुरव उपर ५ एक लाख कोड सागर ४० लाख पुरव ६ दसलाखकोड सागर ३० लाख पुरव ७॥ एक हजार कोड सागर २० लाख पुरव ८। सो कोम सागर १० लाख पुरव ९ दस कोड सागर ९ लाख पुरव १० एक कोम सागर एक लाख पुरव ११ सो सागर १ हजार कोड ३५ लाख ८४ स हस्र वरष १२ ४६ सागर १ कोड ३७ लक्ष ८४ सहस्र १३ १६ सागर १ कोम २५ लाख ८४ सहस्र १४ ४ सागर ९५ लाख ८४ सहस्र १५ ॥ ३ सागर ७५ लाख ८४ सहस्र १६ पल्प कोतिजोभाग ६६ लाख ८४ सहस्र १ पलको ४भाग६६ लाख७९ सहस्र १८ एक हजार कोम

वरष ६६ लाख ६ठ सहश्र १ए। ७६ लाख ३ए सहश्र २० ॥ १२ लाख ३ए सहश्र २१ पा
च लाख ए४ सहश्र २२ ठ५ सहश्र २३ ३५३ ऊवर १ठ ॥ मास २४ ॥ ७५ वरष ऊपर ठ ॥
मात शेखाश्रीमहाविर जनम ॥ २६ बोल जनम देस कहेछै १ कोसलदेस २ । ३ । ४ । ५ कोसल
देस६ वछदेस ७ कासीदेस ठ पुरव देस एअप्रसिद्ध १० मलयदेस ११ अप्रसिद्ध १२ अगदेश १३
पचाल देस १४ कोसलदेस १५ अप्रसिद्ध १६ । १७ । १ठ कुरुदेस १ए विदेह २० मगध देस२१
विदेह देस २२ कुसावर्त्त देस २३ कासीदेश २४ पुरव देस २७ जनम नगरना बोल कहेछै १ इ
खागभूमी अयोध्या सावथी अयोध्या ७ कोसंबी ठ वणारसी ठ चद्रपुरी ए काकदी १० भदीलपुर
११ सिहपुरी १२ चपा नगर १३ कपीलपुर १४ अयोध्या १५ रयणपूर१६ गजपुर१७।१ठ गजपुर
१ए मिथला २० राजगृह २१ मिथीला २२ सोरीपुर २३ वाणरसी २४ कुमणपुर२६ बोलेमाताना
नाम कहेछे॥ १ मरुदेवी २ विजया ३ सेना ४ सिधारथ ५ मगला ६ सूसीमा ७ पृथवी ठ लक्ष्म
णा ए रामा ११० नद११ विसनु १२जया १३ सीमा १४सुजसा १५ सूवृता १६ अविरा १७ श्री

राणी १८ देवी १९ प्रभावती २० पदमावती २१ विप्रा २२ सीवादेवी २३ वांमादेवी२४ त्रिसलादेवी २९ वोलेपीतानानाम१नाभ्न राजा२ जीतशत्रु ३.जितारथ४संवररा०४मेघरथरा६श्रीधररा०७प्रतिष्ठरा०८ मह्ह सेनरा० ९ सुग्रीवरा० १० दृढरथरा० ११ विसनु राजा१२वासुपुज्य १३ कृत ब्रह्म १४ सिंहसेन १५ भानुराजा १६ विश्वसेनराजा १७ सूरराजा १८ सूदरसन १९ कुंभ्नराजा २० सुमीत्रराजा२१ विजयराजा२२समुद्र विजयरा२३अश्वसेन राजा२४ सिधारथ राजा ३० बोल मातानी गतीनो कहेछे १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । मोक्गया । ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । संनत कुमार देवलोकेगया । १७ । १८ । १९ । २० । २१ । २२ । २३ । महें द्रदेवलो के । २४ । देवानंदाजी मोक्गया त्रीसलादेवी १२ मेस्वरगे ३१ मोबोलेपीता कीसीगतमे तेकहेछे १ नागकुमारमे २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । इसांणदेवलोके ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ शनत कुमार स्वरगे १७ मासू २३ मा सुधि महेंद्रस्वरगे १४ रुषभ्नदतजिमोक् सिधारथजा १२ मेस्वरगे ३२बोले दीगकुमारी ५६ आई २४ लगे ३३ दिग कूमारीकृत ८ आठसर

वके ३५ इद्रमोछवमे ६४ सखके ३६ इद्रकृत १० सखके ३ ७ गोत्रनाम ॥२० मा २२ माता गो तम गोत्र शेखसख काश्यपगोत्र ३८ वश नाम २० मा २२ मातो हरीवश शेख २२ जिन इक्षा कुवश ३९ जिननाम १ ऋषभ जावतवृधमान ४० श्रीजिन नाम सामान्य नामारथ १ वृतधुरावहनीत श्रीवृषभ २ रागादिभिरन जितोत अजित ३ शुभातिशए संभव नुशति सभवना० ४ इदर) भिवद्य तेति अभिनद ५ स्वयसूमति भावात् श्री सुमती६ पदमचनिरमलत्वा त्पदमप्रभुजी ७ शुभपारश्वात शु पारश्व ८ चद्रवत शुभकातित्वाचदप्रभ९ शोभनविधित्वात् श्री सुविधि१०जगत् तापहारित्वात् शीतल ११ श्रेयस्कारत्वात् श्री श्रेयाश १२ वसूदेवता पूजितत्वात् वासुपूज्य १३ बाह्याअतरागतमलक्षया विमला १४ ग्यानादिकान तगुणत्वात् अनत १५ आजन्मतो धरमस्वभावतात् धरम १६ शातिकर त्वात् श्री शातिनाथः २७ कुप्रथ्वीप्रतिस्थित. कुथुनाथ १८ वंशादिक वृधिकरणात् अर १९ मोहादिकमलजयात्मल्ली २० मुनित्वे सुव्रतत्वात् मुनिसुव्रतः २१ रागादिकवैरिन मिकणा तनमि २२ पापडुमछेदनोनमिः चक्रधारा २३ समस्त भाव पश्यतीति श्रीपार्श्व २४ ग्यानादि

क वृद्धि तो व्रधमांन ४२ वोलक हेठे ॥ सरवतिरथं कराणांनाम विशेषार्थ १२ प्रथम वृषभ स्वमतो वृषभ लंछन तथ्यवृषभं २ सात्राअक्षै राजाजिताजित: ३ जन्मनिधांन ध्यांन संभवांत् संभव ४ गर्भस्थेमाता इंदेरभिवंदिता इति अभिनंदन: ५ न्याए विपएमातुसुमतिरजाता इती ६ मातु पद्म शय्या दोहदा त्पद्म ७ गरभेमातु: स्तनो: सुपार्श्वता इतिसुपार्श्व ८ गरभेमातु: चंद्रप्रभाया नदोहदा चंद्र: ए गरभेमातु: शुभंकरोति सुवधि १० मातृकरस्पशांत पूर्वदाघज्वर समतादितिशीतल ११ गरभमात्रादेवशायक्रमणात् श्रेयोजाता: -श्रेयांश १२ वसुपूजस्यापत्यं वासूपुज्जं१३गरभेमाता वि मलवूधि विमल तनुथ्यजाता इति विमल १४ गरभेअनंतमणी दामस्वपाद नंत १५ गरभेमाता अ धिकं धरमवृत्ति जाता इति धर्म १६ देशमध्ये अशिवद्दरणात् शांतिकरणात् श्री शांति१७गरभे माता भूस्थीत स्थुभ दृष्ट इति कुंथू १८ माता स्वप्न मह्नारता अरो दृष्ट इति अर १ए गरभे मातु: पुष्प शैय्या दोहदा भमल्ली २० गरभ माता मुनीवत्सुवृता जाता रती मुनी सुव्रत २१ गरभे नगर रोध कृ त वैरिनतां इति नमि २२ स्वमे माता अरिष्ट रत्न चक्रं द्रष्ट तेन अरिष्ट नेमि २३ गरभे माता

रुष्णा रात्रौ रुष्णोसपोद्दिष्ट इति पार्श्वे २४ गरत्ने पितृ गहधनादिवर्द्धनात् वरधमान ४२ बो
ले लंछन कहेछे १ वृषभ २ गज ३ अश्व ४ वानर ५ क्रोंच ६ रक्तोत्पल ७ स्वस्तिक ८ चंद्रमा ९
मकर १० श्रीवत्स ११ खग्गी १२ महिष १३ वाराह १४ सीचाणा १५ वज्र १६ मृग १७ अ
ज १८ नंदा वृत १९ कलश २० कुरम २१ निलोतपल २२ शख २३ फणी २४ सिंह ४३ मो
बोल कहेछै फणस ७ माके १।५।९।२३ माके ३।७।११ विजाने नथी ४४ बोल देह ल
क्षण कहेछै सरवके १००८ लक्षणछै ४५ ग्रहस्थ पणे ग्यान सरवने ३ तिन जाणीवा ४६ वरण
८ मा ९ मा श्वेत ६।१२। मा लालवर्ण १९ मा २३ मा नील वर्ण २० मा २२ मा श्याम व
र्ण बाक्री १६ जी। सुवण वरणा ४७ मे बोलै देह रुप रुप सरवको उतकृष्ट ४८ मे बोले देह बल
सरवको अनत बल ४९ मे बोले उछेद आगुल सदेह मान १।५००धनुष २।४५० धनुष ३।
४०० धनुष ४।३५० धनुष ५।३०० धनुष ६।२५० धनुष ७।२०० धनुष ८।१५० ध
नुष ९ १०० धनुष १० ९० धनुष ११ ८० धनुष १२ ७० धनुष १३ ६० धनुष १४ ५० धनुष

१५ ४५ धनुष १६ ४० धनुष १७ ३५ धनुष १८ ३० धनुष १९ २५ धनुष २० २० धनुष २१ १५ धनुष २२ १० धनुष २३ ९ हस्त २४ ७ हस्त ५० बोले आत्मांगुल देहमांन सरवनी १२० आंगुल ॥ ५१ में बोले कहेछे आंगुल १ देह मांनप्रमांणा गुल १ एक आंगुल १२० ॥ २ ॥ १०८ आंगुल ३ ॥ ९६ आंगुल ४ ॥ ८४ आंगुल ५ ॥ ७२ आंगुल ६ ॥ ६० आंगुल ७ ॥ ४८ आं गुल ८ ॥ ३६ आंगुल ९ ॥ २४ अंगुल १० ॥२१ अंगुल उपर पंचासभागमेका ३० भाग ११ १९ अंगुल पंचास भागमेका १० भाग १२। १६अंगुल पंचासमे भागमेका ४० भाग १३। १४ अंगुल पंचास भागमेका २० भाग १४।१२ अंगुल १५।१० अंगुल पंचासाभागमे । का ४० भाग १६। ९ आंगुल ३० भाग १७।८ आंगुल २० भाग १८। ७ आंगुल १०भाग १९।६ अंगुल १०।४ आंगुल ४० भाग २१ अंगुल ३० भाग २२ आंगुल २० भाग २३ पंचासमे २७ भाग २४ माकी पीचासीया २१ भागकी ५२ मे बोले कहेछे प्रथम आ हार १ गृहस्थ कल्प तरु तःप्रवति २ उजासू २४मासूघि निशीछाल्आहार५३ माबोल कहेछे१२ मा

२२ माको विवाह नथी ऊवो वाकी २२ को विवाह ऊवो ५४ मोवोल कुवरपदनो कहेछे १ । २०
लाख पुर्व २ । १८ लाख पुर्व ३ । १५ लाख ४ । १२ लाख पुरव ५ । १० लाख पुरव ६ । ७ ला
स पुरव ७ । ५ लाख पुरव ८ । २॥ लाख पुरव ९ । ५० सहश्र पुरव १० २५ सहश्र पुरव ११
२१ लाख वरष १२ । १८ लाख वरख १३ । १५ लाख वरस १४ । ७ लाख वरख १५ । २ लाख
वरख १६ । २५ सहश्र वरख १७ । २३ सहश्र वरख १८ । २१ सहश्र वरश १९ । १०० वरश
२० । ७५०० से वरष २१ २५०० वरख २२ । ३०० वरष २३ । ३० वरष २४ । ३० वरष
५५ मेलोले राज अवस्था काल १ । ६३ लाख पुरव राज्य २ ५३ । लाख पुरव १ पूरवाग ३ ।
४४ लाख पूरव ४ पूरवाग ४ ॥ ३६ ॥ लाख पूरव ऊपर ८ पूरवाग ५ । २९ लाख पूरव १२ पूरवा
ग ६ । २१ । लाख पूरव १६ पुरवाग ७ । १४ लाख पुरव २० पूरवाग८ । ६ लाख पूरव ४ पूर
वाग ९ । १० सहश्र पूरव २८ पुरवाग १० । ५० सहश्र पूरव ११ । ४२ लक्ष वरष १२ राजनथी
कीधो १३ । ३० लक्ष वरष १४ । १५ लक्ष वरष १५ । ५ लक्ष वरष १६ । २५ सहश्र वरष १७

२३ । सहश्र वरष १८ । २१ सहश्र वरष १९ राजनथी कीधो २० । १५ सहश्र वरष २१ । पांच सहश्रवरष २२ । २३ । २४ । राजनथी कीधो ५६ मोबोल चक्रीपदवी काल कहेछे १६ मा २५ सहश्रवरष १७ । २३ । सहश्रवरष १८ । २१ सहश्रवरष बाकी २१ जिन चक्रवर्ति नथी ५७ मो बोल देवप्रती बोधज्ञानो कहेछे २४ सोनेलोकांतिकसरवने ९ आव्या ५८ मो बोल कहेछे संवत्सरी दांन३ से ८८ कोम्र ८० लाख सरवजिने दिनो ५९ दीख्या मासजंत्र थकी जांणवो ६० मे बोले दीख्या नषत्र कहेछे दिख्या नानषत्र १ उत्तराषाढा २ रोहणी ३ मृगशिर ४ पूनरवसू ५ मघा ६ चित्रा ७ विशाखा ८ अनुराधा ९ मूल ११ पूरबषाढा ११ श्रवण ११ शतभिषा १३ उत्राभाद्रपद १४ रेवती १५ पुष्य १६ भरणी १७ कृतका १८ रेवंती १९ अश्वनी २० श्रवण २१ अश्व २२ चित्रा २३ विशाखा २४ उत्राफालगुणी ६० मोबोले दीख्या रास १।९ १० । धनरास२। १ ७। वृष ३। ४ मीथुन ५ सिंह ६।२२।२४। कंन्या ७।२३। तूल ८ वृश्चिक ११ । २० मकर १२ कुंभ१३।१४।१८ मीन१६।१९।२१ मेष १५ करक ६१ मेबोले दिख्यावय कहेछे १२।१९।२१।२२।२३।२४ प्रथमवए

शेप१८ अत्यवय ६३ मोबोल दीख्याना तप कहेछे १।२३।४। छ्ठतप५ भोजन कस्य ६।७।८।९।१०।
११। छ्ठतप १२ चउथ १३ मासू १८ मासूदी छ्ठतप१९ मा २३ मा अठम २०।२१।२२।२४ छ्ठ
तप ६४ मोवोल दीख्यानी शीवकाना नाम १ सुदरशणा २ सुप्रभा ३ सिधारथा ४ अरथसिधा ५
अभयकरा ६ निवृतिकरा ७ मनोहरा ८ मनोरमा ९ सुरप्रभा १० शुकलप्रभा ११ विमल प्र० १२
पृथवीनाथा १३ देवदिना १४ सागरदता १५ नागदत्ता १६ सर्वारथा १७ विजया १८ विजयेति
१९ जयति २० अपराजिता २१ देवकुरा २२ द्वारावति २३ विशाला २४ चद्रप्रभा ६५ मोवोले
दीष्यापरवारकहेछे १ च्यारसहश्र १२ ॥ ६०० छसे १९ ॥ ३००से २३ तिनसे २४ मा एक ला
ख शेप १९ जिन १००० सहश्रपरवार ६६ मे वोले दिक्षाना नगरना नाम कहेछे १ । २ अयोध्या
३ सावथी ४ ।। ५ अयोध्या ६ कोशावि १ वणारसी ८-चद्रपूरी ९ काकन्दी नगरी ११ भदिलपूर
११ सीहपूर ३२ चपापुर १३ कपिलपूर १४ अयोध्या ११ रणपूर १६ । १७ । १८ गजपूर
१९ मिथीला २० राजग्रह २१ मिथिला २२ द्वारिका २३ वणारसी २४ कुमणपूर ६७ मे वोले

दिक्षावन १ सिधारथवन २ जासू ११ मा सूद्धि सहश्राम्रवन १२ विहारगृह १३ । १४ सहश्रा म्रवन १५ वप्रवन १६ । १७ । १८ । १९ सहश्राम्रवन २० निलगुहान २१ । २२ सहश्रावन २३ आश्रम पद वन २४ ग्यात खंम्भवन ६८ मे बोले दिक्षा तरुनो कहेछे आसोक तरु सरबके छै ६९ मे बोले लोच मुष्टिनों कहेछे१ च्यार मूष्टि वाकी शेष पांच ५ मुष्टि ७० मे बोले दीख्या वेला कहेछे५ । ११।१९।२२।२३ पूरवान्हे शेष १९ जिन पश्चिमान्हे७१ मे बोले संजम ग्यांन कहेछे संजम ज्ञांन ४ सरवके७२ मो बोल देवदूख्य मुल्य कहेछे देवदूख्य मूल्य लक्ष मुल्य सरवके ७३ मो बोल देवदूख्य स्थितिनो कहेछे देव दूख्य स्थिति सदा काल२३ जिनने २४ मा जिनने वरष जाजेरो७४मे बोले प्रथम पारणे द्रव्य ते कहेछे १ इक्षू रस २ दूसरासू १२ मासूदी क्षीरको १३ मासू २४ मासूदी परमान ७५ मे बोले पारणाके काल १ एक बरस २ दूसरासूमाडी २४ मा सूदि द्वितिय दिने ७६ मे बोले पारणाको नगरनो नांम कहेछै १ गजपुर २ अयोध्या ३ सावस्ती ४ अयोध्या ५ विजयपुर ६ व्रहीस्थले ७ पाडलिपुर ८ पदम खंमै ९ श्वेत पुरे १० रिष्ट पुरे ११ सि रथ पुरे १२ महा

॥प्रश्न॥५३३॥ धर्म आचार्ज कुणनें कहीजे ॥ उत्तर ॥ श्रावक धर्म साधु धर्म ए २ आचार बतावे तेहने धर्म आचार्ज कहीजे॥प्रश्न५३४॥ धर्मी कुणने कहीजे ॥उत्तर॥ सर्व पापना त्याग करे तेहने धर्मी कहीये ते तो साधुछै॥प्रश्न॥५३५॥ अधर्मी कुणने कहिजे ॥ उत्तर ॥ १८ पापसेवे तेहने अधर्मीकहिजे प्रश्न ॥ ५३५ ॥ समगतना लक्षणकेतला ॥ उत्तर ॥ समकितना आठ गुण कहेछे। निसका १ जिन आगममे सूक्ष्म अर्थ कह्याते साचासईहे पिण सका संदेहनाणे अनें सातभय पिणनाणें १ बीजो निकंपागुणजे पुन्यरूप फलनी चाह नराखणी जिहांइछा तिहां कर्मनेबंधछे २ त्रीजो निविति गछा गुणजे सुग नकरवी सुभ असुभ पुदगल एकसरीखाछे अने पुन्यउदय शुभसजोगमिल्या पुसीहोवे अहंकार करणो नही पापनें उदयें अशुभ सयोगमिल्या दिलगीर होवें नही ३ चोथे अमूढद्रिष्टि गुण जे आगममें सुक्ष्मविचार निगोदना छद्रव्यनाते सु मुझावें नही जे धारणीआवें तेधारे जेधारणी नावे तेसरदहे ४ पाचमो अवबूहगुणजे एणें आपणें जीवमे अनतग्यानादि गुणछै तेछिपावणो नही शुद्ध सत्ता जेहवीछे तेहवी कहेवी रागद्वेष अग्यानकर्मनी उपाधीछे जीव एणेंउपाधीस्यु न्यारोछे ५ छठो

हींदू कहतां हंस्या डरकरे तेहेनें हींदू कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५२५॥ देव कूणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ १८ दोष कररहित तेहने देव कहिजे १८दोषना नांम कहेछे१ अज्ञांन २ क्रोध ३ मांन४ माया ५ लोभ ६मद ७अरत ८ रत ९ नींद्रा१० सोग ११ कुटवचन १२ चेरी१३ मछर१४ भय१५ जिवहंस्या१६ स्त्रीकीडा १७ वीसन १८ हास ॥ प्रश्न ॥ ५२६ ॥ गुरु कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ २७ गुणे करीने सहीत तेहेने गुरुकहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५२७ ॥ धर्म्म कोणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ २७ डुरगत पड़ता जीवने राखे तेहने धर्म कहीजे ॥ प्रस्न ॥ ५२८ ॥साधु कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ सावद्यक्रीया छेडी १ग्यांन २ दरशण ३ चारीत्र एकरी मुगत साधे तेहने साधु कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५२९ ॥ नीग्रंथ कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ कर्म्मगांठ छेदे१ अभ्यंतर२ बाह्य परीगृह त्यागे तेहने नीग्रंथ कहीजे ॥ प्रश्न॥५३० श्रमण कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ मन समोथयो समे मारग चाले तेहने समण कहीजे ॥प्रश्न॥५३१॥ माहण कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ ६ कायहणे नहीं मूल गुण युक्त ब्रह्मचर्य पाले तेहने माहण कहीजे॥प्रश्न॥५३२॥अणगार कुणने कहीजे॥उत्तर॥ द्रव्यघर भावघर रहीत हूवे तेहने अणगार कहीजे

सारमे जीव घणाछे कीवा शरीर घणाछे ॥ उत्तर ॥ ससारमे शरीर घणाछे ॥ प्रश्न ॥ ५१६ ॥ सीधना जीव कीसी कायमेछे ॥ उत्तर ॥ अनत कायमछे ॥ प्रश्न ॥ ५१७ ॥ आगुली नाटेरुया माही जीव ना प्रदेस कीतना लाभे ॥ उत्तर ॥ पोताना जीवना प्रदेस असख्याता लाभे ॥ प्रश्न ॥ ५१८ ॥ आ गुलीना टेरुयामाही जीवना भेद कीतना लाभे ॥ उत्तर ॥ नवभेद लाभै ते कीसा सुखम एकद्रीना २ भेद प्रज्यापता १ अप्रज्याता २ वादर एकेद्रीना अप्रज्याता ३ प्रज्याता ४ वीकलेंद्री तीनना अप्रज्या ता एव ७ असनी पचेंद्रीना अप्रज्याता ८ सनी पचेद्रीनाप्रज्याता ९ एव नवभेद लाभे ॥प्रश्न॥५१९॥ ससारमेजीव कामीघणाके कीवा भोगीघणाछे ॥ उत्तर ॥ कामी थोमाछे भोगीघणाछे ॥प्रश्न॥ ५२०॥ समाइ२ चोवीसथो ३ वनणा ४ पमीक्रमणो ५ काउसग ६ पछखाण एव ६ आवसग ॥ प्रश्न॥५२१ गया कालना आवसग दोय १ चोवीसथो २ पमीकमणो ॥ प्रश्न ॥ ५२२ ॥ वर्त्तमानकालना आवस गकीर्तना ॥ उत्तर ॥ ३ व्रतमान कालना १ समइ २ वनणा३ कावसग ॥प्रश्न॥ ५२३॥ आवताकालना आवसग कीतना ॥ उत्तर ॥ १ आवता कालनो पचखाण ॥ प्रश्न५०४॥ हीदू कुणने कहीजे ॥उत्तर॥

ख्याता कालतांइ रहे ॥ प्रश्न ॥ ५०४ ॥ ५ इंद्रिमे कांमी कीतनी ज्नोगी कीतनी ॥ उत्तर ॥ कांमी २
ज्नोगी ३ वे ॥ प्रश्न ॥ ५०५ ॥ दीष्टकुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ दीष्ठ नांम सरधानोवे ॥ प्रश्न ॥ ५०६॥
दर्शणकुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ दर्शण नांमदेवतानोवे ॥ प्रश्न ॥५०७॥ ज्ञांन कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥
नांण नाम ग्यांनकोवे ज्ञांननांमजांण पणानोवे॥ प्रश्न ॥ ५०८ ॥ ५ इंद्रिनी२३ वीषेवे तेमांहीसे एकेंद्री
मे कीतनी वीपय लान्ने ॥ उत्तर ॥ ८ वीषय लान्ने ॥ प्रश्न ॥ ५०९ ॥ वेंद्रीमे कीतनी विषयलान्ने ॥
उत्तर ॥ १२ लान्ने ॥ प्रश्न ॥ ५१० ॥ तेंद्रीमे कीतनी विपय लान्ने ॥ उत्तर ॥ १५ ॥ लान्ने ॥ प्रश्न ॥
॥ ५११ ॥ चौंद्रीमे कीतनी वीषय लान्ने ॥ उत्तर ॥ २० लान्ने ॥ प्रश्न ॥ ५१२ ॥ पंचंद्रीमे कीतनी
वीपय लान्ने ॥ उत्तर ॥ २३ वीपय लान्ने ॥ प्रश्न ॥ ५१३ जीवतत्व आषा लोकमे लान्ने अजीव तत्व
आखालोक मांही लान्ने पुनतत्व पाप तत्व देस उणा लोकमे लान्ने आस्रव तत्व वंधतत्व आखा
लोकमे लान्ने संवर तत्व नीर्जरा तत्व । त्रिवालोक मांहीलान्ने मोक्ष तत्व अढाइ द्वीपमे लान्ने॥प्रश्न॥
॥ ५१४ ॥ संसारमे जीव घणावे ॥ उत्तर ॥ जीवसे अजीव अनंत गुणावे ॥ प्रश्न ॥ ५१५ ॥ सं

स्वन्नावे करे कीवा कोइ कारणसे करे ॥ उत्तर ॥ ४ कारणसे करे १ तीर्थंकरनी रीद्ध देखवाने २ सुखम अर्थ पुछवाने ३ सशय मेटवाने ४ तीर्थंकरना पग फरसवाने ॥ प्रश्न ॥ ५०० ॥ तेजस शरीर तेजू लेश्या तेजस सदघात एकना ३ न्नेद कीम कहीजे ॥ उत्तर ॥ तेजस शरीर आहारने पचावे ते कार्णसे तेजसशरीर कहीजे तेजूलेश्याना अग्नी सरीखा प्रणामते कार्णसे तेजूलेश्या कहीजे तेजस समदघातनो धणी अग्नीसरीखा आतम प्रदेश वाहीर काढे ते कार्णसे तेजस समदघात कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५०१ ॥ तेजू लेस्यानी अग्नी सचीत कीवा अचीतछे ॥ उत्तर ॥ तेजू लेस्यानी अग्नी उजेगम अणपहूतीथकी अपरगमीथी अचीतछे साषन्नगवतीजी सतक १५ मानी ॥ प्रश्न ॥ ५०२ ॥ स्त्रीसे मइथुन सेवता कीतना जीवनीघात हूवे ॥ उत्तर ॥ ए लाख जीवनीघात थाय पुरष सजोग कीया पछे१२ मुहूर्त प्रमाणमै छमोछम असख्यात। मनुष्य उपजे सनी ए लाख उपजे ते माहीसेप हरता १।२। ३। ४। उत्कृष्ट छेरे ॥ प्रश्न ॥५०३॥ मातानो रुदीर पीतानो शुक्र तेणेकरी शरीर वाध्यो ते रुदीर सूकना पुदगल केतला काल सुधीरहे ॥ उत्तर ॥ आउखाप्रमाण रहे सख्याता कालताइ रहे अस

थी तेहने अशुनकाल कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ४ए१ ॥ मीश्र काल केहने कहीये ॥ उत्तर ॥ पूर्वे ठेम्या ते प्रमांणठे अनेरावी आयने उपनाठे ए दोही लाधे तेहने मीश्रकाल कहीयै ॥ प्रश्न॥४ए२॥ आहारीक सरीर आहारीक समुद् घात एकना २ नेद कीम कहीजे ॥ उत्तर ॥ इमहीज प्रस्न उत्तर जाणवा ॥ प्रश्न ॥ ४ए३ ॥ आहारीक शरीर १ आहारिक समद वात खीने होय कींवा न होय ॥ उत्तर ॥ स्त्रीने न होय ॥ प्रश्न ॥ ४ए४ ॥ आहारीक सरीर एक नवने वीषे केतलीवार करे ॥ उत्तर ॥ एक तथा वार २ करे ॥ प्रश्न ॥ ४ए५ ॥ आहारीक शरीर केतला कालने आंतरे करे ॥ उत्तर ॥ जगन एक समयनो उत्कृष्टो ६ मासनो आंतरो ॥ प्रश्न ॥ ४ए६ ॥ आहारीक शरीरना धणी उत्कृष्टा हो यतो कीतना होय ॥ उत्तर ॥ घणाहोय तो नवहजार होय ॥ प्रस्न ॥ ४ए७ ॥ आहारीक शरीर घणा नव आश्रीकरे तो कीतनी बारकरे ॥ उत्तर ॥ ४ वार करे ॥ प्रस्न ॥ ४ए८ ॥ आहारीक शरीर जीव कीतनी वार करे तो नेमा नरक न जावे ॥ उत्तर ॥ ३ वारकीनो होय ते नेमा नरक नही जावे ४ वार आहारक सरीर कीनो ते नेमा नीरवांण जावे ॥ प्रस्न ॥ ४एए ॥ आहारीक शरीर

थी० अनवी कहीजे ॥ ४८५ ॥ हे भगवान गुणसो कीणने कहीये गुणीमो कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ वसतु सो गुण हे वसतुको धणीसो गुणीहे ते कीम सोनों सोनी लोह लुहार ॥ प्रश्न ॥ ४८६ ॥ हे जीवन ध्यान ध्येये ध्याता सो कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ कारजकी मरजादा सो पदाथ चितवेसो ध्येये, ध्येये ध्यान, ध्यावे सो ध्याता कहीये ॥ प्रश्न ॥ ४८७ ॥ हे पावन कर्त्ता कर्म क्रिया सो कीणने कही ये ॥ उत्तर ॥ कार्जको करणे वालो करता कारज नीपजायो ते कर्म उपक्रम मीलायाते क्रिया ॥प्रश्न॥ ॥ ४८८ ॥ हेमहंत जोग उपयोग अध्यवसाय सज्ञा लेस्यासो कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ जोग जी वनो गुणछे अध्य वसाय जीवना प्रणामहे सिझन्या जीवनो उपियोग मोह कमके उयमे मील के प्रवृत्यो लेश्या जीवना प्रणाम पुदगल मीश्रते ॥ प्रश्न ॥ ४८९ ॥ श्रमकाल कोणने कहीये ॥ उत्तर ॥ पुर्वे जे ठीकाणामे जेताजीव छोमने गया पीछे केही कालसे उणठीकाणे पाछे आ वे ते आगे जीवहूता ते तो नथी ओरनवा जीव आयने उपना तेहने सुनकाल कहीये कहीये ॥ प्रश्न ॥४९०॥ असुन काल केहने कहीजे ॥ उत्तर ॥ पुर्वेगम्याते प्रमाणछे कमती जादान

दीकनो आउषो हूवे मनुष्यथकी पांचमेभाग गाय भैंसनो आउशो मनुष्यथकी दसमे भाग कुतादीक नो आउषो ॥ गाथा ॥ मणुया उसमगयाइं ॥ चउरस हयाइं अजाई अठंसा ॥ गो महि सूठखराई ॥ पणस साणाई दसमासा ॥ १ ॥ आउशाना प्रमाणनी गाथाछे ॥ प्रश्न ॥ ४८० ॥ हेपुज सुध वसतुसो कीणने कहीये असुध बसतुसो कणने कहीये ॥ उत्तर ॥ ज्यो अपने गुणकरि सहीत तेसु० ओरबस तुको मिलापभयोसो अ०प्रश्न ॥ ४८१ ॥ हेदयाल कारज सोकीणने कहीजे कार्नसो कीणने कही जे ॥ उत्तर ॥ ज्यो कारज अपनी इछासो चावहेसो का० तेकारज निपजायबेको उपाय मीलावे ते कारन ॥ प्रश्न ॥ ४८२ ॥ हेक्रिपाल निःश्चैसो कीणने कहीये विवहारसो कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ वस्तूको निजगुणसो निश्चैहे एक वस्तु अनेक भावपणे प्रणमे विवहार ॥ प्रश्न ४८३ ॥ हे प्रतिपाल द्रबसो कीणने कहीये भावसो कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ जेकारजकरे तेमाहि उपियोगनथी ते द्रबक० उपियोग सहित करे त्ते भाव कही० ॥ प्रश्न ॥४८४॥ हे स्वांमी भव्यजिवसो कीणने कहीये॥उत्तर॥ भव कर्मखये करि मोक्ष जावे चेतन गुण प्रगट थावे ते नेभवीकहीजे अभ० चेतन गुण प्रग० न

४७ ए पुष्फावे कर्णी नर्का वासाछे अने साते नर्कना ए६५३ ए पक्की वध नर्कावासाछे सर्व मीली ८४ लाख नर्कावासा थया ॥ प्रश्न ॥ ४७६ ॥ साधु मुनी राजने सेज्यातर नाघरकी की तनी चीज लेणी कल्पे ॥ उत्तर ॥ साधु मुनी राजने सेज्यातरना घरकी इतनी चीज कल्पे १ तृणा २ पाठीयो ३ राख ४ मात्रानो ठाम ५ उपासरो ६ पाट ७ बाजोट ८ लेपादीक ओषधए ए चीजले णी कल्पे सेज्यातरनाघर इणउपरांत कोइवस्तू सेज्यातरना घरकीलेणी न कल्पे ॥ प्रश्न ॥ ४७७ ॥ जीनकल्पी साधु उत्कष्टा एकण स्थानकमे मीलेतो कीतना मीले ॥ उत्तर ॥ जीनकल्पी साधु एकण स्थानकमे मीलेतो उत्कष्टासात मीले ॥ प्रश्न ॥ ४७८ ॥ करतव्य वस्तुनी थीत कीतनी अकरतव्य वस्तूनी थीत कीतनी ॥ उत्तर ॥ करतव्य वस्तुनी थीत सख्याताकालनी अकरतव्य वस्तूनी थीत अस ख्यताकालनी ॥ प्रश्न ॥ ४७९ ॥ जीए २ आरामे मनुष्यनो आउषो हुवे जीतनो ईज तीर्जचनो हूवे के जादा कमती हूवे ॥ उत्तर ॥ जीए २ आरामे मनुष्यनो आउशो बराबर हाथी सर्फनो आउशो हुवे मनुष्यना आउषाथकी चउथेभाग घोमा दीकनो आउषो मनुष्यथकी आठमे भाग ठाली बकरा

पंक्ती बंध कीतना ॥ उत्तर ॥ चोथी नर्कें नर्कावासा ९७ १० लाख तीणमे एएए९ एए३ ए पुष्फावे कर्णी नर्का वासाछे अने ७०७ ए पंक्ती बंध नरकावासा ए सर्व मलीने १० लाख थया ॥ प्रश्न४७९॥ पंचमी नरके नरकावासा कितना नवतत्व कीतना पुष्फावे कर्णीना अने पंक्ती बंध नर्कावासा कीतना ॥ उत्तर ॥ पंचमी नर्कें ३ लाख नर्कावासाछे तीणमे९एए७३५ ए पुष्फावे कर्णी नर्का वासाछे अने २६५ पंक्ती बंध नारकावासाछे एवं सर्व मीलीने ३ लाख नर्कावासा हूवा ॥ प्रश्न ॥ ४७३ ॥ छटी नर्कें नर्कावासा कीतना अने पुष्फावे कर्णी नर्कावासा कीतना अने पंक्ती बंध नर्कावासा कीतना ॥ उत्तर ॥ छठी नर्कें नर्कावासा एक लाखबे सेने पांच नर्कावासा कमती तीणमे एएए३९ ए पुष्फावे कर्णी नर्कावासाछे अने ६३ ए पंक्तीबंधन नर्कावासाछे एवं सर्वमीलीने एए हजार ए से एए५ थया स ४७४ सातमी नरकनां नरक वासा कीतना ॥ उत्तर ॥ पांच नरका वासछे ॥ प्रश्न ॥ ४७५ ॥ साते नर्कना सर्व नर्का वासा कीतना अने सगला पुष्फावे कर्णी नर्कावासा कीतना अने पंक्ती बंध नर्कावासा कीतना ॥ उत्तर ॥ साते नर्कना नर्कावासा ८४ लाखछे साते नरकमे ८३ए०३

५ गर्भ ऊवे जीवने गंडीपया कहता हथणी प्रमुखने ९ गर्भ ऊवे खेचर पखणीने गरभ १५ ऊवे उरपरसप जातने-१०० गर्भ ऊवे भूजपर गोह-नोलीया प्रमुखने ४ गर्भ ऊवे असुभ करमने उदे करी एतला गर्भ समावे वधइ पेटमाहे ॥ प्रश्न ॥ ४६० ॥ पेहली नरकमें नरकावासा कीतना ॥ ॥ उत्तर ॥ पेहेली नरकना नरकवासा-३० लाख तीणमे पुप्फाव कणी नर्कावासा कीतना २९९९५५ ६७ एपुप्फाव कणीछे ४४३३ एपक्तिवध नरकवासाछे एव सर्वे मीलिने ३० लाख नर्कावासा जाण वा ॥ प्रश्न ॥ ४६९ ॥ बीजी नर्के नरकावासा कीतना पुप्फावे कणी कीतना पुप्फावे कणी कीतना ने पक्ती वंव कीतना ॥ उत्तर ॥ बीजी नरके २४ लाख नर्कावासा तीणमे २४९७३०४ ए पुप्फावे कणीछे २६९४ ए पक्ती वध नर्क ए सर्वे २४ लाख नरकवासा ॥ प्रश्न ॥ ४७० ॥ तीजी नर्के नर क वासा कीतना पुप्फावेकणी कीतनाने पक्ती वंध कीतना ॥ उत्तर ॥ तीजीनरके २५ लाख नरका वासा तीणमे १४९८५१५ ए पुप्फावे कणी नरकवाछे १४८५ ए पक्ती वध नर्कवासाछे एव सर्वमी लीने १५ लाख हूवा ॥ प्रश्न ॥ ४७१ ॥ चोथीनरके नर्कावासा कीतना अने पुप्फावे कणी कीतनाने

ही ते कहेछे १ नंदी २ द्रह ३ मेघ गाज ५ बादर अग्नी ६ तीर्थंकरादीक उत्तम पुरस ७ मनुष्य ८ मनुष्यनोजनम ९मुनुष्य नोमर्ण १० कालादीक रात्रदीवस ए १०बोल विछेदछे॥ प्रश्न ४६५॥ परमाणु पुदगल कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जाली मांहे देखतां सुर्जनी कीरणांसे सुखम रंजदीसे ते रंजनो३० वाटो बराबरहूवे तेहने परमाणु पुदगल कहीजे ॥ प्रश्न ॥ चोथा आरामे १ गांव कीसो २ नगरकी सो ३ राजाकीसा ४ कोम्ंबी कीसा ५ आचारजकीसा ६ माता पीता कीसा ७ सासू सुसरा की ॥ उत्तर ॥ चोथा आरामे १ गांवते नगरसरीखा २ नगर ते देवलोक सरीखा ३ राजाते वैश्रमण सरीखा ४ कोम्ंबीते राजासरीखा ५ आचरजने देवता समांन जांणतां ६ माता पीताने बेटा बेटी देवतां सरीखा मांनता ७ सासु सासराने पिता समांन जांण मनुष्यणी अने त्री जंचणी एक साथे जनमेतो कीतना जनमे ॥ उत्तर ॥ मनुष्यणी एकसाथे १। २। ३। जनमे माछलीने गरब्न ९९ लाख हुवे एक पुरा घोडी प्रमुख बेगर्भ हुवे वोयपुरा गाय प्रमुख ३ गर्भ हुवे सुयंरीने १६ गर्भ हुवे सणणपयाकहर्ता कुतरीने १२ गर्भ हुवे सेषसणपयाने ४ यथा

६२ वीमांणदीप समुद्र उपरछे तेहनी वीगत देवदीप उपर १ वीमाण दोयवीमाण नाग नामासमंद्र उपरे जषदीप उपर ४ वीमाण नुत समुद्र उपर ८ वीमाणछे सयन्नुरमण समुद्र उपर ३१ वीमाणछे ए सुधरम देव लोकना प्रथम पगतीना ६२ विमाण जाणवा ॥ प्रश्न ॥ ४६२ ॥ इंद्र ६४ मीरत लोकमे आवेते सरव देवताने खबर कीसा सबब सुमालम पडे पछे इंद्रके पास आवे ॥उत्तर॥ ६४ इंद्र आपणा आपणा देवता इसी रीतसे खबर देवे नवणपतीना २० इंद्रना आग्याकारी देव पम हसबद करी सावधान करे जोतीषना २ इंद्रना अग्याकारीतीहनादे सबद करी सावधान करे ए ४ सबद माहीलो एकेक सबद साम्नली सावधान थइ सरवरीद्धीजइ समुदायकरी अपणा अपणा इंद्र पासे आवे पछे इंद्र मृत्य लोकमे आवे ॥ प्रश्न ॥ ४६३ ॥ अन्नविजीव समकत पावेके नहीं ॥ उत्तर ॥ अन्नवी जीव दीपक समकत पावे ९४ बोल पावै नही ते कीसा सुपात्रदान नीर्जराखाते देवे नही १ निरमल समकत २ जीन दरसण ३ अतसमाधी मर्ण सथारादीक ४९४ बोल अन्नवी जीव पामे नही ॥प्रश्न॥ ॥ ४६४ ॥ अढाइ दीपबारे १० बोल पावेके नही पावे ॥ उत्तर ॥ अढाइ दीपबारे १० बोल पावे न

१० हजार कोड ए से कोड १२ कोड ५६ लाख ३२ हजार १एए एतली सुधसाधवी ऊसी ॥ प्रश्न ॥ ४५५ ॥ पंचमांकालमां श्रावककीतना ऊसी ॥ उत्तर ॥ पंचमकालमां १६ लाख कोम ३ हजार कोम ३ से कोम १७ कोम ८४ लाख एतला पांचमा आरामे श्रावक ऊसी ॥ प्रश्न ॥ ४५६ ॥ पंचमाकालमां श्रावीका कीतनी ऊसी ॥ उत्तर ॥ पंचमाकालमां ३५ लाख कोम एश् हजार कोम ५०० से कोम ३२ कोम अने १२ एतली श्रावीका ऊसी ॥प्रश्न ४५७॥ पंचमाकालमां कीतना आचारज ऊसी ॥ उत्तर ॥ पंचमकालमां ४ए लाख कोम ५५ हजार कोम५०० से कोम ५० कोड इतना आचारज पंचमाकालमां ऊसी ॥ ४५८ ॥ त्रीजंच पुरषघणाके त्रीजंचणी घणी ॥ उत्तर ॥ त्रीजंच पुरष थकी त्रीजंचणी घणी ते कीम तीगुणीछे ॥ प्रश्न ॥ ४५ए ॥ मनुष्य घणोके मनुष्यणी घणी ॥ उत्तर ॥ मनुष्यथकी मनुष्यणी घणी तेकिम सताइसगुणीवतीछे ॥ प्रश्न ॥ ४६० ॥ देवतां घणाके देवी घणी ॥ उत्तर ॥ देवतांथकी देवीघकी तेकीम ३२ गुणीछे ॥ ४६१ ॥ पहेला देवलोकना विमांण३२ लाख तीणमांसुं प्रथम पंगतीना दीपउपर अनें समुद्र उपर विमांण कीतनांछे ॥उत्तर॥

सेवाकरे चक्रवतनी ॥ प्रश्न ४४७ ॥ एकटाक न्नारमे कीतना तीलतुले ॥ उत्तर ॥ १ सेरना १०० टाक ऊवे तीए मासु एक टाक न्नरमे तेरेसे पचीस तीलतुले ॥ प्रश्न४४८ ॥ एक सेरमे कीतना तील तुले ॥ उत्तर ॥ एक शेरमे एक लाख ३२ हजार ५ से इतना तीलतुले ॥ प्रश्न ४४९ ॥ एक मणमे कीतना तीलतूले ॥ उत्तर ४० सरनोएकमणमे ५३ लाप तीलतूले ॥ प्रश्न ॥ ४५० ॥ एक घाणीनेवीपे अढाइमण तीलजाणवा तेतील नीसख्या कीतनी ॥ उत्तर ॥ एक घाणीमे अढाइमण मे एक कोम्म ३२ लाख ५० हजार तील जाणवा एतला जीवनो वीनास ऊवे एक घाणीमे ॥ प्रश्न ॥ ४५१ ॥ उपसमसेणी एकन्नवमे कीतनी वारकरे ॥ उत्तर ॥ उपसमसेणी एकन्नवमे जगन एक वार करे उत्कृष्टी दोयवार करे ॥ प्रश्न ॥ ४५२ ॥ खपकसेणी एक न्नवमे कीतनी वारकरे ॥ उत्तर ॥ ख पकसेणी एक न्नवमे जगनउत्कष्टी एक वारकरे ॥ प्रश्न ४५३ ॥ पचमा आरामे साधूकीतनाऊसी ॥ उत्तर ॥ पचमाकालमे ७० लाख कोम्म ए हजार कोम्म १ से कोम्म २१ कोम्म १ लाख ६० हजार एतला सुधसाधू ऊसी ॥ प्रश्न ॥ ४५४ ॥ पचमाकालमे साधवी कीतनी ऊसी ॥ उत्तर ॥ पचमाकाले

ने कीसी २ नारकीतांइ जावणारी वीषेछे ॥ उत्तर ॥ जोतीषी अने व्यंतर ए२ सगत। पहेली नरक तांइ ए नाग कुवारसुं लेने थणी कुंवारतांइ ए ए सगती २ नारकीतांइ जावे असुरकुंवार ३ नारकीतांइ जावे बिमांणीक सातमी नारकीतांइ जावे ॥ प्रश्न ॥ ४४६ ॥ चक्र ब्रतनी कीतना देवता सेवाकरे ॥ उत्तर ॥ चक्रब्रतनी सेवा १२ कोम्र ५ लाख २६ हजार २०० इतना देवतांसेवाकरे इणारीतेसुं तेकीसा १ मागध तीर्थ २ वरदामतीर्थ ३ प्रभासतीर्थ ४ गंगादेवी ५ सिंधूदेवी ६ वेताढ्यकुमार ७ नटमाली ८ कीर्तमालीदेवतां ए रीषभकूटनोदेवता १० चुल हेमवंतवासीदेव ए १० देवतां चक्रब्रतनी सेवा करे हीवे एक एक देवतानो परिवार १ कोम्र २० लाख ५० हजार १२० ए सर्व एकठाकीजे तीवारे १२ कोड ५ लाख १२००से अने १४ रतना १४ हजार ए नीधांनना ए हजार दोय हजार भुंजाना एवं २५ हजार वली चक्रवर्तनी सेवा करे एकंद्री १२ कोम्र ५ लाख २६ हजार २००से इतना देवता सेवा करे एक आचारज इस रीतसे मांनेहे चक्रब्रतनी १६ हजार देवतां सेवाकरे ए रीत एक आचारजइसी कहेछे एक आचारजइसी कहेछे २५ हजार देवता

रोना नही आहारीक लवदी तीनवेला कीनापछे नरक जावे नहीनेमाछे ॥ प्रश्न ॥ ४४० ॥ आहारीक लवदीनो धणी मोक्ष जावे के नही जावे ॥ उत्तर ॥ आहारीक लवदीनो धणी आहारीक लवद ३ वारकीनी उवे तो मोक्ष जावणरी नेमा नही आहारीक लवद ४ वारकीनापछे मोक्षजावणरी नेमाछे ॥ प्रश्न ॥ ४४१ ॥ नवनिधानकठे रेवेछे ॥ उत्तर ॥ ए नीधान गगा नदी समद्रमे मिले जठे धरतीमे पेटी ८ जोजन उची ए जोजन पोहोली १२ जोजनलावी पैइछे तीणमे ए नीधानछे ॥ प्रश्न ॥४४२॥ तीर्थंकर २४ कीसापोहोरमे दीख्या लीधी ॥ उत्तर ॥ पार्श्वनाथ १ नमीनाथ २ श्रीहस ३ सुमत ४ मली ५ए५ तीर्थंकर पहीले पोहेरे दीख्यालीधी सेप १ए जीनपाछले पोहोरे दिख्यालीधी ॥ प्रश्न ॥ ॥ ४४३ ॥ तीर्थंकर २४ नेकि सापोहोरमे केवल उपनो ॥ उत्तर ॥ २३ तेइस तीर्थं करने केवल ग्यान पेहेले पोहोर उपनो श्रीमहावीर स्वामीने पाछले पोहोर केवल ग्यान उपनो ॥ प्रश्न ॥ ४४४ ॥ देवलोक १२ मे ७ नारकीमे बादर प्रथी पाणी वनस्पती ए लाधेके नही लाधे ॥ उत्तर ॥ १२ देवलोकमे ७नारकीमे बादर पृथ्वी पाणी वनस्पती ए ३ लाभे ॥ ४४५ ॥ च्यार जातना देवता

धीरवाद २८ नृत्य २९ नाटक ३० गीत गांयन ३१ वायकभाजी ३२ सरव बसतुनावीकांरनी जांण ३३ समस्याकरण ३४ रत्नपरीक ३५ युट ३६ योगासन ३७ सर्व पदार्थनी चीकीतसा ३८ सील्प ३९ पंक्षीनी भाषानी जांणेवाली ४० वीनय विवेक ४१ सीणगार सजक४२ जल तिरवो४३ हरण करवो ४४ ग्यांन ४५ तालमांन ४६ मेग वृष्टी ४७ जलसतभन ४८ आकारगोपन ४९ गज तुरंग परीख्या ५० वांणिज वीधी ५१ गृहचार ५२ रतनवीधी ५३ वीणावाजन ५४ सकलभाषा वीसेष ५५ फलवृष्टी ५६ वचनपाठक ५७ पुस्पगुथन५८ तेलकरण५९ अष्टादश लीपी परिछेद६० घट भ्रमण ६१ अजन पोग ६२ हसतलागव ६३ अत्यारीक ६४ ॥ प्रश्न॥ ४३६ ॥ नारकीनो बेक्रे सरीर कीयो कीतना कालतांइरहे ॥ उत्तर ॥ नारकीनोबेक्रेकीयो अंतर्मोरततांईरहे ॥ प्रश्न ४३७॥ त्रीजंच मनुष्यनो बेक्रेशरीरकीनो कीतना कालतांई रहे ॥ उत्तर ॥ त्रीजंच मनुष्यनो बेक्रे एक पोहरतांई रहे ॥ प्रश्न ॥४३८॥ देवतारो बेक्रेकीयोमो१५ दीनरहे ॥ प्रश्न ४३९॥ आहारीक सरीरनो धणी नरक जावेके नही ॥ उत्तर ॥ आहारिक सरीरनोधणी आहारीक शरीर २ वेलाकरीयो हुवेतो नरक जांवण

फाल वसारी खित पाठ गुणाकार गायवो, मृत्रदृष्टी धातुवाद नारी नर तीलक भेरी: रत्नकेश स्या मवस गज तुरग सीखायवो, ठद सर्क निती तत्व, सास्त्र येग लीपी कवित, जोतीप शून्यापित इद्र जालको देखाएवो, भणत शूकुन वेद• वादअगनी थम्न भेद, दृष्टीलोप भूपसेव, कृपीकोकरायवो, ॥ १ ॥ विणीजस्वप्न पत्रछेद, फलकृष्टी मर्मभेद, ऊर्द्फालकलसवध, मोरवग्रथ प्यारसे, भूजाम्डवाक द्रष्टी, हथीयार जूधमूष्टी, लोकरजनसो, मरदविचारसे, आसनबुरी खड्गवध, गरूम्चित्रकाष्टसध, धातुघाट भूतसर्प, टारवो ऊचारसो, भणेतभरतयुत, तरणसीवनक्रत, बोत्रकला नामएह, कल्लासो ऊदारसे, ॥२॥ प्रश्न ४३५॥ असत्रीनी कलासीखणेकी कीतनी ॥ ऊत्तर ॥ असत्रीनी कला सीखणेकी ६४ तेहनानाम ॥ वेदक १ कथाकथन २ कामसासत्र ३ काव्यकरण ४ सामुद्रीक ५ सूकनसरोदय ६ न्याय ७ गोल ८ भूगोल ९ जोतक १० अलंकार ११ रमल १२ नवरसनी जाण १३ पिंगल १४ व्याकर्ण १५ इद्रजाल १६ वादवीवाद १७ भोजन वीधी १८ लेखन १९ पठन २० लीलाव ती २१ चित्र २२ पटसासत्रनी जाण २३ समयोचितभापण २४ मन २५ यत्र २६ तत्र २७

द्रीए ७ नाअप्रज्यासा ए ७ नाप्रज्यासा ॥ एवं १५ भेद थया ॥ प्रश्न ४२८ ।। जीवना १ ४भेदमाहे संनीकीता असंनीकीता ॥ उत्तर ॥ जीवना १४ भेदमांहे संनी २ असंनी १२ ॥ प्रश्न ॥ ४२९ ॥ जीवना १४ भेद तीणमाहे गरभज कीतनानो गरभज कीतना ॥ उत्तर ॥ गरभज २ अगरभेज १२ ॥ प्रश्न ॥ ४३० ॥ जीवना १४ भेद तीणमांहे सासताकीतना असासता कीतना ॥ उत्तर ॥ सासता १३ असासतो १ सनीपंचेंद्रीरो अप्रज्यापतो ॥ प्रश्न ॥ ४३१ ॥ जीवना १४ भेद तीणमांहे मन सहीत कीतनाने मनरहीत कीतना ॥ उत्तर ॥ मनसहीत एक संनीनो प्रज्यापतो मनरहीत १३ छे॥ प्रश्न ॥ ४३२ ॥ जीवना १४ भेद तीणमाहे तसकीतना अने थावरकीतना ॥ उत्तर ॥ तसतो १० थावर ४ ॥ प्रश्न ॥ ४३३ ॥ जीवना १४ भेद तीणमाहे देखवा जोगकीतना अदेखवा जोगकीतना ॥ उत्तर ॥ देखवाजोग ६ अदेखवाजोग ८ ते ७ अप्रज्यापता सुखम एकंद्रीनो प्रज्यापतानो एक एवं ८ थया ॥ प्रश्न ॥ ४३४ ॥ पुरषरी कला सीखणेकी कीतनी ॥ उत्तर ॥ पुरषरी कलासीखणेकी ७२ कला तेहनानांम ॥ अथ ॥ ७२॥ कला नामसवैया ॥ ३१ ॥ पंखावजीवीणा ताल ढोल भेरी नृत

प्रश्न ॥ ४१७ ॥ लोकनो सठाणकिणने आकारे ॥ उत्तर ॥ लोकनो सठाण गोलने आकारे ॥ प्रश्न ॥ ४१९ ॥ अलोकनो सठाण कीणने आकारेछे ॥ उत्तर ॥ अलोकनो सठाण थोथागोलने आकारछे ॥ प्रश्न ॥ ४२० ॥ दीनरो सठाण कीणने आकारे ॥ उत्तर ॥ दीनरोसठाण गामीना ओधणने आकारे ॥ प्रश्न ॥ ४२१ ॥ रातनो संठाण कीणने आकारे ॥ उत्तर ॥ रातनो सठाण पेड़ने आकारे ॥ प्रश्न ॥ ४२२ ॥ उंची दीसनो संठाण कीणने आकारे ॥ उत्तर ॥ उचीदीसनो सठाण मादलने आकारे ॥ प्रश्न ॥ ४२३ ॥ नीचीदीसनो सठाण कीणने आकारे ॥ उत्तर ॥ नीचीदीसनो सठाण झालरने आकारे ॥ प्रश्न ॥ ४२४ ॥ त्रीछीदीसनो सठाण कीणने आकारे ॥ उत्तर ॥ त्रीछीदीसनो सठाण पडहने आकारे ॥ ४२५ ॥ दीस ४ नोसठाण कीणने आकारे ॥ उत्तर ॥ ४ दीसनो सठाण मोतीना हारने आकारे ॥ प्रश्न ४२६ ॥ विदीसा ४ नो सठाण कीणने आकारे ॥ उत्तर ॥ ४ विदीसीनोसठाण मोत्यानो तूटाहारने आकारे ॥ प्रश्न ॥ ४२७ ॥ जीवना कीतना भेद ॥ उत्तर ॥ जीवना १४ भेद १सुक्षमएकद्री २ बादर एकेंद्री ३ बेंद्री ४ तेंद्री ५ चोंद्री ६ असंनी पचेंद्री ७ पचें

हार मरीने कीण ठीकांणे उपजे ॥ उत्तर ॥ अजोगीया मरीने जगन भवन पतीमे उत्कृष्टा १२ मे देवलोकमे उपजे ॥ प्रश्न ॥ ४१६ ॥ सलींगी दंसण वावणगा मरीने कीण ठीकांणे उपजे ॥ उत्तर ॥ सलींगी दंसण वावणगा मरीने जग० भवनपतीमे उपजे उत्कृष्टा ए मागैवेगमे उपजे ॥ प्रश्न॥४१७

१२ मइनानिनीत २ पुणपोरसीनो मांन कीणरीतसुं ॥ उत्तर ॥ मइनानिनीत२ पुण पोसीनो मांन यंत्र थकी जांणवो जीम पोरसी मापितिम पुण पोरसी मापणी ॥

पुणपोरसी मांण	आसाढ१	श्रावण२	भाद्रवो३	आसोज४	कार्ती५	मागश.६	पोष७	माव८	फागण९	चेत्र१०	वेशाख ११	जेष्ट१२
पु०पोहोर२	पग२अं९	२।७	३।१	३।५	३।९	४।३	४।७	४।९	४।३	३।११	३।७	३।१
पु०पोहोर१	२।८	२।८	३।२	३।६	३।१०	४।४	४।८	४।८	४।२	३।१०	३।६	३।०
पु०पोहोर३	२।७	२।९	३।३	३।७	३।११	४।५	४।९	४।७	४।१	३।९	३।५	२।११
पु०पोहोर४	२।६	२।१०	३।४	३।८	४।०	४।६	४।१०	४।६	४।०	३।८	३।४	२।१०

काणे उपजे ॥ उत्तर ॥ तापसमरीने जग० भवनपतीमे उपजे उतकष्टा जोतिषीमे उपजे ॥ प्रश्न ॥ ॥ ४०९॥ असनी बीजचमरीने कीणठीकाणे उपजे ॥ उत्तर असंनी बीजच मरीने जगन भवनपतीमे उपजे उत्कृष्टा वाण मीत्रमे उपजें ॥ प्रश्न ॥ ४१० ॥ कद्रपीये कहता कीतोली साधु साधवी जीवमरीने कीण ठीकाणे उपजे ॥ उत्तर ॥ कद्रपीये साध साधवी कीतोली मरीने जगन भवन पतीमे उपजे उत्कृष्टा पहले देवलोके उपजे ॥ प्रस्न ॥ ४११ ॥ सन्यासी मरीने कीणठीकाणे उपजे॥उत्तर॥ जगन्य भवन पतीमे उपजे उत्कृष्टो ५ देवलोकमे उपजे ॥प्रश्न ॥४१२॥ ग्याननो अवगुण वादवोलेते प्रमुख मरीने कीण ठीकाणें उपजे ॥ उत्तर ॥ ग्यानना अवगुण वादवोले ते प्रमुख मरीने जग० भवन पतीमे उपजे उत्कृष्टा ६ देवलोके उपजे ॥ प्रश्न ॥ ४१३ ॥ सनीबीजच मरीने कीण ठीकाणें उपजे ॥ उत्तर ॥ जगन्य भवन पतीमे उपजे उतत्कृष्टा ८ मे देवलोके उपजे ॥४१४॥ अजीव कामती मरीने कीणठीकाणे उपजे ॥ उत्तर ॥ अजीव कामती मरीने जग० भवनपतीमे उपजे उत्कृष्टा १२ मे देवलोकमे उपजे ॥ प्रश्न ॥ ४१५ ॥ अन्नोगीयाते व्यवहार चारीत्रवतथका यत्र मंत्रादीकनी करणं

योनी कीणनै कहीये ॥ उत्तर ॥ चक्रवतनी श्रीदेवीनी संखावरत योनी॥ प्रश्न ॥४०१॥ कूपुग कुगाका योनी कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ तीर्थंकर चक्रवरत वासुदेव वलदेव ए ४ नी मातानी कूपुग कुगाका योनी कहीये प्रश्न ४०२ ॥ वंसी पत्ता योनी कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ शेष मनुष्यकी मातानी वंसी पत्ता योनी कहीये ॥ प्रश्न ॥ ४०३ ॥ असंजय भवीद्रव्यदेव मरिने कीणठीकांणे उपजे ॥ उत्तर ॥ असंजय भवीद्रव्यदेव मरीने जगन भवनपतीमे उपजें उत्कृष्टा ए मे गीरी वेगमे उपजे ॥ प्रश्न ॥ ॥ ४०४ ॥ संजमना आराधकमरीने कीण ठीकांणे उपजे ॥ उत्तर ॥ संजमना अराधक जगन पहेले देवलोक उत्कृष्टा सर्वार्थसीद्ध वीमांणमे उपजे ॥ प्रश्न ॥ ४०५ ॥ संजमनावीराधक मरीने कीणठीकांणे उपजै ॥ उत्तर ॥ संजमना वीराधीक जगन भवनपतीमे उपजे उतकष्टो पहले देवलोकमे उपजे ॥ प्रश्न ॥ ४०६ ॥ श्रावक आराधीकमरीने कीण ठीकाणें उपजे ॥ उत्तर ॥ श्रावक आराधकमरीने जगन पहले देव लोकमे उत्कष्टो १२ मे देवलोकमे ॥ प्रश्न ॥४०७॥ श्रावक बीराधी क मरीने जगन भवनपतीमे उपजे उत्कष्टो जोतषिमे उपजे ॥ प्रश्न ॥ ४०८ ॥ तापसमरीने कीण ठी

॥ प्रश्न ॥ ३ए१ ॥ योनीना कीतना भेद ॥ उत्तर ॥ योनीना ११ भेद ते कहेछे ॥ प्रश्न ॥ ३ए१ ॥ स बूम्हा योनी तेम्हकी ते कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ देवता १३ दंडक नारकी १ दम्हक ५ थावर ए ५ दंड क १ए दम्हकनी सबुम्हा जोन तेडकी कहीये ॥ प्रश्न ॥ ३ए३ ॥ वियम्हते खुलीयो जोनते कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ ३ वीकलेंद्रीनी वीयडे ते खुलीयो योनी कहीये ॥ प्रश्न ॥ ३ए४ ॥ सबुड वियडते योनी कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ ३ वीकलेंद्रीनी गरभजत्रीजच सनी मनुष्यनी सबुड वियडते योनी कहीये ॥ प्रश्न ॥३ए५॥ सचित्त योनीते कीणने कहीये ॥ उत्तर॥ थावरनी सचीत्त योनी कहीये॥प्रश्न॥ ॥ ३ए६ ॥ अचीत योनीते कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ देवतानारकीनी अचित्त योनी कहीये ॥ प्रश्न ॥ ॥३ए७॥ मीश्र योनीते कीणकुं कहीये ॥उत्तर॥ गर्भज जीवनी मीश्र योनी ते जाणवी ॥प्रश्न॥३ए८॥ सीत योनी कीणकु कहीये ॥ उत्तर ॥ नारकि एहनी सीतयोनी कहीये ॥ प्रश्न ॥ ३एए ॥ उसन यो नी कीणकु कहीये ॥ उत्तर ॥ नारकी तेउ कायनी उसन योनी कहीयें ॥ प्रश्न ॥ ४०० ॥ सीत उस्न योनी कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ सेष जीवनीसीत उष्ण योनी कहीये ॥ प्रश्न ॥ ४०० ॥ सख्या वरत

पेरसी प्रमाण	आषाढ १	श्रावण २	भाद्रवा ३	आसो ज४	काती ५	मागसर ६	पोष ७	माघ ८	फागण ९	चैत्र १०	वैशाख ११	जेष्ठ १२
प्रथम पोहेर१	पगरअं गू ३	२।३	२।५	२।९	३।१	३।५	३।९	३।११	३।७	३।३	२।१२	२।७
बीजो पोहेर२	२।२	२।२	२।६	२।१०	३।२	३।६	३।१०	३।१०	३।६	३।२	२।११	२।६
त्रिय पोहेर३	२।१	२।२	२।७	२ ११	३।३	३।७	३।११	३।९	३।५	३।१	२।९	२।५
चोथो पोहेर४	२।अंगु नथी	२।४	२।८	३।०	३।४	३।८	४।०	३।८	३।४	३।०	२।८	२।४

जो हरण तपि० ते पिण सयम लाज निर्वाहवानें अर्थेधा० धारेछे: राखेछे पात्रादिक परि० पहेरेछे व स्त्रादिक नसो० नही ते पि० परिग्रह कह्यो न० ज्ञात पुत्र श्रीमहावीर देव केहवाछे महा वीर । त्राइ० छकायना रक्षक तेणे मु० मूर्च्छा ममता तृष्णापरि० परि ग्रह वुत्तो० कह्यो इ० इंम बोल्या महा ऋषि यनि: एटले ममताने परिग्रह कह्यो भगवत ॥प्रश्न॥३ए०१२॥ महिनानी पोरसीनो मान एक२दीनरी४ पोरसीना नाम४पोरनोदीन हूवेछे पहले पोहरे पोरसीनो मापो कीतना पग गया हूवे तरिपोरसी आइ कहीजे इम डुजेपोरे मान कीतना पगछाया ऊवेतरे पोरसी आइकहीजे इम तीजे पोरे चोथे पोरे कित नापगछायाहूवे तरे पोरसी आइ कहीजे॥उत्तर॥प्रथम पोरसीमापण छनालामे खमोउमोरही उतरदीससा मो मुखराखणों-जीमणा कांन उपरे सुजेरीप्रभापमण देणी पीछे थोडोसो सरीरने नमावणो आपणा जी मणा गोमारे मधभागेमे आगली लगावणी वा छायापमे तीण जागारी षकीनीगे राखणी जीण जायगा अपणो पगहूतो तीण जायगासु आगलीनी छायापडी हूती ते पगसु नापणी जीतना पगहूवे जीतनी आ गली गया हूवे सो ध्यानमे राखणी१२ मासनो मापो न्यारो न्यारोछे जत्रथकी पोरसीनो मान जाणवो

सहसहणां कहेरुआ तेहने पूछिजे जे साधु आहार पांणी लेवेछे तो क्षूध्या तृषा सीत सहवो न
ही तुमारे लेपे इम कह्यां ते दिगंबर कहेछे आहार पांणी विनां देहमे धर्म करवानां पराक्रम न रहे
ते भणी आहार लेवेछे सरीरनी ममता भणी लेवे। इम कहेछे तेहनें कहस्ये तुह्मे आपणों अणजां
ण पणो स्वयं मुखिं कहोछो हे मंद वूद्धि जो आहार देह धरवा निमित्त धर्मक्रिया करवा भणी मु
निने करता वताउछो। अने क्षुध्या १ तृषा २ परीसहसहता कहोछो। ते तारी माता वाझं इसे
न्याय करता दीसोछो अहो सुबोध जण पक्ष छोडी सुध दृष्ट करी ओलखज्यो जे मर्यादा वरती आहार
पांणी लेतां ममता रूप परीग्रहनहीछे। तो मर्यांद वरती वस्त्र राखतां परी ग्रह नहीछे। अने परीसह
पिण सहेछे इसो जांणज्यो। छेडवी। जिणे मूर्छा छोडी तिणें परिग्रह छोड्याछे। मूर्छानें परिग्रह प
तायो तिर्थंकरे। दस वियाल अध्येन छेः गाथाः जंपि वत्थंच पायंवा, कंवलं पाय पूछणं, तंपि संज
म लज्जठा, धरंता परि हरे तीय १ नसो परि ग्रहो वुत्तो, नाय पुत्तेण ताइणो, मूर्छा परि ग्रहो वुत्तो,
इइंय वुत्तं महे सिणो २ अर्थ जे अपि निश्चे वत्थं० वस्त्र पात्र अथवा कंवलं० लोवडी पाय पूछणंः र

राखणाथीवरकल्पी मुनीराजने कल्पसुत्र मध्ये गरणो पाणी गलीने पीवो कह्यो छे पात्रनो लु हणो दशवैकालक मध्ये अध्येन ५ मे २ उदेसामे तेथी अधीक न राखे जे पोथी प्रमुख राखेते स जम पालवा निमते राखे छे ते उपरी ममत न करे हिवे मीगवर कहेछे जे परिगृह त्यागी मुनि व्रत धारीने परिग्रह नथी राखे ते वस्त्र पिण न राखे पात्र पिण न राखे ते अजाण्या इम कहेछे ए कह णारने जिन मारगनो जाणपणो नही छे ते कहे छे। वस्त्र परिग्रह माहे छे। ते कूगो कहे छे। ते किम सजम धारीने वस्त्रा राखवा कह्या छे सजनिर वाहवाने अर्थे वस्त्र राखे तेप्ररिग्रहमे नही ममता भणी वस्त्र राखे तो परिग्रह होइ धरम साधन भणी वस्त्र राखिवा कह्या छे: जिम क्रियाणाना गाम्ल ला भरे तेहनो माण हासल भामो देवेतो पहूचे तथा उणगामलाना चक्रने लगावे तो गाम्लो चाले तिम साधुनो शरीर ते रूप गाम्लाने वस्त्रोपधी अन्न पाणी आदि करी साजो करता धर्म ध्याननो उ द्यम घणो थाइ ते भणी आहार वस्त्रनी अज्ञा भगवत दीधीछे ते म्गिवर मतग्राही अनेंकात स्वरू प स्याद्वादना अजाण कहेछे परीसह २२ कह्या ते साधुने सहेणा तो वस्त्रारख्या छगे अचेल परी

णा तेहना नांम १ झोली २ पात्रानो लुहणो ३ मांम्लियो ४ गरणो अथवा पांणी ढंक णे के वासतै ५ तीन रसतांन पात्रांना ६ तीन पात्रां ७ रजोहरण ८ । ९ । १० । चादर तीनना ३ बोल ११ मूषपति डोरासहित राखणी विनम्होरा सुं मुषपति राखेतो हाथमे राखे तो तथा कांनमे छे कपाम्हिने घालने राखे तो भगवंतकिआज्ञा बारेछे मुखपत्ति म्होरावीना राखेतो उपवासनो प्रायश्चित आवे साख ह्लानसीनरी अधेंन सातमानीछे १२ पायकंवल १३ चोलपटो १४ कांबली १५ पूं जणी राखणी १६ । ४ पम्ही हारीया उपगर्ण राखणा पीढ १७ पलंग १८ सेज्या कहतां पाट १९ माटीनो भाजन २० संथाराएह २१ । ४ उपगर्णं पाम्ही हारीया राखणा चेल मिलि ए २१ प रीयंचनी जातो २२ आकुंचण पटगंकहीन। कांचवो २३ जांगीयो २४ चोलपटो २५ एवं ३ वृ हत कलपथी जांणवा एवं वली कारणे उपगरण राखवा कह्या २४ दंम्हएवा २५ छत्रएवा २६ मत एवा लढीयावा २७ भिसीयावा २८ चेलवी २९ चेजमेलंवा ३० चमएर्वा ३१ चमकोसिवा ३२ चमछेदणेवा ३३।९१० आंचारंग दूजे श्रुतखंधमे ७ मे अध्येंनमेंछे एवं सर्व मिली ३४ उपगरण

३८३ ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे हेतु ५७ कहेछे २५ कपाय १५ जोग १२ अवृत ५ मीथ्यात्व एवं ५७ हेतु कीतना पाई ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे हेतु ३९ कोग्ड ४४ लाख पाईये ॥ प्रश्न ॥ ३८४ ॥ सुषम पुदगल कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ वरण ५ गध २ रस ५ फरस २ । ३ जीस मे होय तीणने सुक्ष्म पुदगल कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३८५ ॥ वादर पुदगल कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ ५ वरण २ गध ५ रस फरस ५ । ६ । ७ । ८। सगाणमाहला पाईये तथा सवद पाइये तीणने वादर पुदगल कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३८६ ॥ पोगसा पुदगल कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जो पुदगल जीवने धरे सो तीणने पोगसा पुदगल कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३८७ ॥ मीसा पुदगल कीणने कहीये ॥ उत्तर ॥ जीवरहीत पुदगल ऊवे तीणने मीसा पुदगल कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ३८८ ॥ वीसेसा पुदगल कीणने कहिजे ॥ उत्तर ॥ सूर्यनी कीरणाना पुदगल छायाना पुदगल तावडाना पुद गल सीतना पुदगल स्वभावे पुदगल मीले एह पुदगला वीसेसा कहीये ॥ प्रश्न ॥ ३८९ ॥ साधु मुनिराजने कीतना उपगरण राखणा ॥ उत्तर ॥ साधु मुनीराजने ३४ उपगरण राख

लाख पावे ॥ प्रश्न ॥ ३७६ ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे ज्ञाव उदेज्ञाव १ उपसम २ षय ३ खयउप
समध पारणामीक ५ ए५ ज्ञाव कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे ज्ञाव पावे ११ को
ड़ १० लाख ॥ प्रश्न ३७७ ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे द्रव्य कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जी
वा जोनमे द्रव्य १३ कोड़ ८८ लाख पावे ॥ प्रश्न ॥ ३७८ ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे ६ संघेण
कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे संघण १ कोड़ ६६ लाख पावे ॥ प्रश्न ॥३७ए ॥
८४ लाख जीवा जोनमे ६ संठाण ते कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे ६ संठाण
१ कोड़ ७५ लाखपावे ॥ प्रश्न ॥ ३८० ॥ लाख ८४ जीवा जोनमे समो सर्ण ४ ते सगलांमे की
तना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे समो सर्ण २६ कोड़ ७६ लाख पावे ॥प्रश्न ॥३८१॥
८४ लाख जीवा जोनमेनीमतीना ८२ बोलते कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे नी
मतीना बोल ५५ कोड़ ए० लाख पावे ॥ प्रश्न ॥ ३८२ ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे करणना ५५
बोलते कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे करण ३१ कोड़ ६० लाख पावे ॥ प्रश्न ॥

प्रश्न ॥ ३६८ ॥ लाख ८४ जीवा जोनमे जीवना कीतना भेद पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे जीवना भेद दोयकोम्ड ए४ लाख ॥ प्रश्न ॥ ३६ए ॥ लाख ८४ जीवा जोनमे गुणठाणा कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ ॥ लाख जीवा जोनमे गुणठाणा पावे १ कोम्ड १२ लाख ॥ प्रश्न ३७०॥ ८४ लाख जीवा जोनमे जोग कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ जीवा जोनमे जोग पावे ४ कोम्ड ४४ लाख ॥ प्रश्न ॥ ३७१ ॥ ८५ लाख जीवा जोनमेकषाय कीतनी पावे ॥उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे कखाय पावे ३ कोम्ड ३६ लाख पावे ॥ प्रश्न ३७२ ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे इद्रीया कीतनी पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमें इद्रिया पावे १ कोम्ड ॥ प्रश्न ॥ ३७३ ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे प्रज्या कीतनी पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ जाख जीवा जोनमे प्रज्या ३ कोड ८ लाख छतीस पावे ॥ प्रश्न ॥ ३७४ ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे प्राण कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे प्राण पावे ४ कोम्ड १० लाख पावे ॥ प्रश्न ॥ ३७५ ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ फरस कीतना पावे ॥ उत्तर ॥ ८४ लाख जीवा जोनमे वर्णगंधरसफरस १ कोम्ड ६८

१०	पार्श्वनाथ अर्हतेनम जनम	बनारसी
११	पार्श्वनाथायनम दीख्या	बनारसी
१२	चंद्रप्रभ अर्हतेनम जनम	चंद्रावती
१३	चंद्रप्रभनाथायनम दीख्या	चंद्रावती
१४	शीतलसर्वे ज्ञायनम केवल	भद्दलपुर
तिथि	पौष सुदि	नगरी
६	विमल सर्वज्ञायनम केवल	कांपिल्लपुर
९	शांति सर्वज्ञायनम केवल	हस्तिनापुर
११	अजित सर्वज्ञायनम केवल	आयोध्या
१४	अभिनंदनसर्वज्ञायनम केवल	अयोध्या
१५	धर्मसर्व ज्ञायनम केवल	रत्नपुरी
तिथि	माघवदि	नगरी
६	पद्मप्रभपरमेष्टिनेनम च्यवण	कोशांबी
१२	शीतल अर्हतेनम जनम	भद्दलपुर
१२	शीतलनाथायनम दीख्या	भद्दलपुर
१३	ऋषभपारगतायनमनिर्वाण	अष्टापद
३०	श्रेयांससर्वज्ञायनम केवल	सिंहलपुर
तिथि	माघ सुदि	नगरी

२	अभिनन्दन अर्हते नमजनम	अयोध्या
२	वासुपूज्य सर्वज्ञाय नमः केवल	चंपापुर
३	विमल अर्हतेनमः जनम	कांपिलपुर
३	धर्म अर्हते नम· जनम	रत्नपुर
४	विमलनाथायनम दीख्या	कांपिलपुर
८	अजित अर्हते नम. जनम	अयोध्या
९	अजितनाथायनम दीख्या	अयोध्या
१२	अभिनन्दन नाथाय नमः दीख्या	अयोध्या
१३	धर्मनाथाय नम दीख्या	रत्नपुर
तिथि	फाल्गुणवदि	नगरी
६	सुपार्श्व सर्वज्ञायनम केवल	बनारसी
७	सुपार्श्व पारंगतायनम नीरवाण	शिखरजी
७	चंद्रप्रभ सर्वज्ञायनम केवल	चंद्रावती
९	सुविधी परमेष्टिने नम च्यवण	काकंदी
११	ऋषभसर्वज्ञायनमः केवल	पुरिमताल
१२	श्रेयांस अर्हते नम. जनम	सिंहपुर
१२	मुनिसुव्रत सर्वज्ञायनम. केवल	राजग्रही
१३	श्रेयांसनाथायनमः दीख्या	सिंहपुरी
१४	वासुपूज्य अर्हतेनम जनम	चंपापुरी
३०	वासुपूज्य नाथाय नमः दीख्या	चंपापुरी

तिथि	फाल्गुणसुदि	नगरी
२	अरपरमेष्टिने नम च्यवण	हास्तनापुर
२	मल्लि परमेष्टिने नम· च्यवण	मिथला
४	संभव परमेष्टिने नम च्यवण	सावत्थी
८	मल्लि पारंगतायनम नीरवाण	शिखरजी
१२	मुनिसुव्रतनाथाय नम.दीख्या	राजग्रही
१३		

१५	वासुपुज्यपारगतायनमनीरवाण	चंपापुर
ति	श्रावणवदि	नगरी
३	श्रेयासपारगतायनमनरिवाण	शिखरजी
७	अनन्तपरमेष्टिनेनमचवण:	अयोध्या
८	नमिअर्हतेनमजनम	राजग्रही
९	कुंथुपरमेष्टिनेनमचवण	हस्तिनापुर
ति	श्रावणसुद	नगरी
२	सुमतिपरमेष्टिनेनमचवण	अयोध्या
५	नेमिअर्हतेनमजनम	सोरीपुर
६	नेमिनाथायनमदिक्षा	द्वारिका
८	पार्श्वपारगतायनमनीरवाण	शिखरजी
१५	मुनिसुव्रतपरमेष्टिनेनमचवण	राजग्रह
ति	भाद्रवावदि	नगरी
७	चन्द्रप्रभपारगतायनमनीरवाण	शिखरजी
७	शांतिपरमेष्टिनेनमचवण	हस्तिनापुर
८	सुपार्श्वपरमेष्टिनेनमचवण	बनारसी

तिथि	भाद्रवा सुदि	नगरी
९	सुविधिपारगतायनमनीरवा	शिखरजी
तिथि	आश्विन वदि	नगरी
१३	गर्भा पहारो विरायनम	
३०	नमि सर्वज्ञायनम केवल	गिरनार
तिथि	आश्विन सुदि	नगरी
१५	नमि परमेष्टिनेनम चवण	मिथिला
तिथि	कार्त्तिक वदि	नगरी
५	संभव सर्वज्ञायनम केवल	सावथी
१२	नमि परमेष्टिनेनम चवण	सोरीपुरी
१२	पद्मप्रभ अर्हते नम जनम	कोशंबी
१३	पद्मप्रभ नाथायनम दीक्षा	कोशंबी
३०	वीरपारगतायनम नीरवाण	पावापुरी
तिथि	कार्त्तिक सुदि	नगरी

३	सुविधि सर्वज्ञायनम केवल	काकंदी
१२	अर सर्वज्ञायनम केवल	हस्तिनापुर
तिथि	मागशीर्ष वदि	नगरी
५	सुविधि अर्हतेनम जनम	काकंदी
६	सुविधि नाथायनम दीक्षा	काकंदी
१०	महावीरनाथायनम दीक्षा	क्षत्रीकुंड
११	पद्मप्रभपारगतायनम निरवा	शिखरजी
तिथि	मागशीर्ष सुदि	नगरी
१०	अरनाथ अर्हतेनम जनम	हस्तिनापुर
१०	अरनाथपारगतायनमनिरवा	शिखरजी
११	अरनाथ नाथायनम दीक्षा	हस्तिनापुर
११	मल्लि अर्हतेनम जनम	मिथिला
११	मल्लि नाथायनम दिक्षा	मिथिला
११	मल्लिनाथ सर्वज्ञायनम केवल	मिथिला
११	नमिसर्वज्ञायनम केवल	मिथिला
१४	संभव अर्हतेनम जनम	सावथी
१५	संभवनाथायनम दीक्षा	सावथी
तिथि	पोषवदि	नगरी

प्रश्न ॥ २६७ चोवीस तीर्थंकरना कल्याणकों पत्तामही मनोहरा कल्याणको कसी तीथिमें हुवा. उतर २४ तीर्थंकरनकी याण १२१ भद्रनी तथा तीथ अन्न पकी जाणवी।

तिथी	चैत्र वदि	नगरी
४	पार्श्वपरमेष्टिने नमःच्यवण	वाणारसी
४	पार्श्व सर्वज्ञाय नम केवल	वाणारसी
५	चंद्र प्रभपरमेष्टिने नम च्यवण	चंद्रावती
८	ऋषभ अर्हते नम जनम	अयोध्या
८	ऋषभनाथाय नम. दीख्या	अयोध्या

तिथी	चैत्र सुद	नगरी
	कुंथु सर्वज्ञाय नम. केवला	हस्तिनापुर
५	अजितपारंगताय नम नीरवाण	शिखरजी
५	संभवपारगताय नम नीरवाण	शिखरजी
५	अनत पारंगताय नम नीरवाण	शिखरजी
९	सुमति पारगतायनम. नीरवाणो	शिखरजी
११	सुमति सर्वज्ञायनमः केवल	अयोध्या
१३	महावीर अर्हतेनमः जनम	खत्रीकुंड
१५	पद्मप्रभ अर्हते नमः केवल	कौशांबी

तिथी	वैशाख वदि	नगरी
	कुंथु पारगतायनम नीरवाण	शिखरजी
२	शीतलपारगतायनमःनीरवाण	शिखरजी
५	कुंथुनाथायनम. दिख्याः	हस्तिनापुर
६	शीतलपरमेष्टिनेनमः च्यवण	भद्दिलपुर
१०	नमिपारगतायनमः नीरवाण	शिखरजी
१३	अनन्तअर्हतेनमः जनम	अयोध्या
१४	अनन्तनाथायनमदीख्या	अयोध्या
१४	अनन्तसर्वज्ञायनमकेवल	अयोध्या
१४	कुंथुनाथअर्हतेनमजनम	हस्तिनापुर

तिथि	वैशाखसुदि	नगरी
४	अभिनंदनपरमेष्टिनेनमच्यवण	अयोध्या
७	धर्मपरमेष्टिनेनमच्यवण	रत्नपुरी
८	अभिनन्दनपारंगतायनमनि.	शिखरजी
८	सुमतिअर्हतेनमजनमः	अयोध्या
९	सुमतिनाथायनमदीख्या.	अयोध्या
१०	महावीरसर्वज्ञायनमकेवल	बराकड
१२	विमलपरमेष्टिनेनमच्यवण	कपिला
१३	अजितपरमेष्टिनेनमच्यवण	अयोध्या

तिथि	जेठवदि	नगरी
६	श्रेयांसपरमेष्टिनेनमच्यवण	सिंहपूर
८	मुनिसुव्रतअर्हतेनम	राजग्रहा
९	मुनिसुव्रतपारगतायनमनीर.	शिखरजी
१३	शान्तिअर्हतेनमजनम	हस्तिनापु.
१३	शान्तिपारगतायनमनीरवां.	शिखरजी
१४	शान्तिनाथायनमदीख्या	हस्तिनापु.

तिथि	जेठसुदि	नगरी
५	धर्मपारगतायनमनीरवाण	शिखरजी
९	वासुपुज्यपरमेष्टिनेनमच्यवण	चंपापुर
१२	सूपार्श्वअर्हतेनमजनम	वणारसी
१३	सुपार्श्वनाथायनमदीख्या	वणारसी

तिथि	आषाढवद	नगरी
४	ऋषभपरमेष्टिनेनमचवण	अयोध्या
७	विमलपारगतायनमनीरवाण	शिखरजी
९	नमिनाथायनमदीख्या	मिथिला

तिथी	आषाढसुदि	नगरी
६	महावीरपरमेष्टिनेनमच्यवण	खत्रीकुंड
८		ळपुर
	नेमिपारंगतायनमनीरवांण	नागरी

॥ प्रश्न ॥१६५॥ अवसर पणींमें प्र येक२भाराम आउथिती मीन खानी कीतनी उत्तर अवसर पणीना६आरामे मीनषनी थीत जत्र यकी जाणवी

१	मुखम २ लोगते	दसुणा ३५०	पुरा३पन्य	वेसुणा ३गाउ	पुरा३ गाउ	४
२	सुखमलग त	देसुणा२ पल्य	पुरा२पल्य	देसुणा २गाउ	पुरा२ गाउ	३
३	सुखमदूख म ल्गत	देसुणा १पल्या	पुरा१ पल्य	वेसुणा १गाउ	पुरा१ गाउ	२
४	दूखनसुख मलगते	अतर मूहूरत	पुरकोड	असभाग	५००धनु	१उणा२र ४२०००
५	दूखमलग ते	अतर मूहरत	१२० बरस	असभाग	७ हाथ	२१००० वरस
६	दुखम२ लगते	अतर मूहरत	२०बरस	असभाग	१हाथ	२१००० वरस—

प्रश्न॥१६६॥उवसरपणीना६आरामे मीनखनी आउथीतकातमी उतसपणीना ६ आरामे मीनखानीथीत जत्रयकी जाणवा

१	दुषम२ लगते	अत्रमूहूर्त	१६ वस	असभाग	मूढहाथ	२१० ० वस
२	दुखमल गते	अत्र मूहूत	२० वस	असभाग	१ हाथ	२१००० वस
३	दुखम सुखम	अत्र मूहूत	१२० वर्स	असंभाग	७ हाथ	१कों को ४२ ००० उणा
४	सुखम दुखम	अत्रमूहूत	पूव कोड	असभाग	५००० धनुष	२
५	सुखम लगते	वेसउण १ पल्य	पुरा १ प०	इसउणा १ गाउ	पुरा १ गाउ	३
६	सुखमर लगते	वेसउणी २ पल्य	पुरा २पल्य	वेसउणा२ गाउ	पुरा २ गाउ	४
७	उसरते	देसउणा ३ पल्य	पुरा३पल्य	वेसउणा ३ गाउ	पुरा ३ गाउ	०

सं०	३२	द्रव्य	क्षेत्र.	काल	भाव
१	उक्कावाए	तारतुटे	जिसमंडलमें	१ पहर	सूत्रनपढे
२	दिसादाहे	पछमदि०लाल	जिसमडलमें	१ पहर	सुत्रनपढे
३	गजिय	वादलगाजे	जिसमडलमें	२ पहर	सुत्रनपढे
४	विजुए	विजलीचमक्के	जिसमडलमें	१ पहर	सुत्रनपढे
५	निग्घाए	कडका वाभुंचाले	जिसमडलमें	८ पहर	सुत्रनपढे
६	जुव	चालोचंव १।२।३।	सवलगई	१ पहर	सुत्रनपढे
७	जखालेते	आकासमे आग	जिसमंडलमें	१ पहर	सुत्रनपढे
८	धुमिया	लालव. कालीधुय	जिसमडलमें	जबलग	सुत्रनपढे
९	महिया	सपेत धुयर	जिसमडलमें	जबलग	सुत्रक्रीया
१०	रउघाए	रजधात	जिसमडलमे	जबलग	सुत्रनपढे
११	अट्ठी	हाड. मनु. तिर्य	१००हा ६.हा.	१२वरस	सुत्रनपढे
१२	मंस०	मांस. मनु. तिर्य	१००हा.६ हा	३ पहर	सुत्रनपढे
१३	सोणि०	लोही मनु तिर्य	१००हा.६.हा	२ पहर	सुत्रनपढे
१४	ऽभुइसामं	उच्चारपासवण	जहींवींसंगध आवे जठांताइ	जबलग	सुत्रनपढे
१५	सुसाणम सण	मसांण०	चारतर्फ१०० ६० हा.	सर्वकाल	सुत्रनपढे
१६	रायमरणे	राजाकालप्राप्त	जहांआज्ञाहो	नवोरा. वै.	सुत्रनपढे
१७	रायवुगहे	राजाकी लडाई	उपनगरके	जबलगैचै	सुत्रनपढे
१८	चदवएरागे	चंद्रग्रहण	सर्वजगमै	१२पहर	सुत्रनपढे
११	सूरोवरागे	सुर्यग्रहण	सर्वजगमै	१२पोहरत या१६प.	सुत्रनपढे
२०	उवसंतोड.	थांनकै मुरदापडा	जिसस्थानकै	जबलगै	सुत्रनपढे
२४	माहापुन ४	आसो. १ का. २ चै. ३ आसाढ ४	सबलगै	८पहर	सुत्रनपढे
२८	माहापुड४	का.मा. वै. सा.४	सबजगै	८पहर	सुत्रनपढे
३२	संध्या ४	प्रभा. दा. साड आधी रात्र	सबजगै	१मूहुर्त्त	आवसक विनानपढै

तथा भाद्रवासुदी १५ ३३ तथा आसाढ वुदी १ । ३४ अस जाई;

णु कोड अठावीस लाख० । १३ । क्रियाविशाल पूर्व तेहमाक्रियानुवर्णवछे । च्यार हजारठीनु हाथी० व स्तु१ ० पद एककोमा कोमी एक कोम पचावन लाख ।१४। श्री बिडुसार पूर्व चउदमो सर्वक्षर सन्निपा तलखि जमोख वर्णन आठहजार च्यारसे बाणु हाथी०व० १०एदोय कोमा कोम तीन कोम दस लाख पूरवना हाथी स्याही सर्वमीलने सोले हजार तीनसे असी एतला हाथी स्याही चवदपूर्व लखाई ॥प्रश्न॥ ३६७ ॥ अतआइ कीतनी टालने सूत्रवाचणो ॥ उत्तर ॥ ३४ असझाई टालनी ते कहेछे ॥

षट् द्रव्यनी अस्ति नास्तिवर्णव आठ हाथीस्पा० व० १६ प० अठ्यासीला० । ५। ज्ञांनप्रवाद पुर्व ते हमां मतिज्ञांनादी पांच ग्यांनवर्णवछे। ते । सोला हाथीस्याही ० वस्तु १२ पद एककोम छेहोत्तर लाख । ६ । सत्यप्रवादपुर्व मनसत्यादी वर्णव बली च्यार सत्यवर्णव । ते। बत्रीसहाथीस्या० वस्तु १२ पद दोय कोड बावन लाख । ७ । आत्म प्रवादपुर्व तेहमां आत्मानी अनेकनयनी व्याष्याछे चोसठ हाथीस्पा० वसतु १६ पद तीनकोम च्यारलाख । ८ । कर्मप्रवाद पुर्व तेहमां आठकर्म अवराणो जीव तेहनी प्रकृती वर्णव एकसो अठावीसहा० व० १६ प० ७ कोम आठला० । ९। प्रत्याष्यांनपुर्व तेहमां पचखांणना नवकोटी भांगावर्णव। ते दोयसे छपनहाथी० वस्तू ३० प० बारे कोम सोले लाख। १० विद्याप्रवादपूर्व तेहमां । यंत्र । मंत्र ।तंत्र । तेहना साधन किया विधांन ।ते। पांचसे हे बार हाथी० व० १४ प० चोवीस कोड बत्रिसलाख। ११। कल्यांण प्रवादपुर्व तेहमां संजम चारीत्रनां फलनां कल्याण वर्णवछे एकहजार चोवीस० हाथी व० १० प० अम्तालीसकोम चोसठ लाख। १२ । प्रांण प्रवादपूर्व त्रस थावरादी जीवना प्रांणनुं वर्णवछे। ते। बे हजार अडतालीस हाथी० वस्तु १० पदसता

कर । ३ । बुधवादि । ४ । यक्कसेन । ५ । देवगुप्ती । ६ । यसोधन । ७ । रविगुप्ती । ८ । ए तेरा चार्य म हानिसिथउद्धृत । इम जाएया महानिसिथ नवो जोमाणो दिसेछे तेमाटे निश्चे मानणो आवेनही । इमज पिण ओरछे । ते माहिपिणविरूद्ध सुत्र प्रमाण जाणिएछे । अनेचउसरण । १ । ज्ञतपइन्ना २ । चंद विजा । ३ । सथारपइन्ना । ४ । जीतकल्प । ५ । पिंडनिर्युक्ती । ६ । ए । ६ नामतो मुलथकीज नदी सुत्र मध्ये नथी । तो किम निश्चेमानिये । इसी संका उपज्या । ३२ । तोनिश्चे कीये । अने इणथी मिलता ते सर्व प्रमाणछे । सर्वज्ञ वचन सत्यछे ॥ प्रश्न ॥ ३६३ ॥ चवदेपुर्वनी बीद्या कितनी शाहीसे लिखीजे । तेहनो उनमान प्रमाण कीमछे । चवदे पूर्वनापद कीतना ॥ उत्तर ॥ १ उत्पादपूर्व तेहना पट द्रव्यना उत्पाद व्यय ध्रुव वर्णवछे । ते । एकहाथी प्रमाणे स्याहीथी लखाय । वस्तू १० पद इग्यार लाख । २ । अगाणीय पूर्व तेहमा द्रव्यगुणपर्यायनुं वर्णवछे । दोयहाथी प्रमाणे स्याहीथीलखाइं । वस्तु ८ पद वावीस लाख । ३ । वीर्यप्रवाद पुर्व तेहमा आत्मानुं वलवीर्य पराक्रम वर्णवछे च्यारहाथी प्रमाणे स्याही० वस्तु ८ पद चमालीसलाख । ४ । अस्तिनास्ति प्रवाद पुर्व तेहमा धर्म २ अधर्मादी

हजार । १ । चंदपन्नंती । तेहनांपद । तीसलाख । पांचहजार । २ । सूर्यपन्नंती तेहनापद । पांचलाख तीनहजार । ३ । दीवसागरपन्नंती । तेहनापद । दोयलाख । छतीसहजार । ४ । वाष्यानपन्नंती । तेह नांपद । अमतालिस लाख । वतीस हजारछे ॥ प्रश्न ॥ ३५७ ॥७२॥ आगमना पद केतला ॥उत्तर॥ असीकोम । दस लाख आठहजार । एकसो पंचोत्तर । पदछे ॥ प्रश्न ॥ ३५८ ॥ द्वादसंगी सुत्रनाप द केतला ॥ उत्तर ॥ वीस कोमाकोम । छियासी कोड । अमसटलाख । पांचहजार । छसे । पांच ॥ प्रश्न ॥ ३५९ ॥ एक पदना वत्रीसीया श्लोक केतला ॥ उत्तर ॥ एकावनकोम । आठलाख छियासी हजार । आठसे । च्यालीस ॥ प्रश्न ॥ ३६० ॥ एक पदना अक्षर केटला. ॥ उत्तर ॥ एक पदना अक्षर सोलशे कोड । अमतालीस लाख पचाश हजार आठशे । अठ्याशी । अक्षर जवा ॥ ॥ प्रश्न ॥३६१॥ केइ तोवर्त मांन काले ३२ सुत्रमांने । केइ ४५ मांने केइ ८४ मांने तेहनो सुं कार णं ॥ उत्तर ॥ ते सुत्रांमे ८१ नांम चाल्यां नंदी सुत्रमे सरव सुत्रानो मेल कह्यो ते कहेछे । प्रथम उत कालिक । २९ नांम कह्या । दश वियाल १ कप्पिया कप्पियं २ चूल कल्प सुत्र ३ महा कल्प सुत्र

वणा २० वर्षनी प्रज्याय वालाकु सर्व सुत्र पढावणा ॥प्रश्न॥ ३५६ ॥ दृष्टीवादसुत्र अंगकीणने कही जे ॥ उत्तर ॥ दृष्टीवादसुत्रअग तेहमा पाच चीजछे पाचचीजे मलीने आखो दृष्टिवाद सुत्र प्रथम चीज सुत्र तेहना पद अठ्यासीलाख जाणवा १ बीजी चीज परीक्रमी तेहना पद एक कोम एका सीलाख पाच हजार । २ । त्रीजीचीज । चउदपुर्वते उपर जूदालिख्या छे । तेहनी रीत उपरथी समजी लेवी ३ चोथी चीज अनुयोगते अनुयोगमे छवातछे । प्रथम अनुयोग तेहना पद । पाच हजार ।१। बी जी वात । जलगत । तेहना पद । बीसकोम ॥ अठाणुलाख । नवहजार दोयसे । पद । २ । त्रीजीवा त । जलगत । तेहना पद । एतलाज ।३चोथी। वात । आकासगत । तेहना पद । एतलाज ।४। पाच मीवात । रुपगत । तेहनापद । एतलाज । ५। छठीवात । मायागत । तेहनापद । एतलाज । ६ । एवा त अनुयोगमे छे । ४ हवे पाचमीचीज । चूलीका । तेहना पद । दसकोम । उगण पचासलाख । छया लीस हजार । ५ । ए पाच चीज मीलीने दृष्टि वादसुत्र अगछे । चौदपूर्वतो दृष्टि वादनो चौथो भा गछे । हवे ए दृष्टि वादना पाच उपाग सुत्रछे । जबूदीप पन्नती । तेहनापद । तीनलाख । पचीस

॥ ३५३ ॥ उत कालीक सुत्र कितना ॥ उत्तर ॥ कालीक सूत्र केहने कहीजे ४ बेलाटाले ते कीसी १ मध्यांन आदीरात १ मुहूर्त्ततांइ २। एक मूहूर्त्त उणीरात वाकी रेवे अध घडी उणो दीन चढे जगातांई ३ मध्यांनदीन एक मुहूर्त्त तांइ ४ अधवमी उणोग्दीन बाकीरेवे एक मुहूर्त्त उणी रातजावे जगातांई ए ४ वकत टालने सुत्र वाचणो पढणो तीणने उतकालीक कहीजे उतकाली क सुत्र १२ तेहनानांम कहेछे उतकालीक १२ उपांग ए उववाई १ रायप्रश्रेणी २ जीवाबेगम ३ पन्नवणा ४ निरावलका ५ पुप्फीया ६ पूप्फचूलिया ७ कप्पवमंसीया ८ वन्हीदसा ए मुलसुत्र ३ दशवीकालक १० नंदी ११ अणुजोगद्वार ११ ए १२ सुत्र उतकालीकछे ॥ प्रश्न ॥ ३५४ ॥ अकालीक सुत्र कितना ॥ उत्तर ॥ अकालीक सुत्र १ आवस्सग्ग संज्यासमेजाणे ॥ प्रश्न ॥ ३५५ ॥ कीतना वर्षनी दीष्यावालाकु सुत्रवाचणां ॥ उत्तर ॥ ३ वर्षनी प्रज्यायवालेकुं आचारंगसुत्र पढावणा ५ वर्षनी दीष्यावालाकूं दसाशुतषंध व्यवहार पढावणो ८ वर्षनी दीष्यावालाकु ठांणायंग समवायंग एदोय सुत्र वाचणा पढणा १० वर्षनी दीष्यावालाकुं भगवती पढावणा ११ एवर्षनी दीष्यावालाकुं दृष्टीवाद पढा

८ श्रीदिन ए वसहपाधात्रवराह १० नंद ११ कोसतुभ१२ सूभूम १३ मंदर १४ जंस१५रिष्ट १६ चक्रीयूध १७ शंबनाम १८ कुंभ १९ भिसभतथा पटे भिसमनाम २० मली २१ संत २२ वरदत २३ अजदीन २४ इंद्रभूति १०८ मे बोले प्रथम साधवीनांम १ बंभि २ फगुणी ३ सामा ४ अ जीया ५ कालवी ६ रइना ७ सोमा ८ सूमणा ए वासणी १० सूजसा ११ धारणी १२ धरणी १३ धरा १४ पउमा१५ सीवा १६ सूसिमा १७ दामणी १८ रषीया१९ बंदूमती २० पुस्पवति २१ अनिला २२ जषदिना २३ पुफचुला २४ चंदनबाला १०५ मेबोले प्रथम श्रावकना नाम कहेछे १ श्रेयांस २२ नंदनांमनाम २३ सूवृतनाम २४ शेषनामे ॥ शेष २० का अप्रसीध १०६ मे बोले प्रथमश्राविका नाम कहेछै १ सुभद्रा २२ सूवता २३ सूनंदा २४ सुलसानामे शेष २० अप्रसीध १०७ मे बोले भक्तनृप ते कहेछै १ भरतचक्री २ सागरचक्री ३ अमितसेन ४ मित्रविरज ५ सत वीरज ६ अजितसेन ७ दांनवीरज ८ मघवा ए युधनीरज १० सीमंदर ११ त्रीपष्ट १२ दीपष्ट १३ स्वयंभू १४ पुरषोतम १५ पुरषसिंह १६ कोणाल १७ कुबेर १८ सूभूम १९ जित२० वीजए २१

लिवृक्ष ए३ मे बोले केवल वृक्ष मान ते कहेहै वृक्षमान १२ गुणो शरीर सु ऊचो २३ सरवके २४ माको २१ धनुष्यप्रमाण ए ४ मे बोले कीसातपमे केवल ऊतपन ऊवो तेकहेहे १ अठमतम १२। १ए। २२। २३। चऊथ भक्त तप शेख १ए जीन ठ० तप जाणवो एए मे बोले केवल ऊत्तपती वेला कहेहे १ येलासुमाडी २३ मासुदि पुर्वान्हे २४ मापश्चिमान्हे ए६ मे बोले अष्टादश दोष १ठ दोष रहित सरवेही ए७ मे बोले अतिसए कहेहे ३४ अतिशाय सरवके एठ मे बोले वाणी गुण कहेहे ३५ वाणी गुणसरवकेही एए मे बोले प्रतिहार कहेहे सरवके ठ आठहे १०० मे बोलेतिर थोनपती कदाते कहेहै पेलासु २३ मासुदि प्रथम समवसरणमे ४ तिरथ थाप्या २४ माके द्वितियसम वसरण १०१ मे बोले तिरथ प्रवृतिकाल कहेहै अग्रेतन तीरथ यावत् निरर्थरूप प्रवृति पेहलासु ले ने २३ मासुदि २४ माके दूपसाचार्य चरिमतिरथकर १०२ मे बोले तीरथ विछेद काल कहेहे॥ तीरथ विछेदकाल १०।११।१२।१३।१४।१५।१६ पल्पचतुरथ भाग १०३ मेबोले प्रथमगण धरना नामकहेहै १ पुन्डरीक २ सिहसेन ३ चारुरुप ४ वजरनाभ ५ चमरगणी ६ सूजता ७ विरदभना।

९ । १० धनरास २ । १७ । वृषरास ३ । ४ । मिथून ५ संीघ ६ । १२ । २४ कन्यारास ७ । २३ । तुल ८ वृश्चिक ११ । २० मकर १२ कुंभ १३ । १४ । १८ मिन १५ करक १६ ।१९ २१ मेष ९० मे बोले केवल कीसे स्थांन उपनोते कहेछे १ परमताल २ अयोध्या ३ सावथी ४।५ अयोध्या ६ कोसंबि ७ वणारसी ८ चंद्रपुरी ९ कांतीपुरी १० भदिलपुर ११ सिंहपुर १२ चंपापुर १३ कंपिलपूर १४ अयोध्या १५ रयणपूर १६ । १७ । १८ गजपूर १९ मिथीला २० राजगृह २१ मिथीला २२ रेवकाचल २३ वणारसी २४ जंभिग्राम ९१ मेबोले केवलकोणसा वनमे उपनो ते कहेछे १ संकटमुख २ उजासू ११ मासूदी सहश्राम्र १२ विहारग्रह १३ मांसू २२ मासूधी सहश्रामृत २३ आश्रमपद २४ ऋजूवालिका नदितिरे ९२ मे बोले कैवग्यांन कीसा वृषनीचे उत्तपन उवो ते कहेछे १ वडवृष २ सपतवरण ३ सालनाम ४ राजादनी ५ प्रीयंगु ६ छताहना ७ सरिस ८ नाग ९ मल्लिका १० विल्वनाम ११ तिडुक १२ पाढलवृक्ष १३ जंबू १४ अश्वथ १५ दहिवन १६ नदी १७ तिलक १८ आमृ १९ अशोक २० चंपक २१ वकुल २२ वेमस २३ घातकी २४ शा

टेस बिहारे शेष २० ने आरज देश विहार ८४ मे बोले छद्मस्थ काल कहेछे १ एक सहश्र वरप २ १२ वरप ३। १४ वरप ४। १८ वरप ५ २० वरप ६ ३ माश ७ नवमाश ८। ३ माश ए चारमा श १० तीन माश ११ दोय माश-१२ एक माश १३ दोय माश १४। ३ वरप १५। २ वरप १६ १ वरप १७। १६ वरप १८। ३ वरप १ए। दोय पोर तथा एक दीन २०। ११ माश २१। ए माश २२। ५४ दीन २३। ८४ दीन २४। १२ वरप १५ दीन ८५ मे बोलै प्रमादकाल कहेछै१ एक अहोरात्र२४ माके अतर मुहुर्त शेप २२ जिनके प्रमाद नथी ८६ मे बोले उपसरग कहेछै २२ २४ माके उपसरग हुवो शेप २२ के उपसरग नथी ८७ मे बोले केवल माश तीर्थं जन्म थकी जा णवा ८८ मे बोलै केवलग्यान कुणसे नक्षत्रमे हुवाते कहेछे १ उत्तराषाढा २ रोहणी ३ मृगशिर ४ पुनरवसू ५ मघा ६ चित्रा७ विशाखा ८ अनुराधा ए मुल १० पुरवापाढा ११ श्रवण१२ शतभि षा १३ उत्तरा भद्रपद १४ रेवती १५ पुव १६ भरणी १७ कृतिका १८ रोहिणी १ए अश्वनी २० श्रवण २१ अश्वनी २२ चित्रा २३ विशाखा २४ उत्तरा फालगुणी ८ए मे बोले केवलराशी १

पुरे १३ धनक पुरे १४ वरधमान पुरे १५ सोमणसंग्राम १६ मंदिर पुरे १७ चक्र पुर १८ राज पुर १९ मिथीला २० राजग्रह २१ वीरपूर २२ द्वारिका २३ कोपकट ग्रांम २४ कोलागसन्नीवेस ७७मे बोले पारणा के दातारना नाम कहेछे १ श्रेयांसकुमार २ ब्रह्मदते ३ सूरेंद्र ४ इंद्रदत्त ५ पदमनांम ६ सोमदेव ७ महेंद्रदत्त ८ सोमदत ९ पुष्प १० पुनरवसू ११ नंद १२ सूनंद १३ जए नाम १४ विजए नाम १५ धरम सिह १६ सूमित्र १७ व्याघ्र १८ सिह १८ अपराजित १९ विश्वसेन २० ब्रह्मदत २१ दिन २२ वरदत २३ धन्य२४ बकुलव्रा ह्मण ७८ दातार गतीनो बोल कहेछै १ पेलासू ८ मासूदीतो तद्भवे मोक्ष ९ मासू २४ मासूदि तृतिए भवे मोक्ष ७९ मे पंच दीव्यनो बोल कहेछे पंच दिव्य सरवने ५ पांच ८० वसूधारानो बोल कहेछे वसूधारा १२ कोटि द्रव्य सरवने सरिखो ८१ मे बोले तिरथमे उतकृष्ट तपमान कहेछे १ एक वरश २ डुजासू २३ मा सूदि ८ माशी तप ८२ मे बोले अभिग्रह कहेछै १ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव सरवनें द्रव्यादी ४ च्यार सरबने ८३ मै बोले विहार भुमिना खेत्र कहेछै १ । २२ । २३ । २४ । आरज देसमे अनारज

थिरीकरणगुणजे आपणो परिणाम ग्यान ध्यानमें थिरकरणो डिगावणो नही ६ सातमो वछलता गुण जे जीवस्यु ग्यानध्यान तप पडिक्कमण त्रैलोकीजीइ सर्दहणा एकहोवेतें आपणासाहमीछे तेहनीभ क्तिकीजें तेवछलता कहीजें अथवा सर्वजीव आपणा साहमी छै तिणें सर्वजीवनी दयाकीजेंते वछल्लत, गुण जाणिजो अथवा एणे आपणे जीवना साहमी ग्यानादिक गुणछे तेहनें पोषघाजे ग्यानादि ध्यान नो अभ्यासकवेंते वछलता गुण जाणवो ७ आठमो प्रभावक गुणछे भगवतना धर्मनीप्रभावना म हिमा करवी अथवा आपणो जीव ग्यानादिक गुण वधारण एप्रभावनागुण ८ एसमकितना ८ गुण कह्या ॥ प्रश्न ॥ ५३६ ॥ चारीत्रनादोय भेद एकतो नीश्चेचारीत्र १ अनें डुजो भवारचारीत्र २ नीश्चे चरीत्र । भवारचारीत्र । कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ हीवेचारीत्रना दोयभेद । निश्चेचारीत्र ॥ १ ॥ अ ने विवहारचारीत्र ॥ २ ॥ तिहा प्रथम विवहार चारीत्र कहेछे । प्राणातिपात विरमण प्रमुखपाच महा व्रतरूप जे पचाश्रवनोत्याग तेसर्व विरतिकहिजे । अने श्रावकनाबारे व्रत । थूलप्राणातिपात विरमण ते देसविरति कहिजे ए ॥ २ ॥ भेद चारीत्र । तेविवहार चारित्रछे एविवहार चारित्र सुखनोकारणछे ।

वचेतन पुदगल अचेतन एदोहीना बंधतेकर्म कस्यो तोकिणप्रकारे बंधथाये ॥ उत्तर ॥ इणन्नांतिसुंछे ते सांन्नलो जीवद्रव्य १ पुदगल द्रव्य २ दोनुं परिणामी द्रव्यछे तेजीव पुदगल सुध असुधपणें प्रणमेछे तेजीवनां असुध प्रणांमथी कर्म लागेछे जेचेतन अरूपीनें कर्मने उदय राग द्वेष विमोहादिक कर्मने विषें ममतान्नावकरे । तवअसूध परिणामथाइ । तव चेतन असुधपणें परणमे ते असुधता परिणामथी कर्मबंधथाइछे । तिम चेतनकर्मनें उदयपुदगल उपर ममत्वकरे तेकर्म कर्ताजीवछे इहां दृष्टांत कहेछे, जिम स्वानने न्नषदिखाइ बंधणमेंपाड़े तिम जीव अपणी न्नूलता अग्यांनता सोकर्मलेपमांही आवेछे दूजो द्रष्टांततिम मकडीजाला पुरे पछे तेमांही फसजाइ तिमहीज जीवपुदगसुं ममत करतां आपणने कर्तामांनेछे तेन्नणी पुदगलसुं बांधीरह्योछे । अने सुध चेतना ग्यांनदसा आवे जद कर्मलेपथीरहित थाइछे, कर्मप्रणांम प्रणमेछे, तद पर स्वन्नावे थाइछे । जिम स्फटिकपाषाण सुर्यकांतिसे निर्मल स्वेतवर्णी दिसे यानें तेफटिक हेठे पांच वर्णमांहिलो कोइवर्णरापि एतोहेठिला रंगनो न्नावते फटिकमध्ये रंगदिसे, तिम चेतन फटिक समांन उज्वलछे निश्चयपणें असुधता नहींछे, महा उज्वल केवलग्यांन केवल

एह्वी करणीरूप जतिना ॥ ५ ॥ महाव्रत अने श्रावकना बारे व्रतना विवहार कर्तव्य अन्नव्यने पिण आवे । तेदेवगतिपामे । पिण सकामनिर्जरानो कारण नही सम्यक्त रहित करणी विवहाररूपछे। मोक्षनो कारण नही । तिहा कोई पुछस्ये । जे मोक्षनो कारण नहीतो एतलो कष्टकेनेकीजे तिणनो उत्तर कहेछे । एतोसत्य परजिणराजरोमार्ग निश्चे १ विवहार दोइ नयरोछे । जेकोई एकमाने तेहने मिथ्यात्वी जाणिवो । जे स्यागवुधे निश्चे ग्यानसहित मोक्षनो कारणछे। तिणनेनिश्चे ग्यानसहित चारित्र विवहार चारित्र पालणो । मोक्षमागे निश्च विवहार स्याद्वाद नयकरी साधकछे परएकांतवाद साधक नही । तेन्नणी एकांतविहारथी मोक्षनही । अने एकांतनिश्चे चारित्रथी पिणमोक्षनही । तेन्नणी दोनुही चारित्रसु मोक्षछे। जिम अंधपुरुषने कंधउपरी पंगु नर चढेतो दोनुमिल मागउलघे तिम निश्चे विवहार दोनु मिल्या संसार उलघे । इत्यर्थ । तेन्नणी निश्चय व्यवहार दोनुही आरावना जोग्यछे ॥ प्रश्न ॥ ५३७ ॥ आठ कर्म रूपीपुदगलमे न्नगवती सूत्रमे कह्या । सतक १३ उद्देसे ७ मामे आठ कर्ममे । ५ वर्ण २ गंध ५ रस ४ फरस कह्या एपुदगलरूपी अने अरुपी जीवनो बंधकीमपमे । जी

थिरीकरणगुणजे आपणो परिणांम ग्यांन ध्यानमें थिरकरणो डिगावणो नही ६ सातमो वछलता गुण जे जीवस्युं ग्यांनध्यांन तप पडिक्कमण भलोकीजीइं सर्दहणा एकहोवेते आपणासाहमीछे तेहनीभ क्तिकीजें तेवछलता कहीजें अथवा सर्वजीव आपणा साहमी छै तिणें सर्वजीवनी दयाकीजेंते वछलत, गुण जांणिवो अथवा एणें आपणें जीवना साहमी ग्यांनादिक गुणछै तेहनें पोषवाजे ग्यांनादि ध्यान नो अभ्यासकर्वोते वछलता गुण जांणवो ७ आठमो प्रभावक गुणजे भगवंतना धर्मनीप्रभावना म हिमा करवी अथवा आपणो जीव ग्यानादिक गुण वधारण एप्रभावनागुण ८ एसमकितना ८ गुण कह्या ॥ प्रश्न ॥ ५३६ ॥ चारीत्रनादोय भेद एकतो नीश्चेचारीत्र १ अनें डुजो भवारचारीत्र २ नीश्चे चरीत्र । भवारचारीत्र । कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ हीवेचारीत्रना दोयभेद । निश्चेचारीत्र ॥ १ ॥ अ ने विवहारचारीत्र ॥ २ ॥ तिहां प्रथम विवहार चारीत्र कहेछे । प्रांणातिपात विरमण प्रमुखपांच महा व्रतरूप जे पंचाश्रवनोत्याग तेसर्व विरतिकहिजे । अने श्रावकनावारे व्रत । थूलप्राणांतिपात बिरमण ते देसविरति कहिजे ए ॥ २ ॥ भेद चारीत्र । तेविवहार चारित्रछे एविवहार चारित्र सुखनोकारणछे ।

या गुरूकहेछे अहोशिष्य कर्ममुकवाना ४ कारण जगदीश्वरेकह्या प्रथमकारण ज्ञान जे ज्ञानकरी कम
वर्गणा चेतनगुणनो न्यारो २ भेद जाणे ते ज्ञान १ पछे जीवकागुणने आत्मादेखै साचासरदहै २
पछे पच्चक्खाण करीने आवता कर्मरोके ३ पछे तपकरीने पाछला कर्मखपावे ४ इणभांति सिद्धभगवत
कर्मदूरकीया तो शिष्यवलेपूछे जीवको निज गुणग्यानछेसो आत्मासु भिननहीछे आयाजेविनाया जे
आया ॥ प्रश्न ५३९ ॥ तथा प्रवृति करण कोणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ ८ कर्मते माही ग्यानावरणी १
दरशनावरणी २ वेदनी ३ अतराय ४ ए च्यार कर्मानी स्थिति तीसकोडा कोडी सागरो पमनीछे ते
३० कोडाकोडि माही २९ कोडाकोडि स्थिति भोगवी १ कोडाकोडी सागरो पमनी स्थिति रहे ।
अने नामकर्मउत्तर गोत्रकर्म एदोइ कर्मनी २० कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितछे तेमाहि उगणीस
कोडाकोडी खपाइ एक कोडाकोडी सागर रहे। मोहनी कर्मनी सीतर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थि
तिछे तेमाही गुणतर कोडाकोडी सागर खपाइ १कोडा कोडी सागर रहे इम सातकर्मनी स्थिति एक
कोडाकोडी सागर रहे तीस प्राणीयारेउदासीनतारुप परणाम थायछे संसारना दुखथी उद्वेग पामेछे पुदग

ख्यातमे न्नागेछे वाह्यनिवृतितो सर्व इंद्री जेहवी दीसेछे तेहीज आकारे जांणिवी जिम खडगादिकमे छेदवानी शक्तिछे । तिम इंद्रीयानो स्व स्व विषय ग्रहण करवानी शक्तिछे विशयप्रमांण स्पर्श १ रस२ घ्राणेंद्री ३ ए तीन इंद्रीनो विषय नव नव योजननोछे काननो १२ जोजननोछे वस्तु अनागतछे तेह नें जांणे चक्षु स्वप्रकासें १ लाख जोजन ऊफेरा रुप अनागत देखे परप्रकाशे २१२४५२७ यो जन अनागत वस्तु देखे जीम मानुषोत्तर पर्वतना निकट वर्त्ती मनुष्यांकी दृष्टि एतायोजनसे सूर्यना प्रकाशसथी देखाछे सर्वही इंद्रीना विषय प्रमांण स्वप्रकाशछे सर्व प्रकासें काननो विषय१२ योजननोछे तिर्थंकर जन्माभिषेक समय इंद्र आगंम जणावण न्नणी: हिरण्य गमेषी सुंस्वर घंटा बजावे ते अ संख्याते जोजननां विमांणसें सर्व छांमेसुणे एप्रकाश घ्राणेंद्रीनो विषय ए जोजान स्वप्रकाशछे अने च्यारशे तथा पांचशे जोजन मृत्य लोकनी गंध ऊंची जाइछे ते देवतानें डुर्गंध आवे ते परप्रकारे इ म सर्व इंद्रीयानी विषय प्रमांण पन्नवणां सूत्रनां १५ माइंद्री पदथी जांणिवी एह द्रव्येंद्रीनो स्वरुप कह्यो न्नावेंद्री तो लवध उपयोग रुपछे जीवनें दर्शनावरणी आदि कर्मना क्षयोपशंमथी शब्दादि ग्रहण

शक्तीछे तेहीज भावेद्रीनो स्वरुप जाणिवो ॥ प्रश्न ५४३॥ एकद्रीर बेंद्रीर तेंद्रीर चोंद्री ४पचेंद्री ५ए पाचानी वीषय कीतनी ॥ उतर ॥ ए ५नी वीशय न्यारी न्यारी कहेछे हिवे पृथिव्यादि ५थावर एकेंद्रीछे एक स्पर्शेंद्रीछे ते एकेद्रीना फरसनी विशय उत्कृष्टी ४सें धनुषप्रमाणछे १ बेंद्री जीव सखसीप कोमी कृमि गमोवालट चूरणीयाजलोकचदण इत्यादि जीवमेइद्री २रसेद्री १स्पर्शेद्री २तेबेंद्री रसेंद्रीनी विसय ६४४ धनुष फरसेंद्रीनी८०० से धनुष उतकृष्टी विजयछे तेंद्री जीवकूजू कीमीम कोमा पीसू उदेही कठाहार पताहार पुष्फाहार फानसिलाई कनपिजुरा जु लीख चाचमी जुनगाढोता कोथ लवावाग ग दहिया सुरसुली ममोला चोरकीमा गोवर कीमा उमणकीटीमीहथी सुमा इत्यादि जीवमेइंद्री तीन घ्राणेंद्री जिभ्भेंद्री फरसेंद्री ते इद्रीनी घ्राणेंद्रीनी विषय उत्कृष्टी १०० धनुष जिभ्भेंद्रीनी १२८ धनुष फरसेंद्रनी १६०० धनुष उतकृष्टी विशयछे चोरिंद्री जीवमषीमछरमसपतगढीचण मकड भमर भिरमटीमी पद बिछणा बिछूडीगर गोगागाविम मधूमषी चदा किन्हपता नीलपता लोहिया पता ह लिद पता सुकिल पता चितपक्षा विचित पक्षा इत्यादि जीवमेंइद्री ४ चक्षूरिंद्री घ्राणेंद्री रसेंद्री फरसें

द्री चक्षुनी विसय उत्कृष्टी २९५४ धनुष घ्राणेंद्रीनी वीसय २०० धनुष रसेंद्री विशय २५६ धनुष स्पर्शेंद्रीनी विषय ३२ धनुष पंचेंद्री जीवनरक तिर्यंच मनुष्य देवता इत्यादिक जीवमेंपांचूइंद्री ते पंचेंद्रीना२ भेद असंज्ञी पंचेंद्री मन रहीत इंद्रीछे जेहने ते अस्संज्ञी पंचेंद्रीतेहनी ५ इंद्रीनी उत्कृष्टी विशय ४०० धनुपसोइंद्री १ जोजंनरीचक्षुइंद्री ५९ धनुष घ्राणेंद्रीनी फरस इंद्रीनी ५१२ धनुष फरसेंद्रीनी ६४०० धनुष मन सहित ५ इंद्रीछे जेहने ते संज्ञी पंचेंद्री जे इंद्रीनी विशय सोइंद्री १२ योजन चक्षुनी लाख योजन घ्राणेंद्री ९ जो० फरसेंद्रीनी ९ जो० ॥ प्रश्न ॥ ५४४ ॥ ग्यांना वर्णी कर्म कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ ग्यांनावर्णी कर्म इणने कहीजे प्रथंम ग्यांनावर्णी कर्म तेहनो स्वभा व भेद० आंखिना पाटा समांनछे जिंम आंखे पाटो वांधे तबन जांणेमें किहां जाउंछु मेरे सन्मुख कु णछे इमज जांणेयेणें आंखे पाटानें दृष्टांत ग्यांना वर्णी कर्मनें उदेहोइ जब अणंत ग्यांनचेतना सहित जीवछे पिण ग्यांना वर्णीनें जोंगे शुभाशुभ वस्तुनों स्वरुपजांणि सकेनहीं निजसता उलखणा करी सके नहीं छद्रव्यनागुण पर्याय जांणिसके नहीं तीणने ग्यांनावर्णीकर्म कहीजें १ ॥प्रश्न॥५४५ ॥ दर्शनावर्णीकर्म

कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ दर्सणावरणी कर्म इणनेकहीजे दुजो दरसणावरणीकर्म पडीहारक० प्रतीहार पोलिया समानछे ते राजानो मिलवो चाहेतो पोलिया समझायाविना राजापासजावा नदेइ देषिवा न देई एणें पोलियानें इष्टाते दर्शनावर्णी कर्मनो उदयथाय जब एह वस्तुनो स्वरूप देखिसके नही एतजो न देखे ए वस्तुनोरूप केहवोछे द्रव्य ६ ना गुणपर्याय देषसके नही तीणने दर्सणा वरणी कहीजे २ ॥ प्रश्न ॥ ५४६ ॥ वेदनीकर्म कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ वेदनीकर्म इणने कहीजे तीजो वेदनीकर्मते असिक० मधुलीप्त खड्गधारा समानछे ते मधुलीत षड्गधारा चाटतामीठी लागे पिणविना उपियोग चाटेतो जीभने छेदे तिम वेदनीकर्म संसारी सुखभोगता साताहोई परपरस्वभावे सम्यक्तविना तिन अनुगगे पुदगलीक सुखभोगवता कर्मबधथाइ ते कर्मबधते जीभ छेद भेद तथा जन ममर्ण छेदन भेदन रोग सोग भुख तृण्णादिक असीता भोगवता पर एहनें बेहुनें उदये आत्मीक सुखनिराबाधा पण अणत सुख न होवाद्ये तीणने वेदनी कर्म कहीजे ३ ॥ प्रश्न ॥ ५४७ ॥ मोहणी कर्म कीणने क कहीजे ॥ उत्तर ॥ मोहणी कर्म इणने कहीजे चोथो मोहणी कर्म मद्याक० मद्यपान समानछे जिम

मदिरानो ठक्यो शुन्ना शुन्न वस्तुनो गुणा गुण न जांणे मदोन्मत्त पुरुष मातानें न्नाया पणों जांणे न्नायाने माता पणों जांणे न्नलिवस्तुने पाडुइ जांणे पांडुई वस्तुने न्नलिजांणे विस मोहनी कर्मने उ दये एहवी जीव सुध देव गुरु धर्मनो स्वरुप अशुध जांणे अथवा निजवस्तुने परवसतु जांणे परवस्तु ने निजवस्तु जांणें आत्मीक सुख न जांखे पुदगलीक सुखमे राचे तीणने मोहणी कर्म कहीजे ४ ॥ ॥ प्रश्न ॥ ५४८ ॥ आयुकर्म कीणने कहिजे ॥ उत्तर ॥ आयु कर्म इणने कहीजे पांचमो परं जेहवी जेहवी गति जाती वर्ण गंध रस फरस संठाण जेहवो वांध्यो एहवो रुप पणें आकार थाइ तीणने नांम कर्म कहिजे ॥ प्रश्न ॥ ५५० ॥ गोत्र कर्म कीणने कहिजे ॥ उत्तर ॥ गोत्र कर्म इणनें कहीजे सातमो गोत्र कर्मते कुलालक० कुंन्नकार सरिखोछे जिम कुंन्नकार एक जातीनी माटीना न्यारान्यारा न्नाजन घमे छेटा मोटा न्नाजन उतारे तिम गोत्र कर्मनो स्वन्नावछे जीवनी एक न्नांतिछे अनें जेणें जीवे जेहवो गोत्र वांध्या तेहवो ऊंचगोत्र नीच गोत्र पणों पांमे तीणने गोत्र कर्म कहिजे ॥ ७ ॥ ॥ प्रश्न ॥ ५५१ ॥ अंतराय कर्म कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ अंतराय कर्म इणने कहीजे आठमो अं

तराय कर्म ते भमगारीण कहता भमारी सरिखोछे जिम राजाने किसी पुरुषको भमारी पासे द्रव्यादि दिवायो ते भंडारी देता विचमें अमखल करे देवणद्ये नही तिम अतराय कर्मने उदय जीवनी अण त र्यिता न होवाद्ये छती बस्तुछे पिण वल पराक्रम फोरवानी शक्ती नहोवाद्ये तीणने अतराय क म कहीजे ८ ॥ प्रश्न ॥ ५५२ ॥ आठ कर्म कीतना कारणसे वधे ॥ उत्तर ॥ ४ कारणसे वधे ते क हेछे मिथ्यात्व १ अविरती २ कषाय ३ जोग ४ ए ४ कारणसे आठ कर्म वधे अने अद्ती प्रमाद न्याराकीया ५ कारणे ॥ प्रश्न ॥ ५५३ ॥ प्रथम मीथ्यात्व गुण ठाणो कीतना कारणसे वध पमे ॥ उत्तर ॥ मीथ्यात्व गुण ठाणे ४ कारणसे वध पडे १ मीथ्यात्व २ अवृत ३ कपाय ४ जोग ए ४ कारणसे वध पमे ॥ प्रश्न ॥ ५५४ ॥ ४ गुण ठाणे ५ गुण ठाणे कीतना कारणसे वध पमे ॥ उत्तर ॥ ४ गुणठाणे ३ कारणसे वध पमे अवृती १ कपाय २ जोग ३ ए ३ कारणसे पाचमे गुणठाणे दो य तथा तीन कारणसे वध पमे दोय कारणसु पडेतो । कपाय १ जोग २ ए २ कारणसु तीन कारण सु वध पमेतो कषाय१ अवृत २ जोग ३ ए ३ कारणसे बधपमे ॥ प्रश्न ॥ ५५५ ॥ छठागुणठाणासुं

लेने १० मांगुणठांणासुधी कीतना कारणसे बंध पडे ॥ उत्तर ॥ ठगगुणठांणासूंलेने १० मांगुण ठांणां सुधी दोयकारणसे बंध पडे कषाय १ जोग २ ए २ कारणसे धंबपडे ११।१२।१३ गुण ठांणे एक कारणसे बंध पडे। ते एक शुभ्न जोगसे ७४ मे गुण ठांणे बंधन थी ए कर्म बंधणकी ओल खणा बताइ ते कर्म बंधणो ग्यांनसुं टलेछे ते ग्यांननो स्वरुप बतावे ॥ प्रश्न ॥ ५५६ ॥ ज्ञांन पंच वि धं प्रोक्तं। श्रुत ग्यांन विशेषतः जैन श्रवण मात्रैण प्राप्यते परमं पदं १ मति ग्यांन १ श्रूत ग्यांन २ अवध ३ मन पर्यव ४ केवल ५ मंतेसू श्रुत ग्यांन विशेषत २ ग्यांन ५ मांही श्रुत ग्यांन मुख्यछे। वि शेषछे ॥ उत्तर ॥ श्रुत ग्यांन विशेष किम ते कहेछे। संबिवहारक श्रुत ज्ञांनछे उपदेश समुद्देश आज्ञा इत्यादिक श्रुत ज्ञांनमें लाभ्नें स्वयं स्वरुप परस्वरुप केहवानें समर्थ श्रुत ज्ञांनहीछे अणुयोग व्याख्यांन श्रुतज्ञांननो हीजछे। अणुयोगद्वारे चतारिणाणाइं ठवणांइ ठप्पाया ज्ञांन ४स्थापवा योग्यछे। स्वउपगा रीछे उपदेश रुप नथी जेमति प्रमुख ४ ज्ञांनथी परजीवने उपगार कीधो न जाइ तिण वास्ते परउप गारी श्रुत ग्यांनहीजछे। जे श्रूतग्यांन सुंणता परम मुक्तपद पांमीये ते श्रुतग्यांन मुक्तीनो मोटो नी

मीत कारणने नीकटकारणछे श्रुत ग्यानथी सुणता जीवने सुध रुचि सुध सरधा सुध प्रतिती उपजेछे। वले आत्माऽनुभव निजपर ग्यान श्रूलग्यान सूणताहि प्रगट हुवेछे तेहिज परमपद तेहीज परम विवेकछे इहां कारणने विषे कारजने उपचार कीधोछै मोक्षनो कारण श्रुत ज्ञानछे वले जिण श्रुतग्यांन विशेष षटद्रव्य ए पदारथ सप्तभंगी सप्त नये ४ प्रमाण ४ नीक्षेपा इत्यादि अनेक विचार भाव भेदनी प्ररूपणाछे ते सुणता विवेक उपजे दसवीकालिके कह्यो गाथा सोश्चाजाणइकल्लाण सोच्चाजाणइपावग उभयपिजाणइसोच्चा जसेयतसमायरे उक्तचश्रुत्वाधर्मंविजानाति श्रुत्वात्यजतिदुर्मति श्रुत्वाज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वामोक्षंचगछति तिणवास्ते श्रुतज्ञाननो उद्यम अवस्यकर्वो श्रुतज्ञाननो सयोगजीवने पामवो अत्यतदुर्लभछे उतराध्ययन तीजेअध्ययने-गाथा माणुसविग्गहं लद्धु सुइ धम्मरस दुल्लहा ज सुच्चा पडिवजति तवखती महीसय १ इमजाणी अहो भव्यजीव श्रुतज्ञान सुणवानो तथाभणवानो उद्यम अवस्यकीजे श्रुतज्ञाननो सयोगपामीने पूर्वे पुंडरीकादि गणधर घणाजीवतर्या तथा वर्तमानकाले महाविदेह क्षेत्रमेवीस तीर्थंकरनी वाणीसाभलने घणाजीवतरेछे

अनागतकाले श्रीपद्मनाभतीर्थंकरनी वांणी सांभली द्रढपइन्ना प्रमुख घणांजीवतरस्ये आजपिण जे श्रुतज्ञांनने भणस्ये सांभलस्ये अंतरंगे श्रद्धा रुचि प्रतीत करस्ये ते सुलभबोधी हुस्ये परंपराये मुक्ति पदपामस्ये उतराध्ययन गाथा ३६ माकी जिण वयणे अणुरता, जिण वयणं जे करंति भावेणं, अमला असंकिलगा, तेहुंति परित संसारी १ इत्यादि विस्तार श्रुतज्ञांननो मुख्यतापणो बतायो ते श्रुतज्ञांनतो सम्यगद्रष्टीने होवेछे मिथ्यात्वीने श्रुतअज्ञांन होवेछे तेकारणे सम्यक्त प्रगटथावानो निमितकारण शुद्ध सिद्धांतनो सांभलवोछे तेसम्यक्तनो निमित्तकारण जांणीवो जेभणी श्रुतज्ञाननो सुद्धस्वरूप ओलखवो शुद्धस्वरुप ओलख्यास्युंसुध गतीनीप्राप्तीहोतीहै ॥ प्रश्न ॥ ५५७ ॥ वज्रऋषभनाराच संघेणते कीणने कहीजे ॥उत्तर॥ वज्रते कीलीकहीए ऋषभते पाटो कहीए नाराचते मरकट बंध हाडसुहाडनो जे परस्पर आंत बंधणते मरकट बंध कहिजे एतले एक हाडसु दूजो हाड मील्यो हूवे तेह उपर एक हाडचोफेर पाटीनीपरे होय तिसउपर एक हाडनो कीलो होय तेहने वज्र ऋषभनाराच कहीये ॥प्रश्न॥ ॥ ५५८ ॥ ऋषभनाराच संघेण कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ पाटो मरकट बंध होय कीली नहीं ते ऋ

पन्न नाराच सघेण कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५५९ ॥ नाराच सघेण कीणने कहिये ॥ उत्तर ॥ एक कीली पाटो दोइ नहोय एकलो मरकट वध होय तेनाराच सघेयण कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५६० ॥ अरधनाराच सघेण कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ कीली पाटो न हुवे ते अरधनाराच कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५६१ ॥ किलका सघेण कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ कीली पाटो मरकट वंध ए ३ न होय पीण एक हाम उपरी डुजो हाम मुकी उपरकीलीदीधी होय ते किलको सघेण कहिए ॥प्रश्न ॥ ५६२ ॥ छेवटो सघेण कीणकु कही ए ॥उत्तर ॥ जीसका जुडा जुडा हाम होय नसथाये चमरीसे वध्याहोय किचत ठवको लागता हाम जुदा जुदा होये तीणनेछेवटो सघेण कहीजे ॥प्रश्न॥५६३॥समचोरस सगण कीणने कहीजे ॥उत्तर॥ तेहनासरव सरीरना अवयव प्रमाणोपेतहोई इणदृष्टते जिमपुरुषने पदम आसणबेठाइ जे गोरासू दोईगोमारो अंतर मापीजे जेतलोथाय तेतलो दोइषवानो अवरथाय जेतलाहीजीम णागोम नु जीमणागोमानो अंतर जेतलो मावागोडानु मावागोमानो अंतर ए ४ अस बरोबर थाय ते समचोरस सगण कहीए ॥ प्रश्न ॥ ५६४ ॥ नीग्रोधपरिमन्डल सगण कीणने कहीए ॥ उत्तर ॥ जेनग्रोध

कहिए वढवृक्ष जैसो नाभि उपरला अंगोपांग मनोपेत होइ नाभिनीचेका अंगोपांग छेटाहोय इण दृष्टांते जेसे वडवृक्षउपरसे सुंदर निचे छेटा थुल होये तेदष्टांते नीग्रोहपरिमंडल संठांण कहीए ॥ प्रश्न ॥ ५६५ ॥ सादियो संठांण कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ नाभीनीचेका अंगोपांग मानोपेतहोय ॥ नाभी उपरका अंगोपाग छेटाहोये तेहेने सादियो संठांण कहिजे ॥ प्रश्न ॥ ५६६ ॥ वावनो संठांण कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जेहनाअंग नोपटछेटाहोये वावन अंगुलउंचोहोये तेहने वावनो संठांण कहीए ॥ प्रश्न ॥ ५६७ ॥ कुवज संठांण कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जेहनी हृदये तथा पिठनीकली हुवे तीणने कुवज संठांण कहीए ॥ प्रश्न ॥ ५६८ ॥ हुंमकसंठांण कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जे रुंम मुंम सरीखो होय पुराअवयव नहीसे तेहेने हुंमक संठांण कहीए ॥ प्रश्न ॥ ५६९ ॥ धर्माधर्मी किणने कहीजे ॥ उत्तर॥ त्रसजीव हणवाना त्यागकीना ५ थावरने हणवारो आगाररारव्यो तेहने धर्मा धर्मी कहीजे तेश्रावकछे ॥ प्रश्न ॥ ५७० ॥ संजती केणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जीवनी जतनाकरे ते हने संजती कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५७१ ॥ असंजती कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जीवनी घातकरे तेहने

असजती कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५७२ ॥ सजता सजती कीणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ ४८ प्राणकी ज तनाकरे ४ प्राणने हणे तेहने सजता संजती कहीजे ॥ प्रश्न ५७३ ॥ व्रतीकेणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ पापना पचखाणकरे तेहने व्रत्ती कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५७४ ॥ अवृती कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ पाप ना पचखाण नकरे तेहने अवृत्ती कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५७५ ॥ वृतावृती कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ देस थकी पचखाणकरे तेहने वृतावृती कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५७६ ॥ चारीत्रीयो कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ चारीत्रपाले तेहने चारीत्रीयो कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५७७ ॥ अचारीत्रीयो कूणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ पांचे चारीत्र माहेलो एकहीनथी तेहने अचारीत्रीयो कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५७८ ॥ चरिता चरित कूणने कही जे ॥ उत्तर ॥ श्रावकने कहीजे ॥प्रश्न५७९॥ दान कूणने दीयाधर्महुवे ॥ उत्तर ॥ साधूने श्रावकने एदो यने दीयाधम एकात नीर्जरा हुवे ॥ प्रश्न ५८०॥ कूणने दानदीयां अधर्महुवेछे ॥उत्तर॥ अधर्मने हस्याना करणहार चोरीनो कलानो करणहार मृषावादीसेवे परदार एताने दीया अधर्म हुवेछे॥प्रश्न५८१॥श्रावक ने दीया धर्महोय किवा अधर्महुवे ॥ उत्तर ॥ पमीमाधारी श्रावकनेदीया नीर्जराहुवे ॥ प्रश्न५८२॥ कीसां

दांनदीया धर्म हूवे ॥ उत्तर ॥ अचित दांनदीयां धर्म उपगरण दीयां ए २ दीनां धर्म हूवे ॥प्रश्न ५८३॥
किसो दांनदीयां अधर्म हूवे ॥ उत्तर ॥ अधर्म उपगरण शस्त्रादीक ए दोय दीयां अधर्म हूवे ॥ प्रश्न ॥
॥ ५८४ ॥ गृहस्थने धर्म गूरु कहीजेके नथी ॥ उत्तर ॥ गृस्थने गूरु न कहीजे इण कारणसे २७
गुणमांहीलो १ बीगुण नथी तीणांसु गृहस्थने धरम गुरू न कहिजे ॥ प्रश्न ॥ ५८५ ॥ आचार्जना
कीतना भेदछे ॥ उत्तर ॥ ४ भेदछे नांम आचार्ज सील्प आचार्ज कला आचार्ज धर्म आचार्ज ॥
प्रश्न ॥ ५८६ ॥ साधुजीने ४ आचार्ज मांहीने किसा आचार्ज कहीजे ॥ उत्तर ॥ धर्म आचार्ज क
हीजे ॥ प्रश्न ॥ ५८७ ॥ गृहस्थने ४ आचार्ज मांही कीसा आचार्ज कहीजे ॥ उत्तर ॥४ आचार्ज
ही कहीजे ते कीम कोइनो नांम आचार्ज कहीजे लीखणो शीखावे तेहने शील्प आचार्ज कहीजे
अस्त्रीनी ६४ कला । पुरुषनी ७२ कला शीखावे तेहने कला आचार्ज कहीजे धर्म शास्त्र शीखावे
तेहने धर्म आचार्ज कहीजे ॥प्रश्न॥५८८ ॥ गृहस्थने धर्म आचार्ज कहीजे कीवा न कहीजे ॥उत्तर॥
गृस्थने तो धर्म आचार्ज नहीं कहीजे परंतो श्रावकने कोइ कारणसे धर्म आचार्ज कहीजे कीम

श्रावक धर्म शीखामण देवे तेहने धर्म आचार्ज कहीजे उववाइ सूत्रमें अवमजी सन्यासीना शी ष्य सथारो करता थकाएसो उचारकीयो अमरस ममधम आयरीया इम कह्यो ते न्नणीजाणीजे श्रा वकने धर्म आचार्ज कहीजे ॥ प्रश्न ॥ ५८९ ॥ श्रावक श्रावकने वंनणा कर्णी कीवा न कर्णी ॥ उत्तर ॥ वनणा नही कर्णी॥ कींवू नही कर्णी ॥ उत्तर ॥ कल्लाण मगलं देवीय चेइय ए ४ सवदना गु ण ग्रहस्थमे श्रावकमे नथी ते कार्ण वनणा न कर्णी आतम कल्याणना कर्णे वाला साधुजीने कह्याछे परतो ग्रस्थने नथी कयो तिजो मगल साधुजीनो कयो परतो ग्रहस्थने नथी कयो देवना पचन्नेदामे धर्मदेव साधुजीने कयो परत धर्म देव ग्रहस्थने नथी कयो चेय पचज्ञानना धरण हार साधुजीने कह्या परत ग्रहस्थने नकह्या इण कारण ग्रहस्थने वनणान कर्णी ॥प्रश्न५९०॥ जात्रा कूणने कहीजे॥उत्तर॥ अनेरे देसे जायवो तेहने जात्रा कहीजे ते यात्राना दोय न्नेदछे इहलोक जात्रा परलोक जात्रा इहलो क जात्रा ते गावत्रे जायवो १ परलोक जात्राते परगती जायवो २ परगती जात्राना २ न्नेद शुन्नगती जात्रा१ असुन्नगती जात्रा२ जात्राना२ न्नेद धर्म जात्रा १ अधर्मजात्रा२ धर्मजात्रा कूणने कहीजे॥उत्तर॥

जीवघात थकी नीवर्तें जीवनी जतना करे तेहने धर्म जात्रा साषग्याता सूत्रमे थावरचा जीने सुखदेव जी पूछ्ो तव संजम जात्राकही परंत परवत ढोकणाया यात्रा न कही अधर्म यात्रा कुणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जीवघात करणी परबतादीक ढोकणा जीणने अधर्म जात्राकहीजे ॥ प्रश्न ५०१॥ जग्यना कीतना भेदछे ॥ उत्तर ॥२ भेदछे संसार जग्य१ आतमजग्य२संसारजग्य कुणने कहीजे ॥उत्तर ॥ अग नीमे घृत धान महिष मींढा होमे तेहने संसार जग्य कहीजे आतम जग्य कूणने कहीजे ॥ उत्तर ॥ जीव रुपीयोकुंम ध्यांनरूप अगनी अष्टकर्मरूप काष्टने पंचेंद्रीदमणरुप वायरेकरीने कर्मकाष्टनेजाले तेहने आतम जग्य कहीजे कीसाजगसे तीरवो डुववोहोय ॥ उत्तर ॥ संसारजग्यस्ये डुबणोहोय आ तमजग्यस्ये तीरणोहोय ॥ प्रश्न ॥ ५०२ ॥ वेक्रेसरीर कयो बेक्रेसमुदघातकही एकना २ भेद कीम क हीजे ॥ उत्तर ॥ सरीरनाम कर्मने उदेकरीने वैक्रीय पुदगल ग्रहिने सरीरपणे परगमावे पुदगलांकरीने वण्योसरीर तेकारकसे वेक्रेसरीर कहीजे वेक्रेसमद्घात सरीरथकी आतमप्रदेस वाहीरकाढे पुदगलग्र हीने अनेकरुपवणावे ते कारणेस वेक्रे समदवात कहीजे यांदोयानो तातपरजय असोजांणीजे सरी

रतो पुदगलछे ५ वण २ गध ५ रस ८ फर्स एवपुदगल द्रवकरीनीपनोछे समदघात आत्मप्रदेसछे ॥ प्रश्न ॥ ५९३ पचमाकालमे कीतनाआचार्ज माठा आचारनाधणी कीतनाऊसी ॥ उत्तर ॥ ५५कोम ५५ लाख ५५ हजार ५ से ५५ एटला जीनआग्याविरुधहोसी पंचमाकालमे आचार्ज अथ आ यरीयाणपन्न पणपन्नहोइ कोमी लखाउ कोमि सहस्सकोमी सएय तह एतीचेव एपाठमहानसीतना पचमाअध्ययननोछे ॥ प्रश्न ॥ ५९४ ॥ पृथ्वीउपर कीतनादीपने कीतनासमुद्रछे ॥ उत्तर ॥ इणपृथ्वीउपर असख्यातादीपने असख्याता समुद्रछे पीणद्वीपसमुद्रनो ५५नाम सास्त्रमा चाल्याछे तेहना नाम कहेछे जबूद्वीप १ लवणसमुद्र २ धातकीषम ३ कालोदधि समुद्र ४ पुस्करवरद्वीप ५ पुस्करवर समुद्र ६ वरु णाद्वीप ७ वरूणसमुद्र ८ खीरद्वीप ९ खीरसमुद्र १० घृतद्वीप ११ घ्रतसमुद्र १२ इक्खुवरद्वीप१३ इक्खुवरसमुद्र १४ नंदीसरद्वीप १५ नदीसरसमुद्र १६ अरुकवरद्वीप १७ अरुकवर समुद्र १८ कुंम लद्वीप १९ कुमलसमुद्र २० रुचकद्वीप २१ रुचकसमुद्र २२ आसणनामे द्वीप २३आसणनाम स मुद्र २४ वस्त्रनेनामे २५ गंधनेनामे २७ उत्पलनेनामे २८ तिलकनेनामे २९ पृथवीनेनामे ३० नव

निधाननेनांमे १४ रत्ननेनांमे द्वीपसमुद्र ए ५३ नामतो जीवाभिगम सूत्रमे कह्याछे इण उपरांत असं ख्याताद्वीपने असंख्यातासमुद्रछे ॥ प्रश्न ॥ ५९५ ॥ पुष्करवरद्वीपनेवीपे वसे जेमनुष्यते केतला जोज नउगतो सूर्यदेषे ॥ उत्तर ॥ पुष्करवरद्वीवना मनुष्य इकवीसलाख चौतीस हजार पांचसे तीस जोयण देखे सूर्यपीण एतलो प्रकासकरे ॥ ५९६ ॥ जीव उपजेतीवारे पहिलेसमे कीसायोगसूं आहारलेवे ॥ उत्तर ॥ जीवउपजतीवेला पहीलेसमे कारमण कायजोगसुं आहारलेवे तीवारेपुछे जेतलातांइ शरीर नीपजेनंही तेतले उदारीक मीश्र तथावेक्रियमीश्र सुं आहारले ॥ प्रश्न ॥ ५९७ ॥ लोकांतीक देव तांना विमाण संख्याता जोजननाछे अथवा असंख्याता जोजननाछे॥ उत्तर ॥ लोकांतीकदेवताना अ संख्याता जोजन सत सहश्रना वीमांणछे ॥ प्रश्न ॥ ५९८ ॥ केवली समुदघात वाला एकसमकाले केतला ऊवे ॥ उत्तर ॥ केवलीसमुद्घातवाला समकाले उत्कष्टा नवसो ऊवे ॥ प्रश्न ॥ ५९९ ॥ समु छीम मनुष्यएकसमे जगन्य केतला उपजे उतकृष्टा केतला उपजे ॥ उत्तर ॥ समुछीम मनुष्य जघन्य एकआदि पीणउपजे असंख्याताभी उपजे ॥ प्रश्न ६०० ॥ मनरूपी कींवा अरुपी ॥ उत्तर ॥ द्रव्य

मन ते रुपी अने भाव ते अरुपी ॥ प्रश्न ६०१ ॥ नपुसक मोक्षजाय किंवा न जाय ॥ उत्तर ॥ की
त्य नपुसक मुक्तगत जाय पीणजन्म नपुसक मोक्ष न जाय ॥ प्रश्न ॥ ६०२ ॥ जन्म नपुसक सम
कीनपामे किवा न पामे ॥ उत्तर ॥ जन्म नपुसक कोइकपामे ॥ प्रश्न ॥ ६०३ ॥ सीध्दजीवानी अ
वगाह्णामाहे नीगोदीयाजीवछे कीवा नथी ॥ उत्तर ॥ सीधजीवानी अवगाह्णामाही नीगोदीया जीव
अनताछे सुहमाय सव लोगमी एगदेसेय वायरा तथा पतेय तरुमुत पचवी पुढवाइणो सयल लोए
॥ प्रश्न ॥ ६०४ ॥ प्रतेक वनसपतीनो सरीर सहश्र जोजननो कह्यो तेजोजन कीसे आगुलो॥ उत्तर॥
प्रत्येक वनस्पती कमलादीकनु सहस्र योजन काजेरो देहमान कह्यो ते उछेद आगुलनो कह्यो अने
पद्मद्रहादीकने वीषे जे कमलछे ते मोटाछे अने पृथ्वी कायरुपछे पिण वनस्पतीकायनह्। ॥ प्रश्न ॥
६०५ ॥ तथा भरत ऐरवत महावीदेह पूर्व तथा पश्चिम एक्षेत्रनेविषेदिन मानसरीपा हुवे किवा अ
धीका ओछानहुवे ॥ उत्तर ॥ सर्वक्षेत्रनेवीषे दिनमान तथा रात्रमान सरीपा हुवे अधीका ओछानहुवे सूर्य
मन्डलनी अपेक्षाइ करी ॥ प्रश्न ॥ ६०६ ॥ परम अवधी ज्ञाननोधणी केतलोदेखे कीसा जीवने हुवे

॥ उत्तर ॥ गथा वद्धंते ॥ पुण बाहि, लोगढं चेव पासई, दवं सुक्रमयरं परमोही जाव परमाणुं १ परमोही णाण विउं, अवस्सगतस्स केवलंनाणं, अंतो मुडुत मितेणं, परमोही नांणनिद्दिठो २ अ स्यार्थपर्म अवधि ज्ञांननाधणीने ज्ञांन वधतो लोगसर्वद्रव्यदेषे सुक्ष्मतर सुक्ष्मतम यावत परमाणुंदेषे व लिपरम अवधि ज्ञांनवंत अवस्ये अंतर्मुहूर्ते केवल ज्ञांनपांमे एहवा परमावधिज्ञांनकह्यो ॥ प्रश्न ॥ ६०७ ॥ चंद्रमा दक्षिणचारी उत्तरचारी कीसीरिते हुवे छे श्रीसूर्यना मांम्हलातो १८४ छे अने चंद्र मानातो १५ छे तेमाटे श्रीसूर्यतो छमासे उतराचारी दिक्षणचारी हुवे पीण चंद्रमा कीसीरीते हुवेछे ॥ उत्तर ॥ चंद्रमाजीपिणसूर्यनीपरे दक्षण उत्तरचारि मकरार्किने हुवेछे ॥ प्रश्न ॥ ६०८ ॥ तथा अ सालीयो केतलाइंद्री ॥ उत्तर ॥ आसालीयो पांचइंद्री कह्यो अथ अजीवमतनी चरचा लीख्यते ॥ प्रश्न ॥ ६०९ ॥ अजीवमत कीणने कहिजे ॥ उत्तर ॥ प्रारंभ पंचनाणी तीर्थंकरदेव महाराज २४ जातरा धांनमे तथा इणउप्रांत अनेक जातरो धांनहुवेछे तीणमे तथाबीज फलसुं न्याराहुवापछे त था तलावकापाणीमे तथा प्रत्येकवनस्पतीमे प्रमुख ९ ए ठिकाणामे केवलज्ञांनी एकेंद्री जीव बताया

छे अजीवमती इसमेजीव नथीमानता ते भगवंतनी अग्यावरेछे जेनी साधु नामधरावे तथा श्रावक नाम धरावे ए छीकाणामे भगवत जीवकह्याहे एजीवानी रीभ्याकरे अनुकपाकरे ते जीवाने बचावणको उपदेसदेवे ते उपदेसदेणेवाला तथा बचाणेवालासाधु अथवा श्रावक भगवत महाराजकी अग्यामेछे एवचनाने उथापे ते एकतमीथ्याती जाणवा केइवीज फलथी न्याराथया पछे वीजमे जीवनमाने तेह ने सदेहण प्रकारसु दिखावे तेलीखीयेछे प्रथम आहारका सदेह तेहनु ॥ उत्तर ॥ सूगमायगका श्रुत स्कंधमे दूजा अध्ययनमे आहार परिज्ञानामा अध्ययनमे अग्रबीजादि ४ जातिना वीजनें छदिसना आव्या पुद्गलनो आहारकरे और छहीकायके पुद्गलोका आहार जावत् पुढवी सिणेह माहारेति इ त्यादि पाठदेखतातो असा निश्चेनही दीयाहे अर्के वीजादि पृथ्वी उपर जलकाही आहारलेइ इण न्याय पवनादिकना आहार वीजने पिणछे किसीकू असा सदेह उपजे ५ थावरमे एकजीव कह्या नही सख्याता असख्यता अनता जीवकह्याहे तो वीजमें १ जीवकिम मानिये तेहनो ॥ उत्तर ॥ पता दि ७ स्थानमे वीजमे एक एक जीव पन्नवणा सूत्रमेकह्याहे तेहनी निश्राये ओरजीव उपजे जिम

लाखनीगोली अग्निसूं तपायने तिलांमे नाखेतोतील लाखनीगोलीसुं चिकुटे तिम एकजीवनी निश्राये संख्याता असंख्याता उपजे छे ते भणी एक जीव भी कहीजे संख्याता असंख्याताभी कहीजे एणें न्यायें एक जीव कहतां संख्याता असंख्यताःनो पाठ विघटे नहीं निश्राये भूत जीव चव्या एक रह्यो ते नेगम नयनेमते अतीत परजाय अपेक्षाइ संख्याता असंख्याताना पाठ विरुद्ध न थाइ सर्वज्ञ व चन स्याद्वादछे अणंत नयात्मकछे जिसका हेतु पूछ्ज्यो पन्नवणा जीमे वणस्पतीमे सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा सिय अणंता एहवो पाठछे वले इमकह्यो जह्एगो तछ नियमां असंखेज्जा अपज्ज त्ता तोसिय संखेजानो पाठकिम संभवे इणन्याय देखतां एकने संख्याता कहतां नेमनय पूर्वपरजाय अपेक्षाइं विरुध नहीं एहना परमांण प्रीछज्यो पन्नवणा१८ मांपदमा काय स्थित पदमें सागारो वउत्ता अणगारोवउत्ता उपयोगनी कायस्थित अंतर्मुहूर्तनी कही केवल ग्यांन केवल दर्शननी कायस्थित एक समयनीछे प्रथम समय ज्ञांन बीजे समय दर्शन दर्शन पूर्व ज्ञांनछे ते एक समयनी स्थिति परं ईम न कही ४ ग्यांन ३ अग्यांन ३ दर्शननी कायस्थित अंतर्महूर्तनी केवलज्ञांन केवलदर्शननी

इम एकसमयनीछे इमतोनथीकहीजे कारणें सग्रहवचनअपेक्षाई १ समयनेअतर्मुर्हूर्तकहिजे इण प्रमाणेनयगमसग्रहअपेक्षाइएकने सख्याता कहता विरुद्धनही कोइपूछे अनुयोगद्वारे प्याखाने अ धिकारेदोइनें जगन्य सख्याताकह्या एकनेंकिमनकह्या तेहनो उत्तर सूत्रनोप्रमाणउल्लखज्यो विशेष अविशेषपणे सूत्रमेंविस्तारकीधो जिम किणें श्र ठामेविशेषशब्देंसवेदीनी काय स्थित मनयोगी वचन योगी १ समयकही अविशेषशब्दें केवलग्यानी एकसमयनीस्थितिने अतर्महूर्तकही इणप्रमाणे एकने सख्याता कहीता विरुद्ध नही पछे केवलीगम्यछे १ इणन्यायप्रमाणे तथा परपराविहारथीपिणजा णीजे कोइपूछे परंपरायें नमाना केहनी परपराय नमानीजे इम कहेतेसत्य परंसूत्रपाठमें अर्थमे खुलास होइते परपरा नमानीजे सूत्रअर्थपाठमेंनथी खुल्यो ते परपरा मानवायोग्यछे कोइपूछे वीजमेंजीव किसा सूत्रनापाठ अर्थमें कह्या सूत्रपाठकहेछे इणसूत्राकेपाठ मालुमहोइछे वीजमेंजीवप्रत्यक्ष हे इरियावही पडिकमता वीयकमणे कोइ हरया वीजसदहे ते सदेहटालणजणी गणधरेंहरीयकमणे भिन्नकह्या इणपाठनी निश्चयेवीजमें जीव सर्दहीजे तथा आवस्यकमें वीयक्रोयणहरियक्रोयणाए हरिया

बीज हरियन्नोयणाएकह्या ते वीयन्नोयणाएकिसा बीजकह्जे तथा दशवेकालकचोथे ॥ अध्ययन ॥ वीयेसुवा वीयपइठ सुवा हरियेसुवा हरियपइठेसुवा इहांपिणवीज हरि न्निन्नपणे कह्या तथा दशविकालिक अध्ययन पांचमे उदेशैमे गाथा सम्मदमाणी पाणाणी वीयाणी हरियाणिय इहां हरीवीज न्निन्न पणों कही तथा उत्तराध्ययनमें अध्ययन गाथा ॥ वीएसु हरिएसु वा ॥ इत्यादि ठांम सुत्र पाठ देखतां बीज सचित जांणीजे कोइवीज हस्या नीरूढकरे तेहनाप्रमांणसूत्रथीलिखिएछे जिणवंदणवेला पांच अन्निगमसाचव्या तिहां सचिताणं दव्वाणं विउसरणयाए तेहना अर्थ टीकाकारें पुप्फ तंबोल कह्या ते तंबोल इलायची कंकोल प्रमुखहस्या संन्नवता दीसेनथी इणप्रमांणथी बीजसचित जाणीजेछे तथा न्नगवती सूत्र सतकमा उद्देशे सोमिलपूछ्यो ज्ञाताअध्ययन ५ में सुखदेवसन्यासी थावच्चा आजार्यनें पूछे मासा कुलछा सरिसव न्नक्खेया ते पाठघणोछे तिहांपिण शस्त्र परिणत शस्त्र अणपरेणित कह्या इणपाठनेंप्रमांणे बीजसचित जाणिजेछें तथा उत्तराध्ययन १७ में अध्ययन गाथा ६मी ॥ समदमाणी पाणाणी, वीयाणि हरियाणिय, इणप्रमांणे सचितबीज जांणिजे तथा एसान्न

र्म ऊपजे हरिद्रोवादिकनें कहजे तोहरी १ नाम ठाम ठामकह्या कदमूल खध शाखा प्रमुष जुदा क्योन कह्या इणप्रमाणे हरिमें कदादि ए वोलसमाया वीजजूदाकह्या ते पाठने प्रमाणें वीजसचित कह्याजाणिजे ए ठिकाणें सूकापछे जीवनथी तेमणी हरितकायकही वीजमाहसूकापछे जीवछे ते मणो वीजजुदा कह्या इणप्रमाणे सचितवीज सरदहिजे पछे सर्वथा वचन प्रमाणछे तथा ए सान्नमकपजे एसावीजमे कठिनपणा कह्याहें कदापि ए ठिकाणेकेजीव चविगए सूख्या पछे वीजमे जीवरह्यातो वीजमे कठिन पणा क्याहे तेहना उत्तर कठिणपणाकी सर्वज्ञ जाणे आपणे तो आगम वचनप्रमाण कस्यो चाहिजे आगममे पूर्वोक्त प्रकारेनामठाम कह्या ते प्रमाणकस्यो जोइजे तथा तलाइके पाणीमे कठिनपणा कोणछे जो सीत तापादिक चोपदना मल मूत्रना उपद्रव्य होइ सचितपणेरहेंते निर्यूक्तिकरीजोइजे तथा ओरपिणघणेंठामि निर्युक्तीकरी जोइजे इम वीजनी सचित पणानी वक्तव्यताकही पन्नवणा प्रथमपद गाथाकही १ योनी भूए जीवे वक्कमइ सोवा अवन्नोवा इत्यादि प्रमाणे वीजसचित जाणजो ॥ प्रश्न ॥ ६१० ॥ ४ नीखेपा ७ नीखेपामाहे वदणीक नीखेपा

कीतना अवंदणीकनीषेपाकीतना ॥ उत्तर ॥ ४ नीषेपाना नांम कहेछे नांम १ थापनां २ द्रव्यना ३ भाव ४ ए ४ नीक्षेपाकह्या ते विस्तारसुं कहेछे हिवे प्रथम नाम निक्षेपो कहे छे जेआकारछे हितगुण रहित वस्तुहोइतेहनोनामगुण सहित सरिखी वस्तुनोदीधो ते नांम निक्षेपोकह्यो जिम लकमीनो नांमजीवदीधो तथा कालीमोरीनोनांम सापदीधो ते नांम निक्षेपो तथा जिमकोइ गोपाल दारकनो इंद्र एहवोनामदीधोपिणते नांमनो गुण सुधरमीसभानेविषेबतेंछे३२लाख विमाणनी ईश्वर्यताकरि संयुक्त हें तेहनें घटे पिण दरिद्री ग्रामीणना वालकनें न घटे तेमाटे अर्थसून्यछे तथा तेइंद्रनावीजापर्यायनांम मघवा१पाकशासन२ सक्र३ सहश्राक्षी ४इत्यादि नांम गोपालदारकनेंविषे घटेनही एतला नांमतो भाव इंद्रमें संभवे पिण निर्गुण नांमने विषे भावनघटे पिण गर्व गहली माताये मोहांध थया कुलचित्र थकी आपणां मननी अभिप्राये नांम इंद्रीदीधो तेनांमजे शब्दार्थ ते ऐश्वर्यता तेमांहिनथी तेभणी शब्द नयपेषितां तेहनें इंद्र नमाने इतिनांमनिक्षेपो १ वीजोथापनानिक्षेपो तेहनो अर्थकहेछे भावरहित गुणरहित होई पिण भावपणानो अभीप्रायकल्पीने थाप्योहोइ ते थापनानिक्षेपो कहिए एतले काष्टपाषणनी मूरति

अथवा चित्रामकरी हाथी घोडानो आकारकीधो तेहने थापनानिक्षेपो पिण ते थापनाना गुणतेमाहि नथी ते इमकाष्टपाषाण चित्रामणनीगायने दुग्धदान गुण नही इत्यादिहेतुकरीने सरदही ज्योथापना निक्षेपामे भावार्थकहता जे वस्तुनी थापनाछे तेहनो अर्थ तेमाहि नथी प्रयोजन नसरे तेभणी शब्दन यथापने थापनामाने पिण गुणनेकहे जिम इंद्रनी मूरतिवणावी मस्तक मुगट पहिरावी कोट हार काने कुंडल वज्रायुध हाथसुदर वस्तविभूषीतकरी इंद्रकरीथाप्यो तेहनी ८४हजार सामानिकदेवता सेवा करता दीसे नही देवीनी भोगासबधी इछापूराय नही ते भणी गुणविना थापना मोहदसानो विकल्पछे ते शब्द नयकी अपेक्षाये ते थापना भावसुन्यछे ते थापना निक्षेपोकहिए२सेपअणुजोग द्वारसुत्रथी समजिलेवा॥ प्रश्न॥६११॥सातनये जीवऊपर कीमऊतारणी॥उत्तर॥सातनये जीवऊपर इणरीत ऊतारणी नैगमनयनेंमते प्रजाय प्राणसहित सरीरने जीवकहे तेशरीरमाहि धर्मास्तिकाय देशप्रदेश एवअधर्मास्तिकाय देशप्रदेश२ आकाशास्तिकायदेश १ प्रदेश २ तथा पुदगल प्रमुख अजीवनाभेद शरीरावगाहणाछे ते जीवने गि णया १ अथ संग्रहनयनेमतें असंख्यात प्रदेशावगाहणावालानें जीवकहे इहा आकाशटाल्यो धर्म १

अधर्म २ तथा तेजसशरीर संबंधी पुदगल जीवमें गीएया २ तिवारे विवहार नयवालोकहे वासना विप यादिकने लेवेछे जेजीवछे एणें इंद्रीजीवमेंगिणी अनेंमोटा पुदगल टालदीधा द्रव्यलेश्या द्रव्ययोग मनप्रमुख जीवमें गिणलीधा कारणें इंद्री लेश्या जोगजीवथी न्याराछे पिण जीवनो विवहारछे इंद्री लेश्या जोगना व्यवहार देषी जीवजाणीजेछे तेम्नणी विवहार नयनेमते इंद्री लेश्या जोग जीवमें गिएयां ३ तिवारे ऋजुसूत्रनयनेमते उपयोगनें जीवकहे इणनयनेमते लेश्या इंद्री वासनाप्रमुख सर्व पूदगल टालदीधापरं सुध तथा असुध उपयोगने जीवकहे ग्यांन तथा अग्यांन बेऊनें जीवकह्यो जे कारणे अग्यांनमें मिथ्यात्वमोहनी कर्मनी वर्गणां मेली जीवमे गिणलीधी ते ऋजुसुत्रनयरो वचनछे ४ तिवारे शब्दनयवालोजीव शब्दनो अर्थमिले तेहनें जीवकहे अर्थ जीव जीवत जीवेस्सइ पूर्वेजीव्या अबजीवहे आगेंजीवस्यें एहवो अर्थसंम्भवे तेहनें जीवकहे इणें द्रव्यआत्मानें जीववतायो आत्माना जेगुण सदाजीवेछे तेम्नणी जीवकहेछे इणेंतेजस कार्मण तथा आयूकर्मना पयोगसा पुदगल तथा परगुणते जीवनां अनादि संगीते जीवमेंगिणलीधा एशब्दनयनो वचनछे ५ तिवारे समभीरूढ नयवा

लो कहेछे द्रव्यआत्मामें परगुणपिणछे तेजीवमे नागिणिज्ये सूत्रस्वरूप सता जेणेंलखी आत्माना स्वद्रव्य १ स्वक्षेत्र २ स्वकाल ३ स्वभाव ४ निजगुण रमणरूप सम्यक्तदृष्टि अनुभव आस्वादित मोह गृथलना रहितहोइ तेहने जीवकहिजे एणे क्षायक सम्यक्तप्रमुखने जीवकह्यो एसमभिरूढ नय नो वचनछे ६ तिवारे एवम्भूत नयवालोकहे अणंतग्यान अणतदर्शन सूद्रुप चेतन कर्मरहित तेहने जीवकहे एणें नयनेंमतेंतो सिद्धने जीवमाने निश्चेजीव सिद्धहोए एवम्भूत नयरोवचनछे ७ ए ७ नय जीव उपरउतारी ॥ प्रश्न ॥ ६१२ ॥ सातनय धर्मउपर कीमउतारणी ॥ उत्तर ॥ सातनय धर्मउपर इणरी तउतारणा नैगमनयने सर्वधमने धर्मकहे जे कारणे सर्वपाखंमीजनछे जेतला धर्म चाहेछे एहनीवाछ धर्म्म करवानीछे एणे न्यायेकरी सर्वधर्म्मने धर्म्मकहे तेठाणायगने १० मेठाणें कह्या दसपणत्ता तज हा गामधम्मे १ नगरधम्मे २ कुलधम्मे ३ गणधम्मे ४ देशधम्मे ५पाखमधम्मे ६गिएहधम्मे ७ सुय धम्मे ८ चरितधम्मे ९ अत्थिकायधम्मे १० इहा गामधर्म्मे १ नगरधर्म २ इत्यादिवचननैगमनयरो जाणिजेछे असरूपनें धर्मकहेछे एवनैगमनय१ हिवे सग्रहनयवालो कुलधर्म्मने धर्मकहेछे जेवमेरा आ

दस्योते धर्मएणेंन्यायनें मतें आणाचारगेम्त्या पिण कुलाचारनें धर्ममांने तेमेंअधर्मकुलाच्चार पिण धर्म मांनलीधो एसंग्रहनय २ विवहारनयनेंमतें सुखनोकारणते धर्मजे डुषथीधरीराखे धर्मइणन्यायनेमते पुन्य करणीनें धर्मकहे एविवहारनयनोवचन ३ ऋजुसूत्रनयवालो उपीयोगसहित वैरागरूप परिणामहोइ ते हनें धर्मकहे इण न्यायनेंमते यथाप्रवृतिकरणनां परिणांम प्रमुखसर्वधर्ममे गिणया इसोउदासीनतारूप परिणांम मिथ्यात्विने पिणथाइं ऋजुसूत्रनयरो बचनछे ४ हिवें शब्दनयकहेछे शब्दनयवालो सम्यक्तनें धर्ममांने सुयधम्मे १ चरितधम्मे २ एवचन शब्दनयरोछे सम्यक्त धर्मनोमूलछे संसारथीबूम्तजीवनें धरि राखेते धर्मकहे एअवृतीसम्यगदृष्टीनें पिणथाइं एशब्दनयरो वचनछे हिवेंसमभिरूढ नयवालो चारित्र प्रमुखउपादेयवस्तुनें ध्यावेतेहनेंधर्मकहे परवस्तुथीविरक्त इंद्रीविसय अभिलाषारुप हेयवस्तुनो त्यागवोते साधकपदछे तेहनें धर्मकहे एणें विवहारत्यागनें धर्मकहे एसमभिरुढ नयरोवचनछे ६ हिवें एवंभूतन यनेंमतें तेजीवना मूलस्वभाव तेधर्मवरगणाथी भिन्नथाइवोते धर्मशुकलध्यांनरूप क्षपकश्रेणि चढवो ते कर्म क्षयनाकारणते धर्मकहेआत्मा उज्वलपणा थाइते धर्मकहेए एवंभूतनयरो वचनछेए ७ नयधर्म

उपर लगारी ॥ प्रश्न ॥ ६१३ ॥ सातनयसिद्ध उपरकीम उतारणा ॥ उत्तर ॥ सातनयसिद्धउपर इमउता रणानगमनयने तो सर्वजीव सिद्धसमानछे सिद्धथावानीशक्ति सर्वजीवमेछे परद्रव्यआत्मा सर्वजीवनी सरिखी तेनणी आगमि प्रजायलेइनें तथाद्रव्य आत्माना असख्यात प्रदेशपणा लेइने सर्व जीवनें सिद्धकहेतेनेगमनय १ समहनयवालो द्रव्यार्थिक नयरी अवस्था अगीकारकरी सर्वभव्यजीवनी सता सिद्धरूपछे सिद्धजीव १ ससारीजीव २ द्रव्यएकछे द्रव्यआत्मामे भिन्नतानही कर्मभेदछे पर द्रव्यभेद नही एकजाति सव भव्यसिद्धस्ये ए समहनयरो वचनछे २ हिवे विवहारनयवालो विद्या लवध प्रमुख गुणसाधीने वाह्यतप प्रमुखकरी कार्यसिद्धकीनो तेसिद्धकहिजे जिमअमुको विद्यासिद्धछे तेवादर वस्तु सिद्धकीनी विवहारसिद्धए विवहारनयनरो वचनछे ऋजुसूत्र नयवालो सम्यकदृष्टीने सिद्धकहे जेभणी सिद्धसना आत्मारी उलखीछे अनेध्याननो उपियोग वर्तेछे सिद्धअवस्थामे वर्तमान समय सिद्धसमान ध्यानेछे इणन्याय ऋजुसूत्रनये सम्यकीने सिद्धकहे एऋजुसूत्रनयरो वचनछे ४ शब्दनयवालो जे शुक्ल ध्यानरूप परिणामारूढथयो गजसुकमालनीपेरे निजगुणसिद्धकीनो तेहरूपध्यानने सिद्धकहे सर्वकार्य

सीद्धकीधाजो निजगुणध्यावेछे तेणेंए शब्दनयरो बचनछे५ हिवें समभिरूढनयवालो केवलग्यांन केवल दर्शन १३ मे १४में गुणस्थांनवरतीमुक्तीनें सन्मुखहुवा शेलेशी अवस्थानें सिद्धकहे एसमभिरूढ नय रोवचनछे ६ हिवे एवंभूतनयवालो सकल कर्मषपाय लोकनें अंते विराजमांन अष्टगुण संपन्न तेहने सीद्धकहे ए एवंभूतनयरो बचनछे ७ ए सिद्धउपर ७ नयलगावी ॥ प्रश्न ॥ ६१४ ॥ सातनय ज्ञांनउपर कीमउतारणा ॥ उतर ॥ सातनय ज्ञांनउपर इणरीत उतारणा तेमुक्ती कारण इहां नैगमनयवालो जांण पणांभणी अग्यांननेपिण ग्यांनकहे तथा अक्षरादिकनें पिण ग्यांनकहे एकअंश ज्ञांनछेतेभणी ग्यांनकहे भगवतीसूत्र सतक ॥ उत्तर ॥ नाणेअठविहे ए वचन नैगमनयरोछे जिम श्रुत ग्यांन १४ भेदमांहि अक्षर श्रुत १८ जातिनीलीपिनो व्यंजन अक्षरनो आकार लबधिअक्षरते ओरदेषीनें जांण पणांनी लबधिउरजे तेमिथ्या श्रुतनाअक्षरपिण श्रुतअज्ञांनमे आया तेहनेंपिण आठ ज्ञांनमे ग्यांन कह्यो एकअंशज्ञानावरणीकर्मनुं क्षयोपसमथयो तेतलो मुनिनोअंश जांणवो कर्मथी मुकायवो तेभणी मुगती कहीजे अग्यांननें पिण ग्यांनकहे एनैगमनयरो वचनछे १ हिवेंसंग्रहनय कहेछे संग्र

हनय कहेछे संग्रहनयवालो एकही ग्यानकहे ५ ज्ञान ३ अज्ञान एसर्वज्ञाणमें एगेनाणे इतिवचना त एसंग्रहनयरो वचनछे २ हिवे विवहारनयवालो ग्यानीकहे अग्यानीनें अग्यानीकहे वाह्य विस्तारदेखे जेसाहे अत्यतर भावनलेइ जेसे कोइ सूत्रके अर्थविस्तारसु धर्म्मकथा कहनाहोइ तेहनें विवहारनयवालोकहे एवडोज्ञानीछे अत्यतर स्वरुपनलेइ एविवहारनय ३ ऋजुसूत्रवालो जेसे जे ज्ञानने प्रयोगे वरततोहोइ तेहिजज्ञानी कहिए जेसे छद्मस्थनें ४ ज्ञान विवहार नयनेमतें कह्या अनेंऋजुसूत्रनयवालोअतीति अनागति न माने तेभणी १ ज्ञानकहे जोमतिज्ञाननेविषे उपियोग वर्ततो होइतोमतिज्ञानीकहे जेकारणे १ समयमे एकज्ञानविषे उपीयोगवरतेछे जेग्यानविषेउपियोग वरते तेहिजज्ञानकहे एऋजुसूत्रनयरो वचनछे ॥ इमहीअज्ञानपिण दर्शनपिण जाणीगो एऋजुसूत्र ४ सब्दनयवालो सम्यक्तसहित ए पदार्थजाणे तेहने ज्ञानकहे ते शब्दनयरो वचनछे ५ समभि रूढनयनि अपेक्षाये सम्यक्तसहित ज्ञानवंत परगुणसु विरक्तहोइ तेहनें ग्यानकहे ग्याननेंसन्मुखथाइ जोते परगुणसे विरक्तहोणो तेसमभिरूढनयरो वचनछे ६ एवम्भूतनयवालो केवलज्ञाननें ज्ञानकहे ७

एवंग्यांनउपरि ७ नयलगावी ॥ प्रश्न ॥ ६२५ ॥धर्मास्ति अधर्मास्ती आकास्ती ए ३ उपरसरसातनय कीमउतारणा ॥ उत्तर ॥ ३ उपरसातनयइमउतारणी नैगमनय एकप्रदेशनें धर्मास्तिकायकहे जेकारणे नेयगमनयवालो एकअंशनें वस्तमांने १ देस १ प्रदेसादिकनें अस्तिकायकहे जेकारणे अस्ति काय देश प्रदेश आया एसंग्रहनय २ विवहारनय देशप्रदेशविषे जीव पुदगलगति गमणकरे तेधर्मा स्तिकायनो विवहार खटूगुणी हांनि वृधिरुपधर्मास्तिकहे ३ रुजुसूत्रनय जीवपुदगलचालतांवर्तमां नकालें गतिगुणकरे तेहनें कहे अतीत अनागतिकाल न लेषवेरुजुसूत्र ४ शब्दनयवालो स्वभावने धर्मा स्तीकायएतले ज्ञानादिकनां उपियोगसुं धर्मास्तिनें जांणें एशब्दनय ५ समभिरूढनयवालो गुणपरवर्तजांणें .लें धर्मास्तिनांगुण परवर्तताने देखे तेसमभिरूढ ६ एवंभूतनयवालो धर्मा स्तिना अनेंकांतस्वरूप सप्तभंगी सप्तनयप्रमुखेकरी सिद्धवचनथाइ तेहनेंकहे एतले निश्चेग्यांनने धर्मास्तिकायकहे एवं भूतनय इणप्रकारें अधर्मास्तिपिण कहीवा२ आकासास्तिनैगमनय एकआकाश प्रदेशने एआकास्तिकहे १ संग्रहनय एगेलोए एगेअलोए खंध देश प्रदेश ३भेदनकरे २ विवहारनय

अधोलोकनो आकाश १ तीरालोकनो आकाश २ ऊर्द्धलोकनो आकाश ३ लोकाकाश ४ अलोकाकाश ५ घटाकाश ६ इत्यादि नामलेइकहे जेसोवाह्य विवहारछे जेसोकहेते विवहार ३ ऋजुसूत्र पट्गुणी हानि वृद्धिरूप क्रियाकर्ता आकाश एतलेजीवपुद्गलने अवगासदेतो आकाश ४ शद्बनय आकाश अगाहलक्षण विकासपणाने एतलेपोलाम्नने आकाश ५ समभिरूढ आकाशागुण जीव पुद्गल उपर थये तेआकाश ६ एव भूतनये आकाशना द्रव्यगुण पर्यायनोजाणपणो ते आकाश ७ आकाशउपर ७ नयलगावी ॥ प्रश्न ॥ ६१६ ॥ कालउपर सातनये कीम उतारणी ॥ उत्तर ॥ कालउपर सातनय इमउतारणी नैगमनय अतीत अनागतवर्तमानरूप एकसमयनेकहे एकगुण तीनकालना समयनोछे ते एक असर्नें वस्तुकहे इणन्याय १ संग्रहनय अभेदरूप समय आवलिकाआदि सर्प्पणी उत्सर्पणी पर्यंत सर्वकाल वर्तनरूप एकछे २ विवहार अढाईद्वीपमे दिनरात्रीअयन सवछर प्रमुखछे अढाईद्वीपबाह्यक० बादरकालनो सरयारूप विवहारनथी ते विवहारकाल अढाईद्वीपमेछे दिनरात्रीसख्या विवहारनय ३॥ ऋजुसूत्रनय वर्तमानकालनो समयकालछे अतीत कालविणसीगयो अनागतकाल अजि

आयोनथी तेभणी कालतो वर्तमान समयछे ऋजुसूत्र शब्दनय जीव अजीवने उपर वर्तेछे अणंतपर्याय तेहनें कालकहे समभिरूढनय जीव पुदगलनी थितपूर्णकर्वाने सन्मुखथयो तेहनेकाल कहे ६ एवंभूतनयकालनो द्रव्यगुणपर्यायनाग्यांनपणानो कालकहै ७ ॥ ७ ॥ प्रश्न ६१७ ॥ पुद्गलउपर सातनय कीमउतारणा ॥ उत्तर ॥ पुदगलउपरे सातनय इमउतारणा नैगमबंधना एकगुणने ४ गुणकहे जिम एकगुण कालानें कालो पुदगलकहे एकअंसनें ग्रहवेकरी वस्तुकहे तेभणी १ संग्रहनय पुदगलद्रव्य एकछे असोकहणोते संग्रह जेकारणें पुदगलद्रव्य अणंताछे परं पूरण गलण स्वभाव सर्वमेछे तेभणी भेदानभेद कहे ते संग्रह २ जिमठांणांगेएगे पोगलठिकाए एसंग्रनयरोवचनं २ विवहारनय जीवसाथे लागाते पयोगसा जिम कर्मवर्गणांनी पुदगल १४८ प्रकृतिना भिन्न भिन्न स्वभावपयोगसापुदगल १ जीवनेछेड्या प्रकारांतरपणें परणम्यानहीं जहांलगे मीसापु० २ स्वभावेमिले स्वभावें विखरीजाइ ते अभ्रपटल इंद्रधनुषँ प्रमुखनां पुदगल ते विससापुदगल ३ बाह्य विवहारदेखे जेसोकहे एविवहारनय ३ ऋजुसूत्रनय पुरण गलणने पुदगलकहे वर्तमानकाले गुणजेसो होइइसोकहे एऋजुसूत्र ४ शब्दने पुरण

गतुणरीक्रियानें पुदगलकहे एकप्रमाणुशमे गुणछे तेहीज अणतप्रदेशमे गुणएकछे ते शब्दनय ५ समभिरूढनयवालो कहे एक अणुमेंवीसगुण एक गुणलगाय अनत गुणप्रजायते माहि षटगुणि हानिवृद्धिरूप पर्यायफिरे तेहनें पुदगलकहे ६ एवं भूतनयवालो षट्गुण हानि वृद्धि प्रगटहोइते पुदगल ७ इति पुदगल ॥ प्रश्न ॥ ६१८ ॥ सातनय पायलीउपर कीमउतारणा ॥ उत्तर ॥ सातन पायलीउपर इमउतारणी १ नेगमनय २ विवहारनय उदमकरवामाड्यो ते पायलीमान १ सग्रहनय को रीनेंमान करीनामथापे ३ ऋजुसूत्रनयवालो आपणे कामवर्ततोमाने ४ सब्दनय ५ समभिरूढनय ६ एव भूतनयए ३ जाणउपीयोगवत पायलीमान ३ ऋजुसूत्रनय ॥ प्रश्न ॥ ६१९ ॥ सातनय राजउपर कीमउतारणी ॥ उत्तर॥ सातनय राजाउपर इमउतारणा नैगमनय राजाना लक्षणसहितमाने सग्रहनय राजानाकुलनेमाने २ विवहारनय राजानोवमावेटानेमाने ३ ऋजुसूत्रनय जुगराजपदविमाने ४ शब्दनय राजपदथाप्यो तेमाने ५ समभिरूढनय जेहनो नितक्रकमचाले ते राजमाने ६ एवंभूतनय नीतक्रकमचाले राजपाटवेठो तेराजामाने ७ ॥ प्रश्न ॥ ६२० ॥ सातनय घडाउपर कीमउतारणा ॥ उत्तर ॥

सातनय घमाउपर इमउतारणा नैगमनयक० माटीनीपांनते घमो १ संग्रहनयमाटीनो पीडोकस्यो तेघडो२ विवहारनय अग्नीमेंपकायोते घमो ३ ऋजुसूत्र० पाणी सुंनरयोते घमो४ सतनंपनांम १थापना २ द्रव्य ३ भाव ४ ते घमोमाने ५ समभिरूढ० उपीयोगतेघमोमांने ६ एवंभूत० वाईरेमाथेघमो लोकनेसुखनदेवे तेघमोघड चेष्टाकरतीआवे ते घमोमाने ७ ॥ प्रश्न ॥ ६२१ ॥ सातनय ५ महावृतउ परे कीमउतारणा ॥ उत्तर ॥ सातनय५महावृत्तउपरे इमउतारणी नैगमनय विवहारनय दोयतो ६ वृतं मांनेते पांच तेमहाव्रत ६ रात्रीभोजनमांने २ संग्रहनय पंचमहाव्रतमांने ऋजुसूत्रनय एकअहंस्या ते हिज महाव्रतमानें गाथा एवंचएथवयणं,नदिठंजिणवरेहि सव्वेहिं पाणाइवायवेरमणे अवसेसातस्सरखंमी १ अणंताणुवंध्यो क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ अप्रत्याख्यांनो क्रोध १ मांन २ माया ३ लोभ एवं १२ मिथ्यातमोहणी १३ मिश्रमोहणी १४ एप्रकृतिक्षयोपसमावि तेहने महाव्रतमांने४अनेउप रली तीननयच्यारुं ४ चोकमीनीतो १६ मिथ्यातमोहणी १७ मीश्रमोहणी १८ एप्रकृतीक्षयउपरभवां महाव्रतमांने ७ ॥ प्रश्न ॥ ६२२ ॥ सातनय समायकउपरे कीमउतारणा ॥ उत्तर ॥ सातनय समायक

उपरे इमउतारणा समायक करावा उथमवतते नेगमनयमाने १ अने सग्रहनयने विवहारनय समायककर वाउच्यो तेमाने ऋजुसूत्रनय सामायक कीधीमानि ४ उपरली तीननयवालो उपीयोगवतेमाने ७ नयलगावी इत्यादि सर्वपदार्थ ७ नयकरी प्रमाणकीजे ए ७ नयमानेतो सम्यक्ती एकनय ७ नयमाने २ नयमाने ५ नयनमाने इमजावत् ७ मानैएक नमानेते मिथ्यात्वीछे उक्तंच सतनया जिणे ज्ञणिया जेसदहंता सम दिठी मिछदिठीउ नायवा १ ए ७ नयसु वचनसिद्धथाइ तेप्रमाणअने ७ नयसुं असिद्धवचनहोइते अ प्रमाण तेज्ञणी प्रमाणकहेछे ॥ प्रश्न ॥ ६२४ ॥ प्रमाणकीतना ॥ उत्तर ॥ प्रमाण ४ पेलोप्रत्येकप्रमाण२ उनमानप्रमाणु ३ आगमप्रमाणु ४ ओपमाप्रमाण प्रत्येकप्रमाणका दोयभेद एकतो इद्री प्रत्येकप्रमाण२ नोइद्रीपरमाणु इद्रीपरमाणुका ५ भेद १ श्रोतेंद्री २ चक्षुइद्री ३ घ्राणेद्री ४ रसेद्री ५ फरसेंद्रीनो इद्री प्रमाणुका २ भेद एकदेसथकी वीजोसरवथकी प्रमाणना दोयभेद एकतोदेसथकी अवधिग्यान २ देस थकी मनपर्यवग्यान सर्वथकीप्रमाणुना दोयभेद १ एकतोकेवलग्यान डुजो केवलदरसण डुजो उनमान प्रमाणुका ५ भेद माताकोपुत्र स्त्रीकोभरतार वालपणोप्रदेसेगयो घणाकालमे आमीर पाछोआयो जीस

कु पांचबोलकरी उलखीये तीलकरीने उलखीये २ मसेकरी उलखीये ३ बातकरीने उलखीये ४ वरणकरी उलखीये ५ संगाणकरी ओलखीये तीजोआगमप्रमांण तेहना तीनभेद पुरबभाषा २ सहस्रभाषा ३ दिठी साधरमीभाषा पुरबभाषाका ५ भेद १ कारण २ कार्य ३ गुणा ४ अंवीव ५ आसरतन कारणका तीनभेद षिजुरकोकारण वीजणो वीजणाको कारण खिजुरनहीं १ ताणाको कारण कपमो अने कपमाको कारण ताणोनहीं ३ माटीकोकारण घमो अने घडाको कारण माटी नही कारजका ४ भेद १ हाथीनेतो गुलगुलाटकरि जाणीये २ घोमानेतो हेकारसूजाणीये ३ रथनेतो घणघणाटसू जाणीये ४ मोरनेतो काकटशबदसू जांणीये गुणका ५ भेद १ सोनामे तो कसोटीनोगुण २ फुलमे तो सुगंधकोगुण ३ मधुमे स्वादकोगुण ४ लुणमे रसकोगुण ५कपरामे फरसकोगुण अंवीवकाकीया १७ भेद १ महिषनेतो सीगकरके जांणीये २ घोमानेतो षुरकरके जाणीये ३ हाथीनेतो दांतकरके जाणीये ४ मोरनेतो पांषकरीके जांणीये ५ कुरकटनेतो सीखाकरके जांणीये ६ गजाइनेतो बकुपगाकरके जांणीये ७ सुवरनेतो दाढांकरके जांणीये ८ मनुष्यने तो दोयपगाकरके जांणीये ९ तिर्जंचनेतो

चउपगाकरके जाणीये१० वाघनेतो नखकरके जाणीये११ सूनटनेतो सस्त्रकरके जाणीये१२ महिला नेतो वीलीया करके जाणीये १३ पन्डितनेतोकाव्यकरके जाणीये १४ वृषननेतोष्कधकरके जाणीये१५ केसरी सीगनेतो केसकरकेजाणीये१६ चमरीगायनेतो चमरकरके जाणीये१७सीजीयाधाननेतो सीतकर के जाणीये आसरतनका ५नेद१धूवाकोआसरतनअगनी २ बुगलाकों आसरतन पांणी३ आकासको असुरतन मेह४ कुलको आस रतन पुत्र ५आवारको असरतन सीलवंता वाइ नाया इती पुरवनाषा सपुर्ण अथ सहअनाषा कहेछे एक मारवामका धोरीकुदेषोके सरवधोरीकुदेषो एक समदृष्टोकुदेषो सरवसमदीठीकुदेषो स्पाथकीजा णीये पोतानी मत बुधके कल्पनाकरके जांणीये जीसकाकीया नेद २ एकतोलोकीक आगमप्रमांण वीजोलोकोत्तरआगमप्रमाण लोकीक आगम किणनेकहिजे गीता नागवत कुराण कराण ज्योतीकसास्त्र वैदीकसास्त्र मिमासाउपेय अने १८ पुराणको जाण पणो जिणनेलोकीक अगमप्रमाणकहिजे १ लोकोत्तर आगमप्रमाण किणनेकहिजे श्री अरीहत सीधनगवत विमलनिरमला केवलग्यान केवलदरसणकरी लोक अलोकका नावजाणे देखे इग्यारे

अंगको १२ उपंग १४ पुबनोजाणकारहुवे नीरवद्यवचनप्रकासे इतरांको जांणकारहुवे जिसकुं लौ
कोत्तर आगमप्रमाण कहिजे इति सहश्रभाषासंपूर्णं दिठी साधर्मीभाषाका २ भेद एक सुभजांणे वी
जो असुभजांणे सूभजाणेतो तीनकालकी वातजांणे गयेकालकीवात कीमजांणे जिमकोईपुरुष प्रदे
समे जावतोथकोकादातूणासहित धरतीदेषी वागवाभी हरीयादेख्या कुवानिवाण भस्यादेख्या जदिजां
णयो गयेकाले इहां वृषाघणीहुइ दीसेछे वर्तमांनकालकी वातजाणोतो काइजांणे जिमकोइसाध माहा
पुरुष प्रदेसथी वीहारकरता २ आया खुध्यावेदनालागी मील्यो तोसरागम नहीमील्यो तोसरागम रस
तामेगांमभी छोटो श्रावकांका घरभीथोभा घरमे धनभीथोभो साधमाहापुरष गोचरीवास्तेउठ्या जिहां
देखे जीहां उलटभावदेख्या वभादातारनाभावदेख्या जदीजाणयो वर्त्तमांनकाले इणगांमको सूभहोतो
दीसेछे आवतेकालकी जांणेतोकाइजाणे पर्वतपाहाभ सुहामणालागे घणा अगभ वगभ वायरावाजे
नहि घणा तारातुटे नही घणा मोर कोकाटकरेनही घणी बिजली चमकेनही घणी धरतीधुजेनहीं
गामबाहीर जायकेदेखे मननेगमतो २ लागे जदिजांणवोके आवतेकाले कांइसूभ चेनहोतादीसेछे अ

सून्नजाणेतो कांइ २ जाणे तीनकालकी वातजाणे इणदष्टाते जीम तीनकालकीवात सून्नजाणी जीम तीनकालकी वाताउलटी एसेसमजणी ४ ओपमाप्रमाण कहेछे १ अछती रकमने छतीउपमा २ छती रकमने छतीओपमा ३ छतीरकमने अछतीओपमा ४ अछतीरकमने अछतीओपमा १ अछतीरकमने छतीउपमा कीणने कहिजे द्वारकाकेसीजाणे देवलोकसरीखी २ गनखीर केसोजाणे समुद्र ३ आगी योकेसोजाणे सूरजजीसो ४ कमोद केसीजाणे चद्रमासरखी अछतीरकमने छतीउपमालागीहिवेछती रकमने छतीओपमाकहेछे एकसीद्भगवानमेंपावे जिसोइगुण जीसोइअरथ जीसोइपरमारथ एकसीद्ध भगवानमे पावे २ हिवे छतीरकमने अछतीओपमा कीणने कहिजे डुहा पानजरताइमकयो सूणहो तरुवनराय अवके वीछरीये कवमीलेगे डुरपरागेजाय १ तरवरइम उत्तरदीयो सूणोहोत इकवात इणवर आदीरीतहे एकआवत एकजात २ पानजरता देखके हसीज कुपलीया मात्रीती थावीतीसे धीरीरहे वापमीया ३ कवतर वरछवोलियो कव कूपलदीयो जवाव वीरवखाणी ओपमा समजे लोकसताव ४ अछतीरकमने अछती ओपमाकीमलागी घोमाकुंसीगकेसाके गधाजेसा गधाकेसीग घोसाजेसा दोनो

कु सीगनही याअठती रकमनेअक्ती ओपमाकही ॥ प्रश्न ६२५ ॥ कीतनी नोकारसीकरे एकउपवास नो फलथाए कीतनीपोर सीकरेतरे एकउपवासनो फलथाए कीतनीपुरीमंढकरेतरे एकउपवासनो फ लथाए कीतनीनीवीकरेतरे एकउपवासनो फलथाए कीतनाएकसणा करेतरे एकउपवासनो फलथाए कीत ना अंबीलकरेतरे एकउपवासनो फलथाए ॥उत्तर॥ पंतालीस नोकारसीकरेतरे एकउपवासनो फलथाए दोय आंबीलकरेतरे एक उपवासनो फलथाए एपाट पणयालीए नमोक्कार सहीयाणं चउथं चउवीसा थोर सहीं बारसह २ पुरीमड्ढेही दसहि अवड्ढेहि ब्हिनिव्वीइ एहं चउही एगठांणगही दोहीआयंबी लेहीं एपाट माहानसितना ३ अधेननोठे ॥ प्रश्न ६२६ ॥ सातप्रकारे तपकीणरीते उत्तर भिन्नमासतप कीणनेकहिजे उत्तर पांचबिगेना त्यागकरावणा लूषोभोजनकरणो तीणने भीनमासतपकहिजे १ लघू मासतप कीणनेकहिजे उत्तर पुरीमढतपकरणो तीणने लघुमास तपकहिजे २ गुरुमासतपकीणने कह णो उत्तर एकासणाकरे तीणने गुरुमासकहिजे ३ चउ लघुतप कीणने कहिजे उत्तर अंबीलकरणो ती णने चउ लघूतपकहिजे ४ चउगुरुतप कीणनेकहिजे उत्तर उपवास एककरणो तीणने चउगुरुतप क

हिजे ५ षटलघूतप कीणनेकहिजे उत्तर उपवासदोयकरे तीणने षट्लघु तपकहिजे ६ षट्गुरुतप कीणने कहिजे उत्तर उपवास तीनकरणा अथवा अष्टमभक्तकरे तीणने षट्गुरुतप कहिजे ॥ प्रश्न ॥ ६१३ ॥ छेद तपकीणने कहिजे ॥ उत्तर ॥ भीनमासतप कीणने कहिजे उत्तर १५ दीननोतपकरे तीणने भीनमासतप कहिजे २ छेदलघूमासतप कीणने कहिजे उत्तर दीनसताइसनो तपकरे तीणने छेद लघूमास तपकहिजे ३ छेद गुरुमासतप कीणने कहिजे उत्तर तीसदीननो तपकरे तीणने छेद गुरु मासतप कहिजे ४ छेद चउलघुमास तप कीणने कहिजे उत्तर एकसोने पाचदीननोतपकरे तीणने छेद चउलघुमासतप कहिजे ५ छेद चउगुरुमास तपकीणने कहिजे उत्तर दीनएकसोनेवीसनो तपकरे तीणने छेदचउगुरुमास तप कहिजे ६ छेद षट्लघुमासतप कीणने कहिजे उत्तर एकसोसाठ दीननो तपकरे तीणने छेद षट्लघुमासतप कहिजे ७ छेदषट्गुरुतप कीणने कहिजे उत्तर एकसो असीदीन नो तपकरे तीणने छेदषट्गुरुतप कहिजे ८ छेद उघाइतप कीणने कहिजे उत्तर लघुप्रायश्चितदीन सताइसनो तपकरे तीणने छेद उघाइ तप कहिजे ९ छेदअणुघाइतप कीणने कहिजे उत्तर गुरुप्रायश्ची

त तीसदीननो तपकरे तीणने छेदअणुगाइ तपकहिजे १० छेद तथा मूलछेद कीणने कहिजे उत्तर ६ मासनोतप अथवा ६ मासनोछेद उपरछेदनहि एकसो असीदीन उपरंत तपउपवासनही ॥प्रश्न१०३॥ पांचप्रकारनो दोषणलागे तेहनो प्रायछीतकीम उत्तर अकुटीक जांणीने परवसेमलेछने परवसे तथा देवतादिक कुसीलादीक संबंध्यो दोषउपजावे तेहनोप्रायछीत मीछमीदुकडं परवसपणामाटे २ अनाकुटीक० स्वयंकरणो अग्यांनपणेकरी दोषलगावे अइमंता कुमारनीपरे तेहने प्रायछीत आवे एकपुरी मढनो ३ प्रमादेक० पांचप्रमादनेवसे पडतो अथवा देवतानेवसे पडतोथको जीवनेहणेते अरजुनमालीनीपरे जीवानेहणे तेहने प्रायछीत आवे पुरीमढ ११ रेरा संकल्पीनेक० जांणी नेहणे तथा दोष लगावे मुलगुणनो तथा उत्तर गुणनो दोष लगावे तेहनो प्रायछित आवे पुरीमढ १॥११ आवे५देवा अन्नीमांन उत्कृष्टो कंदर्प सहितते दोष लगावे तेहनो प्रायछीत आवे ११ ॥ ११ देवा पुरीमढ अप्पा मुलगुणेसू विराहणाणप्पा उत्तरगुणेसूयअप्पा पासथाइसू दाणाणगाहसंध्यउगेसू एतपनो तथा प्राय छीतनो विवरो वीवहारसूत्रमे कह्योछे ॥ प्रश्न ॥ ६२७ ॥ निधतने निकाचीत बंधणकीणने कहिजे उत्तर

इणदृष्टाते जीमकोइ इकपुरख सूतनोताणो तणीयो सूतसरव एकठोकीनो ताणानो गोटाकीनो तेहने
निघत वधकहिजे नैताणो थो सूत्रमेगाली नलीघाली पेटोभरीयो जदकपडानो थानत्यारहुवो इण
दृष्टाते प्रदेसाना दलीयानो वधथाय तेहने निकाचीत वधकहिजे वलेसुइनो गाहानोदृष्टात कहेछे एक
हजार सूइभेलीकरीने काचेसूतसू वधदीनो तेथोडोही जोरपडीया वीखरीजावे कीणेइकसूतलीसू सेठो
बंधण बांधीयो तेतुरतवीखरेनही पीण सूतलीने उदरोकाटेतो वीखरजावे कीणेहीक सूइयाने सोगीदेइ
आगनिमेदेने माहोमाही जालदीनीतीकियाठी अगनिमेदेइ लालकरेतो सूइ जूदी विखरजावे तीणने
निघतवध कहिजे नेसूइ एकहजारभेलीकर भारोबांधीने अगनदेइने लालकरीने घणहूकुटीने एकटो
लोहनोगोलो करेतेहने निकाचीत वंधकहिजे उणलोहनोलुहार डरस्तकरइ तथा खुरसाणचाढी पेरु
करे जदपलोछूटे तिम निकाचीतकरम तोभता दोरोभोगवता करमनारस पापपणे वधे ते माहाडुखदा
इ सरीररी वेदनाने मानसीवेदना आर्त्तध्यांन रुद्रध्यान ध्यावता घणोदीनपणो भोगावेनेपुरीथीत भो
गावे जद हलकोहुवेने पुरवनाप्रदेस नीकाचीत वधीयाहुवे ते सुखे दुखे पुरापुरा भोगवे घणाकाललगे

सूखीरहे अवएकरमांनी प्रकारनो बंधसूत्र असूत्र इऊजजांणीजे पीणमीथ्यातीना पुनन्नोगवीने विषे थी रोगधीथयो ४ गत २४ मंमकमांहे दरीनादोग जीम परिभ्रमणकरे समदृष्टीपाळलापुन सुखविपा कीयांनीपरे न्नोगवे सूखन्नोगवतां संसारना काम न्नोगनाफल कीपांकवृक्षनाफलनी ओपमाजाणी संसारषारोलागे साधश्रावकनाव्रत निग्रंथगुरुकने आदरी चोखावृत्तपाली आरधकऊइ संसारसमुद्रतीरे उत्तराध्येनसूत्रमे कह्योछे पाळलापापना बंधछे ते अनुपेहा न्नावना न्नावतोथको रुम्मोध्यांनधरता पापना सेंग गाढाबंधण बंधीयाऊवेतो सीथलबंधणकरे घणाकालनी थीतसूबंध्याऊवेतो थोम्माकालमे षपावे तीव्ररसकरी बंधीयाऊवेतो मंदरसकरे प्रदेसी राजानीपरे घणाप्रदेसबंधीयाछे तेसूत्रध्यांनकरी थोम्मा प्रदे सकरी खपावे दांनसील तप न्नावना सूत्रकर्णी करतांनिघत निकशेंत कर्मनीजंराकरे ज्ञांनदरसणचारित्र एतीनरत्न आराधतां कुष्ट न्नारीकरमांनी नीर्जराकरे करमानीकोम्मषपावे वलेपापनीकर्णी कर्त्ता पुन्य नाफल उदेआवे तेआपरासंचीया पुन्यउदेआयाछे तिमकीणहीपांणीनाद्रह नीलना मेलना जाल जा म्मा जमीयाथा तीणमे तारा चंद्रमा नीजर न आवे तीणमे पवनरेजोर सूं एक छिद्रऊवो माहले माछलो

चद्रमादीगे तिमपाप विचे पुन्यउदेआयोने धर्मपुन्यनीकरणी कर्तापापनाफल उदेआवेते आपरासची तठे जिम कोई नीरमलपाणीना धृहमाहे कोइपवनरेजोग सू नीलनोमेलनो आहलोमाठो घरआया तिमआपरा सचीयाजाणीजे वलेपवनरे जोगसु पाणीनीर्मलोऊवे जीम पुन्यधर्म निर्मलछे॥प्रश्न६२ए॥ ओजीवमरिने डुजेठीकाणे जावेतरे कीतरावोलनी रीधीलेनेजावे ॥ उत्तर ॥ ओजीवमरने डुजेठीकाणे जावेतरे ६ वोलनीरीधी लेनेजावे एकसमे ६ वोल वाधनेपछे मरेडुजीगतमे जायने उपजे १ गत ४ माहली एकगतवाधे २ जातपाचमाहली एकजातवाधे ३ थीत आउषो आगलीगतीनो वाधे ४ ओगे णाछोटी तथा मोटीवाधे ५ अणुन्नागप्रकृतिनोरस वाधे जिमलाडुमाहे ओषदीपडे जीसोस्वाद आवे जु प्रकृतीनो स्वन्नाववंधे ६ प्रदेसवध जु लाडूरसनोवधे पीणतोलन्यारी २ ओषदीनो करनेवाधे इण दृष्टाते छोटामोटा पुदगलन्नेलाकरने अनतापुदगलास सरीरवाधे सुन्नअसुन्न पुदगल पुन पापरे जोग सुमिलेतेपछे पाछान्नोगवे उदेआवता आवेजु न्नोगवे सुखडुख प्रदेशारा सचितमाफक आपरासचिया न्नोगवे ए ६वोल लेइने डुजीगतमे जावे ॥ अथ ॥ डुहा ॥ मुनीवरमाहे दीपता । पुज्य रूगपतजी मा

हाराय। जैनधरम दीपावीयो। पृथवी मंमलमाय१ पुज्यरूगपतजी तणोपाटवी, पुज जीवणजी माहारा ज, संजमपाल्यो नीरमलो, सास्या आतमकाज२ संजमलीयो लगुवये। ग्यानध्यान ऊवालय लीन। पूज्यश्री तिलोक चंदजी। बावन लग तपकीन३ खिम्यावंत अतिहीनला। पुज्य पनराजजी गुणवंत। तिणकेपाट सिरोमणी। पुज्य दोलतरामजी महंत४ संप्रदापूज्य रूघपत तणी। विचरे मुरधरदेस। तिण केमुनीदक्षण आयके दीयेधर्म उपदेस५ पुज्य दोलतरामजीप्रसादसे। किनोग्यांन विचार। प्रश्नोत्तर नवतत्वकहि। एजिनमतनोसार ६सोभागमलजी नवतत्वकरी। आगमतणे अनुसार। जेनरहियेधारसि। होसीनिश्चे खेवोपार ७ वक्ता श्रोता सुधमिलै। होइग्यांन उद्योत। मुरखभेद न जांणही। ज्युं अंधारवि ज्योति ८तत्वका नीरणाकीया पुनासेहरम जार। उगणीसे चंमालीसमे। फागुणवद पंचम विसपतवार एएह ग्रंथ सुवस्नावसो। पढोभव्य निरपक्ष। ज्युं सागरमे रयणहे। सोध्यांहोइ प्रत्यक्ष१ १ग्रंथरचीएहवी करू। पंडितसुं अरदास। अधक हीणजो मे कह्यो। सुद्धभांति प्रकास१२॥ इतिश्री प्रश्नोत्तर नवतत्व सौभाग्य मलजीकृत समाप्तम्॥ संवत१९४६। वैशाख शुक्ल३ शुक्रवारे दक्षणदेशे गांमकांनोरमध्ये सं।